आशीर्वाद

सच्चे सेवकको सेवा करते समय जो आनन्द मिलता है, वह वास्तवमें प्रेमानन्द ही होता है। सच्चे शिक्षकको विद्यादान करत समय जो सुख मिलता है, वह भी प्रेमानन्द ही है। कुदरतके दीवानेको निरुद्देश अिधर-अुधर भटकनेमें जो कलात्मक आनन्द प्राप्त होता है, अुसके पीछे भी विराट प्रेमानन्द ही होता है। मै जब लिखता हूँ, तब मुझे यही लगता है, मानो मैं अपने छोटे-बड़े पाठकोके साथ अेक प्रकारसे बाते ही कर रहा हूँ और अिसी बहाने अितने सारे मनुष्योके साथ आत्मीयताका, अभेदका आनन्दानुभव करता हूँ। मैंने देखा है कि अिस 'अुत्तरकी दीवारें' ने मेरे लिअे अनेको घरोके द्वार खोल दिये है और अनेको हृदयोमें मेरे लिअे स्थान बना दिया है। अनेकों बार मैंने देखा है कि कोअी छोटा बालक अिस पुस्तकको पढ़ता है और अपने आनन्दका वेग न रोक सकनेके कारण घरके बड़े लोगोके सामने अिसमें से अेकाध वाक्य पढ सुनाता है। अुन लोगोमें से कोअी अिसके प्रति आकर्षित हो जाते है; बालकके हाथसे पुस्तक लेकर वे स्वयं पढ़ने लगते है और छोटी-सी होनेसे अिसे पूरा करके ही छोड़ते है। अुस समय मेरा मूल बालपाठक जिस मीठी अस्वस्थताका अनुभव करता है, वह दे ` योग्य होती है। अपने वाचनमें विघ्न पड़ना अुसे नही सुहाता। परन्तु अपनी की हुअी पसन्दगी सही निकली तथा 'वास्तवमें वह भाग पढ़ने योग्य ही था' अिस धारणाको सिद्ध हुअी देखकर अुसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

छोटे बालक सदा यही सोचते है कि 'हम छोटे ह। हमारी अभि-रुचि भी छोटी है। हमें जो कुछ अच्छा लगता है, वह बड़ोंको कैसे रुचिकर हो सकता है?' परन्तु जब वे यह देखते है कि दुनियामें ी वस्तु

भी हो सकती है, जो हमें जितनी रुचिकर है अुतनी ही बड़ोंको भी आकर्षित करती है, तो अुस समानतासे वे प्रसन्न होते हैं, 'बड़े' होते हैं और अुनका आत्मविश्वास बढ़ता है। अिस लघु पुस्तिकाने यह कार्य किया है, और अुसे मैंने कअी बालकोंके मुँह पर प्रत्यक्ष देखा है।

अिसका कारण क्या होगा? कारण यही है कि अिस रचनामें अुपदेश नहीं है, प्रचार नहीं है, बुद्धिमत्ता नहीं है और न विद्वत्ता ही है। केवल अनुभवका, सुख-दुःखका और कल्पनाओंका आदान-प्रदान है। और विशेषतया तो खुशमिजाजी है। सचमुच ही यदि दुनिया मुझसे अूब अुठी हो तो भले अूबे, किन्तु मैं अुससे अुकताया नहीं हूँ। दुनिया भली है, अुसने मुझे प्रसन्न रखा है, मेरा भला ही किया है; और मुझे जीनेका अवसर दिया है। जिस जेलमें श्रम, अन्याय और हैरानीके सिवाय और कुछ नहीं मिलता, अुसमें भी मुझे तो अपनी दुनिया प्रिय ही लगी है।

खेल समाप्त होने पर सन्तुष्ट होकर घरकी ओर दौड़ जानेवाले बालक जैसे खेलको बुरा नहीं बतलाते, प्रत्युत अितना आनन्द देनेवाले खेलके प्रति मूक कृतज्ञताका अनुभव करते हैं, ठीक वैसे ही मैं भी समय आने पर प्रसन्नतासे अिस दुनियाको छोड़ जाअूँगा, परन्तु दुनियाके प्रति मेरा सद्‌भाव तनिक भी कम न होगा।

दुनियाके प्रति मेरा यह संवेदन, कौन जाने किस भाँति, अिन 'दीवारों' द्वारा व्यक्त हुआ है। अिसीलिअे मेरी कृतियोंमें मुझे यह प्रिय लगती है। और मैं मानता हूँ कि अिसीलिअे यह पाठकोंको भी प्रिय लगेगी।

स्वामी आनंदने अिसे प्रेमसे प्रकट किया, पूज्य बापूजीने अस्वस्थताके दिनोंमें अवकाश पाकर अिसे पढ़ा और अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, नवजीवनने अिस पुस्तकके प्रति अपना पक्षपात दिखाया

और भाअी नगीनदासने अिस पर टिप्पणियाँ लिख कर अिसे विद्यार्थियोंके योग्य बनाया, ये सब धन्यताके विषय हैं। अैसी आशीर्वाद-स्वरूपिणी अिस पुस्तिकाको

नागपुर
११-१२-'३९

काकाके
सप्रेम शुभाशीर्वाद

प्रस्तावना

जिस जेल-जीवनका वर्णन 'अुत्तरकी दीवारें' में किया गया है, अुसका अनुभव मैंने सन् १९२२ में किया था। जेलके अनुभवोंका अेक विस्तृत ग्रंथ लिखनेका विचार था। नमूनेके कैदियोंका स्वभाव-वर्णन, जेलके अमलदारोंकी खूबियां, जेलके क़ानूनोंका स्वरूप और अुनका असर और खासकर जेलके दिनोंमें जिनका अध्ययन किया था अुन मुसलमानोंके अिस्लाम, अीसाअियोंके विश्वासी धर्म, बौद्धोंके कल्याण धर्म, वैष्णवोंके भागवत धर्म और श्री कृष्णके गीता धर्मका तुलनात्मक वर्णन आदि लिखनेका विचार था। परन्तु यह कुछ भी हो न सका। सिर्फ ऋतुओंका, अुनके बादलोंका, आकाशके तारोंका, तथा कृमि, कीट, पतंग, पशु-पक्षी आदि मनुष्येतर प्राणियोंका जो कुछ थोड़ासा जिक्र अेक छोटेसे कार्ड पर लिख रहा था, अुसीकी मददसे अनेक बरसोंके बाद यह अेक प्रकरण लिखा और अुसे प्रकाशित किया। मांग आने पर विद्यार्थियोंके लिअे अिस पर टिप्पणियाँ भी लिखी गअी।

अिस छोटीसी पुस्तिकाके कअी हिन्दी अनुवाद हो चुके। पंजाबके अेक नवयुवक श्री रामकृष्ण भारतीने अिसका अनुवाद किया, जो अबोहरके 'दीपक' में प्रकाशित हुआ था। मैंने अुसे पढ़कर पसन्द किया था। लेकिन वह पुस्तकके रूपमें प्रकाशित न हो सका।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभाने अिसका अनुवाद करके रखा था। वह छप ही रहा था कि नवजीवन प्रकाशन मन्दिरके पास आया हुआ यह अनुवाद ठीक कराकर अुन्होंने प्रकाशित किया है। हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका अनुवाद यथासमय प्रकाशित होगा ही।

जेल-जीवनके अेक विशेष पहलूकी तरफ अिस पुस्तकके द्वारा सबसे पहले ध्यान खींचा जाता है, यही अिसकी विशेषता है।

१५-११-'५१

काका कालेलकर

दीवार-प्रवेश

गांधीजीने आश्रमके लिअे स्थान बहुत अच्छा पसन्द किया। अुत्तरकी ओर साबरमती जेलकी दीवारें दिखाअी देती है, तो दक्षिणकी ओर दूधेश्वरका स्मशान है। सामने ही शाहीबागसे लेकर अेलिसब्रिज तक फैली हुअी अहमदाबादके मिलोंकी लम्बी-लम्बी चिमनियाँ दिखाअी देती है। पीछेकी ओर तो सिवाय अुजाड़ भूमिके और कुछ है ही नही। अैसे स्थानमें रहने पर चारो ओर कुतूहलभरी दृष्टि डाले बिना कैसे रहा जा सकता था? अवकाश मिलता कि हम भटकते फिरते। आस-पासके सब स्थान देख डाले। किन्तु 'अुन अुत्तर दिशाकी ओर फैली हुअी जेलकी दीवारो (ओतराती दीवालो) के अन्दर क्या है? और अुस स्मशानके अुस पार क्या है?'—अिसका अुत्तर मिलना आसान न था। सरकारकी कृपासे पहले प्रश्नका अुत्तर तो मिल गया, दूसरे प्रश्नका अुत्तर जब भगवानकी कृपा होगी तब!

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

उत्तरकी दीवारें

जेलके हाकिमोंके साथके प्रसंगों, वहाँके भोजन, मजदूरी करते वक्त अुठाये गये कष्टों, अन्य कैदियोंके साथ हुअी बातचीत, अथवा जेलमें मिलनेवाली विश्रामकी घड़ियोंमें पढ़ी गअी पुस्तकों और लिखे गये लेखोंके अतिरिक्त जेलके अनुभवोंमें ओर हो ही क्या सकता है? किन्तु पशु-पक्षियों, झाड़-पानों, सर्दी, गरमी, बरसात और कुहरे आदिका अनुभव, जिसमें मनुष्यका कोअी सम्बन्ध ही नहीं रहता, भी जेलमें कुछ कम नहीं होता। जिसने अपने जीवनका अधिकांश भाग शहरके बाहर प्रकृति माताकी गोदमें व्यतीत किया है, छुट्टियोंके महीने जिसने अेक घुमक्कड़की भांति अिधर अुधर मुसाफिरी करके व्यतीत करनेमें आनन्द मनाया है, अैसे मुझ जैसेको यदि जेलकी चहारदीवारीके भीतर प्रकृति माताका अैसा अनुभव न मिले तो क्या गति हो? मेरी दृष्टिमें जेलका अिस तरहका अनुभव जितना महत्त्वपूर्ण है, अुतना ही रमणीय भी है। अिस अनुभवमें न अीर्ष्या है न द्वेष। दया दिखाने या दयाकी याचना करनेकी भी आवश्यकता ज्यादा नहीं होती और तिस पर भी हृदयके लिअे आवश्यक पूरी खुराक तो मिल ही जाती है।

सन् १९२३ के फरवरीका मंगल दिवस था। जेलकी प्रवेश-विधि सम्पूर्ण हुअी और मैं 'युरोपियन-वार्ड' की अेक कोठरीका स्वामी बना। अिस कोठरीमें बहुत अूचाअी पर दो अुजालदान थे। किन्तु वे हवा आनेके लिअे थे। प्रकाश देना अुनका काम न था। प्रकाश तो मेरी कोठरीके, लगभग मेरी कलाअियों जितने मोटे, सीखचोंवाले दरवाजेसे होकर जितना आ सके अुतना ही। आँगनमें नीमके अठारह वृक्ष तीन पंक्तियोंमें खड़े थे। पतझड़की ऋतु थी। अिसलिअे प्रातःकालसे सायंकाल तक सूखे पत्ते झड़ते ही रहते थे। आठ दिनके भीतर लगभग

सभी पत्ते झड़ गये और अठारहों वृक्ष वैरागी क्षपणक जैसे नग्न दिखाअी देने लगे। यह स्थिति देखकर मैं विशेष प्रसन्न नहीं हुआ। मैंने कहा:— 'कथं प्रथममेव क्षपणक: !'

* * *

हमारे मकानकी दाहिनी ओर दावडे बापाके लगाये हुअे कुछ पौधे थे: दो आमके, दो नीमके तथा अेक जामुनका। अपने बच्चोंकी भाँति ही बापा अुनकी देखभाल करते थे। प्रेम अुमडने पर वे अपनी कन्नड़ भाषामें अुनसे बातचीत भी करते, और अुनके सम्बन्धमें मुझसे बातें करते तो वे बिलकुल थकते ही नहीं थे। भोजन कर लेनेके बाद अिन पौधोंके बीचमें बैठकर हम अपने बरतन माँजते। अिन जस्तेके बरतनोंको माँजनेकी अेक खास कला होती है। मुनि जयविजयजीने अिस कलामें विशेष प्रवीणता प्राप्त की थी। अुन्होंने बड़े अुत्साहसे, और कुछ जबरदस्तीसे भी, मुझे अिस अुपयुक्त कलाकी दीक्षा दी। दूसरे ही दिन वे जेलमुक्त हो गये, अतअेव मैं केवल अेक ही पाठ सीख पाया। जस्तेके बरतनोंका तेज सार्वजनिक कार्य करनेवाले देशसेवककी अिज्जतके समान होता है। यदि प्रतिदिन सावधानी न रखी जाय, तो देखते-देखते वह धुँधला पड़ जाता है। बरतन पर जरा-सा भी धुँधलापन छाया कि तुरंत स्नेहप्रयोग करना पड़ता है। साथ ही यदि थोड़ी-सी खटाअीका स्वाद भी चखा दिया जाय तो अधिक अच्छा रहता है।

सायंकालके छ: बजे, और हम अपनी-अपनी कोठरीमें बन्द हो गये। खट-खट करते हुअे तालोंने सरकारको यह विश्वास दिला दिया कि कैदी रातमें अब भाग नहीं सकते। किन्तु केवल तालोंका क्या विश्वास? रातमें लगभग आधे-आधे घण्टेके अन्तरसे लालटेनें आकर यह विश्वास कर लेतीं कि कैदी गायब नहीं हो गया है। जागता न होने पर भी अपनी जगह पर ही है। जब हम जागते होते तब लालटेनको हमारे तथा हमें लालटेनके दर्शन हो जाते।

जेलमें आनेके पूर्व काफी जागरण करना पड़ा था। अतः जेलमें पहुँचते ही सर्वप्रथम मैंने सोना ही प्रारंभ किया। नींदके बहीखातेमें प्रतिदिन चौदह घण्टे लिखे जाते। आठ दिनमें ही नींदका अुधार खाता पूरा करके नवीन अनुभव लेनेके लिअे मैं तैयार हो गया।

* * *

कुछ गिलहरियाँ सवेरे, दोपहर तथा सायंकाल हमसे दोस्ती करनेके ख़यालसे आती। गिलहरियोंको देखकर मेरा मन अुदास हो गया। कालेजमें पढ़ता था तब मैंने अेक गिलहरीका बच्चा पाला था। अेक साल तक मेरे साथ रहकर वह अक्षयतृतीयाके दिन अक्षर-धामको चला गया। मुझे अुसीका स्मरण हो आया। वह खूँटी पर टँगे हुअे साअिकिलके पहिये पर चढ़नेका प्रयत्न करता। पहियेके गोल-गोल फिरनेके कारण अुससे अूपर चढ़ा ही न जाता। यह देखकर वह रो पड़ता। मैं दूध पीता तब मेरी कलाअी पर बैठकर मेरे साथ ही वह मेरे कटोरेमें से दूध पीता। यह और अैसे ही दूसरे अनेकों प्रसंग मुझे याद आये।

कौवे भी बहुतसे आते थे, किन्तु मुझसे तो वे मित्रता करने ही क्यों लगे? मेरे पड़ोसमें ही कुछ सिन्धी मुसलमान राजनैतिक कैदी रहते थे। अुन्हींके पाससे अिन आमिषभोजी महाशयोंको मांस तथा हड्डियोंके टुकड़े मिल जाते थे। अतः अुन्होंने अुनसे ही पक्की मित्रता बाँधी थी।

* * *

अेक दिन दोपहरको मैंने अपनी कोठरीके पाससे होकर जाती हुअी चींटियोंकी अेक पंक्ति देखी। मैं अुनके पीछे-पीछे चला। कुछ चींटियाँ बोझा ढोनेवाली मजदूर थीं, कुछ आगे पीछे दौड़नेवाली व्यवस्थापक — नेता थीं और कुछ तो सूद पर जीनेवाले सेठोंकी भाँति निरर्थक ही अिधर-अुधर घूमनेवाली थीं। कुछ चींटियां मार्ग छोड़कर आसपासके प्रदेशमें खोज करने जातीं और वहाँसे लौटकर कोलम्बस या मंगोपार्क की भाँति अपनी यात्राका बयान व्यवस्थापकोंके आगे पेश

करती। मैंने रोटीका चूरा करके अुनके मार्गसे दो-अेक हाथकी दूरी पर अेक ओर रख दिया। आधी घड़ीमें ही अिन शोधक मुसाफिरोंको अुसका पता चला गया। अुन्होंने तुरन्त ही जाकर व्यवस्थापकोंको रिपोर्ट दी। हुक्म बदले, मार्ग बदला और शाम तक तो खुराककी वह नअी खान खाली हो गअी। किसी भी मजदूर पर अधिक बोझा दिखाअी देता तो बिना बुलाये ही तुरन्त दूसरे मजदूर आकर हाथ लगाते — अरे भूला! — पैर लगाते (सहायता करते)। किन्तु बोझेको किस मार्गसे ले चलना चाहिये, अिस बात पर वे शीघ्र ही अेकमत नहीं हो पाते। अिसलिअे दो चींटियाँ बोझेको अपनी-अपनी ओर खींचती हुअी गोल-गोल चक्कर काटती रहतीं। अन्तमें अेकमत हो जाने पर वे नष्ट हुअे समयकी क्षति-पूर्तिके लिअे त्वरित गतिसे मार्ग पर आगे बढ़ जातीं।

मेरी यह देखनेकी अिच्छा हुअी कि अिन चींटियोंकी यह पंक्ति आती कहाँसे है? मैं धीरे-धीरे चलने लगा। पीछेकी ओर चबूतरेके नीचे अेक बिल था, अुसीमें से चींटियोंकी यह विसृष्टि निकल रही थी। पास ही मिट्टी जैसा अेक लाल ढेर दिखाअी दिया। पास जाकर देखा तो वह चींटियोंका स्मशान निकला। कुछ देर तक ध्यानपूर्वक देखनेके बाद दो चींटियाँ बिलसे बाहर निकलती हुअी दिखाअी दीं। मुर्दोंको स्मशानमें फेंक कर वे सीधी लौट गअीं। अधिक नहीं तो भी ५००-७०० शव वहाँ अिकट्ठे पड़े थे। अिन चींटियोंकी समाज-रचना कैसी होगी? अुनके स्वास्थ्य-विभागके नियम कैसे होंगे? किस हेतुसे वे अैसे स्मशान बनाती होंगी? — अिस विषयमें अनेकों विचार मेरे मनमें अुठे। यह भी जिज्ञासा हुअी कि और दूसरे किन-किन प्राणियोंमें अिस प्रकारकी स्मशान-भूमिकी व्यवस्था होगी? मधुमक्खियाँ शायद स्मशानका स्थान निश्चित कर लेती होंगी। चींटे तो कर ही लेते हैं। अन्य प्राणियोंमें अैसी सामाजिक बुद्धि क्यों नहीं होती? — अिस सम्बन्धमें भी कअी विचार मनमें अुठे।

* * *

पतझडकी ऋतु थी, फिर भी अभी ग्रीष्मका प्रारंभ नहीं हुआ था। दावड़े बापा तो पके पान थे। भारी परिश्रम करनेके बाद अुन्होंने नहानेके लिअे प्रतिदिन गरम पानी प्राप्त करनेका अधिकार पाया था। प्रातःकाल कुहरा छा जाता था। सूरतके दयालजीभाओी हमारे साथ रहनेके लिअे आये, तब सुबह अुठकर कुहरेमें साथ-साथ चक्कर काटनेमें हमें बड़ा आनन्द आता। कभी-कभी तो आसपासकी दीवारें तथा मकान भी दिखाओी न पड़ते। बचपनमें बेलगाँवसे सावतवाड़ी जाते समय आंबोली घाटमें अनेकों बार हुअे अैसे अनुभवोंका स्मरण हो आया। कुहरा छाया हो तब सरपट चलनेका अुत्साह खूब बढ़ जाता है। यदि शरीर पर पूरे कपड़े हों और सिर खुला हो, तब तो और भी अधिक आनन्द आता है। सर्दी तथा कुहरा नाक, कान और आँखमें गुदगुदी पैदा करते हैं। सर्दी तेज होती है तब खूब जोरोंसे काटती भी है। जल्दी-जल्दी चलनेसे श्वास तेज हो जाने पर मूंछों पर गिरे हुअे ओसकण बड़े-बड़े हो जाते हैं। अिसका अनुभव जिसने किया हो, वही कुहरेमें चलनेके आनन्दको जान सकता है।

कुहरेमें दिखाओी देने वाले आसपासके अस्पष्ट चित्रको देखकर केशवसुत कवि द्वारा वर्णित कविहृदयकी स्थितिका स्मरण हो आया:

कविच्या हृदयीं अुज्ज्वलता
आणिक मिळती अन्धुकता।
तीच स्थिति ही भासतसे
सृष्टि कवयित्रीच दिसे॥

ध्यान तथा तपस्यासे ऋषि-मुनि जिस तत्त्वका स्पष्ट अुज्ज्वल दर्शन करते हैं, अुसका कुछ स्पष्ट तथा कुछ धुँधला दर्शन कवियोंको सहज सुलभ होता है। अिसीलिअे केशवसुतने कुहरेसे आच्छादित प्रभातकालको कविहृदयकी अुपमा दी है। और सृष्टिको कवयित्री कहा है।

* * *

अेक दिन दोपहरमें हम घूम रहे थे। अितनेमें ही दयाळजीभाअीके पाँवके नीचे अेक चींटा दब कर मर गया। अुनका तो अिस ओर ध्यान भी नहीं गया, किन्तु मेरे हृदयमें बहुत दुःख हुआ। बेचारा चींटा क्यों मर गया? अुसने क्या पाप किया था? बिना अपराध ही अुसकी अैसी मृत्यु क्यों हुअी? दुनियामें नीतिका साम्राज्य है या दुर्घटनाका? क्षणभरमें अैसे-अैसे अनेकों विचार आये और गये। फिर नया विचार आया कि अैसी मृत्युको खराब ही क्यों मानना चाहिये? चींटेको अेक जन्मसे अिस प्रकार मुक्ति मिली, यह अुसके किसी अपराधका दण्ड है या किसी सत्कर्मके अुपहार-स्वरूप प्राप्त हुअी मुक्ति है — अिसका निर्णय कौन कर सकता है? प्राणीमात्र मृत्युसे डरता है, मौतसे भागता फिरता है। यह अुचित है या अनुचित? मृत्युसे डरकर भागना प्राणीमात्रका जन्मजात स्वभाव है। यह स्वभाव अुचित है या अज्ञान-मूलक, यह कौन बता सकता है? फिर विचार आया: मौत किसी भी तरहसे आवे किन्तु अनजानमें मृत्यु हो जाय, यह कैसे सहन हो सकता है? मौत आनेवाली है — यह जान लेनेके बाद मृत्युका जो साक्षात्कार होता है, अुस बहुमूल्य अनुभवसे वंचित रह जाना क्या दुर्भाग्य नहीं है? और यह कौन कह सकता है कि मृत्युमें अमुक प्रकारका मज़ा नहीं है? निद्राका आगमन यदि मधुर है, तो मृत्युका क्यों न हो? फाँसी पर लटकनेवाले मनुष्यको आठ-दस दिनकी नोटिस मिलती है। अितने दिनोंमें परलोकके लिअे वह कितनी अच्छी तैयारी कर सकता है!

२

कुछ ही दिनोमें मेरी बदली फॉसी-खोलीमें हो गअी। फॉसी-खोली यानी फॉसी देनेके स्थानके पास ही बनी हुअी, फॉसीके कैदियोको रखनेकी आठ कोठरियॉ। साबरमती जेलमे यह स्थान सबसे अच्छा माना जानेसे स्वामी, वालजीभाअी, प्राणशकर भट्ट आदि लोगोको यहॉ रखा गया था। स्वामी तो गांधीजीवाली कोठरीमे ही रहते थे। मुझे कदाचित अधिक समय तक यहॉ नही रखा जायेगा, अिस शंकासे स्वामीने आग्रहपूर्वक गाधीजीकी कोठरी मुझे रहनेके लिअे दे दी। अूँची दीवारकी दूसरी ओर स्त्रियोके रहनेका स्थान था। यहॉ फॉसी-खोलीमें आकर मुझे अेक तरहसे पश्चात्ताप ही हुआ। दीवारकी दूसरी ओर स्त्रियॉ दोपहरी भर कपड़े धोती, अुनके बच्चे रोते और कोढ़मे खाजकी तरह पॉच-दस स्त्रियॉ झगड़ेका अखण्ड प्रवाह जारी रखती। जेलके कष्ट सहनेको मैं तैयार था, किन्तु अैसा कावर-कलह सुननेको तैयार न था। किन्तु दो चार दिनमे या तो मेरे कान अिससे अभ्यस्त हो गये या फिर 'औरतो' मे आअी हुअी नअी स्त्रियॉ पुरानी हो गअीं, अिसलिअे झगड़ेका प्रवाह अपेक्षाकृत कुछ कम हुआ-सा लगा।

* * *

फॉसी-खोलीमें आते ही दो बिल्लियोसे मित्रता हो गअी। अेकका नाम था 'फोजदार' और दूसरीका 'हीरा'। अस्पतालसे प्रतिदिन अेक छटॉक दूध अिन बिल्लियोको दिये जानेकी 'खानगी व्यवस्था' थी। खानगी व्यवस्था यानी डॉक्टर या जेलरके हुक्मके बिना ही की गअी व चली आती हुअी व्यवस्था। जेल विभागमे अैसी छोटी-छोटी अनेकों व्यवस्थायें होती है। कैदी तथा अुन पर निगरानी रखनेवाले नौकर

सभी मनुष्य होते है। अिसलिअे कठोर नियमोंका पालन कराते समय वे जिस प्रकार अुनमें कअी बार घोर कठोरता मिलाते हैं, अुसी प्रकार किसी-किसी समय दयाका मिश्रण भी करते है। सुबह-शामकी रोटियाँ आतीं कि तुरन्त ही अुनमें से तीन-चार टुकड़े दूधमें भिगो कर हमारे यहाँ बिल्लियोंके लिअे अेक कोनेमें रख दिये जाते। किसी दिन जब जोरसे भूख लगती, तब बिल्लियाँ वार्डरके पैरों पर नाक घिस-घिस कर अुसीकी मिन्नत करतीं और किसी दिन तो खाना पास ही रखा होने पर भी पहर भर तक अुसे देखती ही रहतीं और भर्तृहरिके हाथीकी तरह 'धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते।' अिन दोनों बिल्लियोंमें से फौजदारकी पूँछ ठीक बीचमें से लगभग टूटनेवाली थी। रोगसे या घावसे — यह तो कौन जाने? अेक दिन दावडे बापा अस्पताल गये, तो वहाँसे मरहम लेते आये। अुस दिनसे प्रतिदिन फौजदारकी शुश्रूषा होने लगी। किन्तु दावडे बापा अुसकी पूँछ पकडकर मरहम लगावें, यह स्थिति बिल्लीको पहले दिन तो स्वमानको धक्का पहुँचानेवाली लगी। अुसने सौम्य तथा कठोर समस्त प्रकारके निषेध व्यक्त किये। किन्तु दूसरे ही दिनसे आराम मिलनेके कारण अुसने अेंड्रोक्लिज़के सिंहकी वृत्ति धारण कर ली।

* * *

मैं पहले कह आया हूँ कि दावडे बापा कर्नाटकी ब्राह्मण थे। मिर्चके बिना अुनका काम ही नहीं चलता था। जेलके भोजनमें मिर्चकी कमी तो होती ही नहीं, लेकिन अुससे भी बापाका काम नहीं चलता था। अुन्होंने आँगनमें मिर्चके बहुतसे पौधे लगा रखे थे। अुनमें से अुन्हें नित्य अंजलि भरकर ताजी मिर्चें मिल जाती थीं। अुन्होंने मुझे भी कर्नाटकी जानकार मिर्चें खानेका आग्रह किया। जब मैंने कहा कि मैं मिर्चें नहीं खाता, तो निराश होकर वे बोले — 'तब तो पूरे गुजराती ही बन गये! अरे, जो मिर्चें नहीं खाता, वह कर्नाटकी ही कैसा?' यह अभियोग मुझे स्वीकार करना ही पडा।

फिर होलीके दिन आये। दोपहरके समय जब सिपाही या मुक़ादम अपने तख्ते पर बैठे-बैठे अूंघता हो, तब दाबड़े बापा आँगनके दरवाजेसे खिसक कर पिछवाड़ेके खेतोंमें चले जाते और सूखी हुअी डालियाँ और झाड़-झंखर अिकट्ठा कर लाते। कुछ ही दिनोंमें अीधनकी अेक छोटी-सी ढेरी हो गअी। होलीके दिन सुपरिन्टेन्डेन्टके आकर चले जानेके बाद अुन्होंने विधिपूर्वक आँगनमें होली जलाअी और शंखनादके साथ तीन बार होलीकी प्रदक्षिणा करके कारावासमें भी हिन्दू धर्मको जीवित रखा! होली जलानेके लिअे वे आग कहांसे ले आये, यह मैंने अुनसे नहीं पूछा; क्योंकि मैं जानता था कि यह 'खानगी-व्यवस्था' थी।

फाँसी-खोलीमें हमें दूसरे नये मित्र भी मिले। वे थे बन्दर। बन्दर जेलके अन्दरके बगीचेमें खूब नुकसान करते हैं, अिसीलिअे जेलके हाकिम अुन्हें नफरतकी निगाहसे देखते हैं, और अिसीलिअे कैदियोंको बन्दरोंके प्रति खूब प्यार होता है। हमारे झाड़ू देनेवालेसे जब अिसका कारण पूछा, तो अुसने कहा — "अिन तरकारियोंको अुगानेके लिअे पानी खींचते-खींचते हमारी छाती फटने लगती है। और हमारे हिस्सेमें तो केवल डंठल तथा सड़े-गले पत्ते ही आते हैं। असली माल तो ये हाकिम लोग ही अुड़ाते हैं या कमेटीमें आनेवाले 'विजिटर्स' ले जाते हैं। क्या हम नहीं जानते कि रविवारके दिन वे जो दो आदमी धर्म पर भाषण देने आते हैं, वे भी सागभाजी लेनेके लिअे ही आते हैं?" मैंने अुसे समझानेका प्रयत्न किया कि वे महाशय तो बाजारसे भी सागभाजी खरीद सकते हैं। किन्तु वह मेरी बात मानने ही क्यों लगा? बन्दरोंके आते ही कैदी लोग मारे खुशीके अुन्हींके जैसी किलकिलाहट करते और अपने पासकी रोटियोंके दो-चार टुकड़े अुनकी ओर फेंकनेमें भी नहीं हिचकते। हमारे यहाँ बन्दर ज्यादा नजदीक नहीं आते थे। दीवार पर बैठकर लम्बी पूँछ नीचेकी ओर लटका देते और गर्दन मरोड़

कर कन्धे परसे वे हमारी ओर देखते और दाँत भी दिखाते, म
वे हम पर भारी अुपकार करते हो। हम रहते थे अुसके बाहर ही
बड़ी दीवारका कोना था। बन्दर अुस कोनेके पास जाते और
दीवारको लात मारकर दूसरी दीवार पर कूदते और फिर व
लात मारकर पहली पर कूदते। यों कूदते-कूदते वे दीवारके
अूपर जा पहुँचते। मैं सोचता — बन्दर अिस प्रकारसे जा सकते
तो मनुष्य क्यों नहीं जा सकता? दूसरे ही क्षण विचार आया
यदि यह संभव होता तो यह कला चोरोंने कभीकी हस्तगत
ली होती!

* * *

जेलके नये-नये अनुभवोंमें मैं अिस बातको तो भूल ही गया
कि बारह घण्टे तक कोठरीमें बन्द रहनेसे हमें चन्द्र या तारोंके द
ही नहीं होते थे। हमारे बरामदेमें दूध-जैसी चाँदनी फैलती थी, कि
बन्द कोठरीमें हमें चन्द्रदर्शन कैसे होते? अितनेमें स्वामीने अेक यु
बतलाअी। (मैं भूला! अुनको वह युक्ति दयालजीभाअीने सुझाअी थ
अुस समय हमें हजामत बनानेका सामान (रेजरके सिवाय बाकी स
अपने पास रखनेकी अिजाजत थी। अुसमें दर्पण भी था। अुसका
पकडकर हम अुसे सीखचोंके बाहर टेढ़ा रखते। अिसलिअे बा
चन्द्र-बिम्ब अुस दर्पणमें आकर गिरता। यह देखकर हमें बड़ा आ
आता। कुछ ही दिनोंमें दरवाजेमें से मैंने सामनेके आकाशख
अगस्त्यको अुगता हुआ पहचाना। अगस्त्य तो मेरा पुराना मित्र ठ
— दक्षिणका आचार्य! अुसे देखकर मैं प्रसन्नतासे खिल अु
किन्तु वह अधिक समय तक वहाँ ठहरता नहीं था। दक्षिण दिशासे
बाओं ओर अुगता और दाहिनी ओर डुबकी मार जाता।

* * *

अजानके सिलसिलेमें मुसलमान भाअियोंके साथ की हुअी मेरी
दिनकी भूख-हड़तालके बाद मुझमें अशक्ति रही तब तक मुझे खुली ह

सोनेकी आज्ञा मिली थी। मेरी शुश्रूषा करनेके लिअे स्वामीको भी बाहर सोनेकी आज्ञा दे दी गयी थी। रातको लगभग दस बजे तक हम आँगनमें अिधर-अुधर टहलते रहते, या कम्बल पर पड़-पड़े तारे देखा करते। आँगनमें अेक पीपलका छोटा-सा सुन्दर वृक्ष था और दूसरा नीमका बड़ा-सा पेड़ था। अुनके पत्तोमे से आरपार तारे देखनेका बडा मजा आता। अैसा आनन्दोपभोग कर रहा था कि मुझे भूख-हड़ताल करनेकी सज़ा सुनाअी गअी और कैदी लोग जिसे जेलका पोर्ट ब्लेयर (काला पानी) कहते है, अुस छोटे चक्कर नम्बर ४ में मेरी बदली हो गअी। खुली हवा, तारोंके दर्शन तथा स्वामीका सहवास -- अिन तीन टॉनिको से मै तीन ही दिनमें अितना चंगा हो गया कि मैने डॉक्टरको यह लिख भेजा -- 'अब मै सज़ा भुगतने योग्य हो गया हूँ। मेरी सजाके स्थान पर मुझे ले जानेमे विलम्ब करनेका कोअी कारण नही है।' सचमुच खुली हवा कैदियोको सशक्त बनानेवाली अमृत-सजीवनी है।

३

छोटे चक्कर नम्बर ४ मे मेरी सजा शुरू हुअी। मेरे पाससे मेरी पुस्तकें, लिखनेके कागज, दवात-कलम, पैंसिल सब कुछ छीन लिया गया। केवल अेक धार्मिक ग्रन्थ मेरे पास रहने दिया। अिस ग्रन्थमे निशान करनेके लिअे मैने अपनी पसिल मॉगी, पर वह ो मिलने लगी? अनेक भाँतिसे मुझे हैरान करने तथा मेरा अपमान करनेकी युक्तियाँ काममें लाअी गअी। किन्तु जिनके हाथोमे मैंने अपना मान नहीं सौंपा था, अुनके द्वारा मेरा अपमान कैसे हो सकता था?

परन्तु अिन सब सजाओं तथा हैरानीके कारण मेरा ध्यान प्रकृतिकी ओर अधिक जाने लगा। मै दूसरे किसी कैदीके साथ बातचीत न कर सकूँ, अिसलिअे मुझे बिलकुल सिरेपरकी अेक कोठरी दी गअी थी। अिस कोठरीका द्वार लगभग अुत्तर दिशाकी ओर था। कोठरीमे बाअी

ओरकी दीवारमें बहुत अूपर अेक जाली थी। अुसमें से प्रकाश अच्छा आता था और रात्रिके समय चन्द्र जब पश्चिममें होता, तब वह अिस जालीमे से दर्शन देता। चन्द्रमाका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता, अुस समय मै दीवार पर पडी हुअी चाँदनीमे अपना दर्पण ले जाकर अुसमें पड़े हुअे चन्द्र-बिम्बके दर्शन कर लेता। रातके समय अिस जालीमें से दो-चार तारे दिखाअी देते। वे कौन-से तारे हैं, अिसका निश्चय करना अत्यत कठिन था। तो भी अुसका निश्चय करनेमें अेक प्रकारका आनन्द ही आता। दृष्टिके समक्ष समग्र आकाश होता है, तब तो दिशाओका ज्ञान बराबर रहता है, और आसपासके तारो तथा अुनके क्रमको देखकर यह निश्चय करना सरल होता है कि अमुक तारा कौनसा है। परन्तु जालीमें से तो अेक-दो तारे ही दिखाअी पड़ते। फिर भी तारोके साथ मेरी पुरानी मित्रता थी; अिससे पहली ही रातको मैंने पुनर्वसुके दो तारे पहचान लिये और रात भर खिड़कीमे अेकके बाद अेक आनेवाले तारोको मै देखता रहा।

* * *

किन्तु तारा-विहार कोअी मेरे सारी रातके जागरणका कारण नहीं था। छोटे चक्कर नबर ४ मे कोठरियोकी फर्श कच्ची थी — मिट्टीकी लीपनवाली। अुसकी फर्श तथा भीतोमें खटमलकी बडी फौज अपना अड्डा जमा कर कभी-से पड़ी थी। अपनी कोठरीमें दैनिक कष्टो तथा परिश्रमसे लस्तपस्त बनी देह डालनेवाले कैदियोके स्थान पर मेरे जैसे दुबले-पतले कैदीको देखकर वे खूब चिढ़ गये और अुन्होने लोभके साथ ही क्रोधका संमिश्रण करके मुझ पर जोरका आक्रमण कर दिया। किन्तु अिस स्वादका आनन्द लेनेवाले अकेले खटमल ही नहीं थे, अुनके प्रतिस्पर्धी तिलचट्टोकी टोली भी कम नहीं थी। वे टप्-से छतमें से नीचे गिरते और मुझ पर धावा बोल देते। मैने देखा कि अिन भाअियोंको मेरे सिरके बाल बहुत स्वादिष्ट लगते। क्योकि जरा भी आँख लगने लगती कि वे सिरमे ही आकर काटते।

स्वागत यदि त्रिविध न हुआ, तो अुसमें काव्य ही क्या? अिसलिअे छिपकलियोंके बच्चोंने भी हिस्सा बँटाया। मुझे वे अपने बिस्तर पर अकेला नहीं सोने देते थे। अस्पृश्यता-निवारणमें मेरी चाहे जितनी श्रद्धा हो, फिर भी अिन नीच छिपकलियोंके बच्चोंके सहवासको पसन्द करना मेरे लिअे असम्भव था। और ये बच्चे तो मेरे साथ अधिकाधिक परिचय करनेको आतुर दिखाअी देते थे। अितनी तैयारी देखकर मैंने निश्चय किया कि समरांगणमें सोते रहना हमें शोभा नही देता। मै अुठकर बैठ गया और अन्धकारमें ही अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके साथ मैंने अहिंसक युद्ध प्रारंभ किया।

प्रातःकाल मैंने सुपरिन्टेन्डेन्टसे बाकायदा शिकायत की। अुन्होंने कहा — 'यह कोठरी पसंद न हो तो पासवाली वह दूसरी ले लीजिये।' मैं जानता था कि पासवाली दूसरी कोठरी अिसीकी बड़ी बहन है; आकारमें समान होने पर भी कठिनाअी अुसमें अधिक। अुसमें अूपरकी ओर जाली भी नही थी, फिर रातको पुनर्वसु और चन्द्रके दर्शन कैसे हो? मैंने कहा — 'सामने ही अेक पूरी बैरक खुली है, अुसमे मुझे सोने दीजिये।' अितनेमें ही अेक गँवार-जैसा गोरा डेप्युटी जेलर बीचमें बोल अुठा — 'यह नही हो सकता। यदि आप वहाँ सोयेंगे तो आपको हमारे यहाँके नियमोंसे अधिक हवा मिलेगी और वहाँ आप रातके समय घूमफिर भी सकेंगे। सजा भोगनेवाले कैदीको अितनी सुविधा नही दी जा सकती।'

मैंने तुरन्त ही अपना समयपत्रक बदल डाला। रात भर जागता और दोपहरमें चबूतरे पर बरामदेमें चार घण्टे सो लेता। अेक दिन डॉक्टर तबीयत पूछने आये। मैंने कहा — 'रातको नीद नहीं आती, अिसलिअे दोपहरमें सोता हूँ।' वे बेचारे क्या करते? अुन्होंने मुझे नीद आनेकी दवा दी — ब्रोमाअिड ऑफ पोटेशियम तथा दूसरी कुछ दवायें। ब्रोमाअिडका असर मै जानता था, किन्तु फिर भी लाचार होकर मैंने बीसेक

दिन वह दवा ली। फिर मैंने अेक दिन कुदाली-फावडेके लिअे अरजी की। मेरी अिच्छा थी कि अपनी कोठरीकी जमीनको खोद-खादकर और टीपकर तैयार कर लूँ और दीवारोंको फिनाअिलसे धो डालूँ। किन्तु कुदाली-फावड़े तो महान शस्त्रास्त्र थे! वे मेरे जैसे 'बदमाश' के हाथमें कैसे दिये जाते? अतः हमारी निगरानी रखनेवाले अेक 'शरीफ' बलूची मुकादमको वे दिये गये। हमारे ये मुकादम साहब भड़ौच जिलेमें डाका डालनेके अपराधमें आठ-नौ सालकी सजा पाकर आये थे। अुसने दो-चार कैदियोंको बुलाकर मेरी कोठरीकी जमीन टिपवा दी और मैंने डामर माँगकर अुसे पोत डाला। प्रश्न था कि जब तक डामर सूखे तब तक मैं कहाँ रहूँ? अतअेव मैंने पीछेकी अेक कोठरीमें जाना पसंद किया। जेलके अधिकारियोंने मेरे अिस विचारका स्वागत किया, कारण कि अैसा करनेसे मैं दूसरे राजनैतिक कैदियोंसे बिलकुल अलग जा पडता था। किन्तु मुझे तो यह पिछवाड़ेवाली कोठरी अितनी पसन्द आअी कि मैंने वहीं पर रहनेका निश्चय कर लिया।

* * *

अिस कोठरीके सामने अेक अरीठेका वृक्ष था। वह भी दावड़े बापाकी प्रजा था। वृक्ष लगभग आठ फूट अूँचा था, किन्तु बिलकुल ही सूख गया था। केवल तीन-चार पत्ते बच रहे थे, सो भी सूखे हुअे। अपनी लँगोट सुखानेके लिअे मैं अुसके पास गया कि वे पत्ते भी झड पड़े। अिच्छा हुआी कि अिस वृक्षको अुखाड़ फेंकूँ। किन्तु वैसा करनेसे जेलका अपराध होता। और फिर बापाके द्वारा बोया हुआ वृक्ष मुझसे अुखाड़ा ही कैसे जाता? मैंने अुस मृतवत् वृक्षकी ही सेवा करना प्रारंभ किया। खानगी-व्यवस्थासे अेक हँसिया मँगवा कर मैंने अुस वृक्षके आसपास अेक क्यारा बनाया। प्रतिदिन अुसे दो-दो डब्बे पानी पिलाना प्रारंभ किया। मेरी श्रद्धा फलीभूत हुआी। कुछ ही दिनोंमें डाल-डालमें कोपलें फूट निकली। वृक्ष मर नहीं गया था, किन्तु

हिन्दू धर्मकी भाँति ही अुसमें बुढ़ापा आ गया था। देखते-देखते नीलम-जैसे हरे तथा मखमल-जैसे मुलायम पत्तोंसे अरीठा सुशोभित हो अुठा!

अिससे कुछ ही आगे अेक पीपलका पेड़ था। अुसीके नीचे क्यारेमें तुलसीका अेक पुराना पौधा और अेक बारहमासीका पौधा था। लिंगप्पा नामक अेक कर्नाटकी वृद्ध जन्मकैदी प्रतिदिन अुस तुलसीको पानी पिलाता और बारहमासीके फूल तोड़कर तुलसी पर चढ़ाता। जब अुसे यह पता चला कि मैं कन्नड़ भाषा जानता हूँ, तो अुसके आनन्दकी सीमा न रही। अुसने कहा — 'तुलसीका पौधा तो देव — परमेश्वर! सेवा तो अुसकी करनी चाहिये। अुसे छोड़कर आप अिस कमबख्त अरीठेकी सेवा क्यों करते हैं?' मैंने कहा — 'मेरे लिअे तो जितने अंशमें तुलसीमें देव है, अुतने ही अंशमें अरीठेमें भी है।'

मेरी अिस नअी कोठरीकी बगलमें ही पापा (पारसी सुपरिन्टेन्डेन्ट) द्वारा अुजाड़ डाला गया दावड़े बापाका बगीचा था। बापाको सजा देनेके लिअे ही पापाने अुनके लगाये हुअे अुस बगीचेको अुखड़वा डाला था। अुसमें बारहमासीके जो चार-पाँच पौधे बच रहे थे, अुन्हें भी मैं पानी पिलाता। किन्तु जब वह गँवार हेंक (डेप्युटी जेलर) बगीचा लगानेके लिअे मुझे अुत्तेजन देता, तब मैं अुसे साफ मना कर देता। अेक दिन तो मैंने अुससे स्पष्ट ही कह दिया — 'मैं बगीचा लगाअूँ और आप दूसरे ही दिन अुसे अुजाड डालें। यह राक्षसी आनंद आपको देनेके लिअे मैं तैयार नहीं हूँ।'

* * *

अब गरमी जोरशोरसे पड़ने लगी। आसपासकी सारी घास सूख गअी। कौवे, काबर, गिल्हरियाँ आदि सब पानीके लिअे तड़फड़ाने लगे। बन्दर भी आसपाससे आकर हमारे हौजकी ओर ताकने लगे। कबूतर कर्मकाण्डी ब्राह्मणोंकी भाँति दिन भर पानीमें नहाने लगे। मेरे पास अेक मिट्टीकी कूँडी थी। अुसे पानीसे भरकर मैं नीमके नीचे रख देता। दिन भर वहाँ गिलहरियाँ आतीं, काबरें आतीं, कौवे आते और

'ले-ले-ले' की ध्वनिसे आकाशको गूँजा डालनेवाले जोगिया रंगके लवे भी वहाँ आते। अिन सबमें कौवा बड़ा धूर्त होता है। वह तो जहाँ तहाँसे रोटीके सूखे टुकडे ले आता, तीन-चार टुकड़े कूँडीमें भिगो देता, तीन-चार बार चोचसे दबाकर देखता और भीगकर बराबर नरम हो जाने पर आत्मदेवको अुनका भोग लगाता! रविवारके दिन ये सज्जन हड्डियाँ डालकर हमारी कूँडीको भी भ्रष्ट कर डालते। अेक दिन अेक नकटा कौवा आया। अुसकी चोच अूपरके भागमें से ठीक आधी टूट गअी थी। अुसकी दीन मुखमुद्रासे अैसा प्रतीत होता था, मानो अुसे अपने अिस अग-भगका सम्पूर्ण ज्ञान था। पानी पीते समय अुस बेचारेकी कठिनाअीको देखकर मुझे बड़ी दया आती। दूसरे कौवे अुसे अपनी मण्डलीमें शामिल नही होने देते थे।

अेक महीने बाद दूसरा 'अेक पैरवाला' कौवा आया। किस महायुद्धमें अुसने अपना अेक पैर खो दिया था, यह बात वह मुझसे कह न सका। वह भी दूसरे कौवोमें हिलमिल नही सकता था। बेचारा अुडकर आता और अेक पैर पर खड़ा रहता। किन्तु वह कोअी बगुलेकी जातिका तो था नही कि अेक पैर पर लम्बे समय तक खड़ा रहता। बगले और कौवेमें तो काले-गोरे जितना ही भेद है। अेकाध मिनिट तक खड़ा रहता कि थककर गिर पडता। फिर अुड़ता, फिर खड़ा रहता और फिर गिर पड़ता। दिनभर अुसका यही क्रम चलता। वह कौवा निरन्तर चार-पाँच दिन तक आया। अुसके बाद कहाँ चला गया, अिसका कुछ भी पता नही लग पाया।

* * *

नया सुपरिन्टेन्डेन्ट आया। वह डॉक्टर भी था। अुसने मेरी शीशीको देखकर पूछा—'आप किस रोगकी दवा लेते है?' मैंने हँसते-हँसते कहा—'यह तो खटमल और तिलचट्टोकी दवा है।' कैदीकी बात जो सच मान ले, वह सुपरिन्टेन्डेन्ट ही कैसा? अुसने धूर्तताभरी दृष्टिसे हँसते हुअे कहा—'जब तिलचट्टे फिरसे काटें,

तो दो-अेक पकड़कर मुझे बताअिये?' मैंने भी हँसते हुअे तुरन्त ही अुत्तर दिया—'जरा कष्ट करें तो अभी बतला दूँ।' यों कहकर मैंने अपने कपड़ोंकी पेटी जरा-सी खोल दी। खोलना था कि तुरन्त अुसमें से छः-सात तिलचट्टे सुपरिन्टेन्डेन्टका स्वागत करनेके लिअे दौड़े। मैंने साहब बहादुरसे कहा—'यह तो आजका शिकार है। कल ही मने दिनभर अिस पेटीको धूपमें रखा था।' साहब बहादुरने तुरन्त हुक्म दिया—'अभी हाल घासलेट स्टोवकी बत्ती ले आओ और जमीन, दीवार सब जला दो।' फौरनके पेश्तर यानी तीसरे या चौथे दिन बत्ती आअी और मत्कुण-सत्र प्रारंभ हुआ। दीवारके कोनों, चूनेकी पपड़ियो तथा दरवाजेकी दरारों सब जगह बत्ती घूम गअी और खटमलोंके दुर्गन्ध अुड़ाते हुअे शरीर लम्बे हो-होकर जमीन पर बिछ गये। सचमुच ही यह महान संहार था। आठ-दस दिनके बाद मेजर साहबने पूछा—'अब क्या हाल-चाल है?' मैंने कहा—'अेक सेना तो गारत हो गअी, किन्तु तिलचट्टे तो आपकी बत्तीकी रेन्जके बाहर हैं।' तुरन्त ही सुपरिन्टेन्डेन्ट तथा जेलरकी वार-कौंसिल शुरू हुअी। निर्णय हुआ कि छप्पर पर ये कबूतर बैठते हैं। जहाँ अिनकी बीट गिरती है, वही तिलचट्टे पैदा होते हैं। तुरन्त ही हुक्म हुआ कि छप्परमें सब जगह अिस प्रकारसे सीमेंट लगा दिया जाय कि ये कबूतर घुसने न पावे!

यहाँ तक तो सब ठीक था। परंतु अिसके बाद जो काण्ड हुआ, अुससे हमें भारी क्लेश हुआ। अेक दिन सबेरे ये नये साहब अपनी बन्दूक लेकर आये और अुन्होंने कबूतरोंका सहार करना प्रारंभ किया। वे मेरे पास आकर मुस्कुराते हुअे कहने लगे—"अिस बलाको खतम कर डालता हूँ। बड़ी गन्दगी कर देते है।" अुन्होंने यह सोचा होगा कि मैं अुनका आभार मानूँगा। पर मैंने अुनकी ओर अुदासीन दृष्टिसे देखा। मेरे मुँहसे अेक आह निकल गअी। साहब बहादुरको होश आया कि यह तो दयाधर्मी हिन्दू है। कबूतरोंके घर अुस दिन हाहाकार मच रहा था और सुपरिन्टेन्डेन्टके घर थी दावत!

और कबूतर भी कितने मूर्ख! दूसरे दिन वे अुतनी ही संख्यामें छप्पर पर आकर बैठे। हम अुन्हें अुड़ानेका खूब प्रयत्न करते, किन्तु वे भला क्यों अुड़ने लगे? अुनमें भी हुब्बे-वतन होता ही है। अुनमें से अेक कबूतर सफेद अथवा चितकबरा था। वह पालतू था अिसलिअे अुसने अेक सिपाहीका आश्रय लिया। सिपाहीने अुसके कुछ पर काट डाले, ताकि वह अुड़ भी न सके। अन्तमें हमारे 'भाषणवालों' में से अल्लादाद नामक अेक सिन्धीने अुस कबूतरको अपने अधिकारमें लिया। खानगी-व्यवस्थासे जुवार मँगवाकर वह अुसे चुगाता। नअी पाँखें निकलते ही अेक दिन कबूतर अुड गया। वह कबूतर जब हमारे साथ रहता था, तब हममें से किसीके भी कन्धे पर जा बैठता और जब प्रसन्न होता तब अपनी अंतस्थ आवाज निकालता।

* * *

कुछ ही दिनोंके बाद नीमके नये पत्ते आये, फिर फूल आये। हवा चलती तब दिनभर नीमके फूलोंकी वर्षा होती रहती और मैं 'मजवरी तरु कुसुम-रेणु वरुनि ढाळिती' यह पुराना पद ललकारने लगता। सुबहसे शाम तक फूल गिरते ही रहते। जमीन पर गिरनेके बाद भी ओलोंकी भाँति अुड़ते रहते। अिस कड़ुवे पेड़के कड़ुवे फूलोंकी महक ही मीठी होती है। नित्य सवेरे झाड़ू देनेवाले सूखे फूलोंको बुहार कर थैले भर लेते और नित्य ही नये-नये फूलोंके गलीचे बिछ जाते। नीमके नीचे घूमनेमें बड़ा आनन्द आता। हम कहते — 'सरकारको क्या पता कि हम अितना मजा लूट रहे हैं?'

अन्तमें यह फूलोंकी ऋतु भी विदा हुअी और निमौरियाँ अपने आगमनकी तैयारी करने लगी। अिस साल बरसात मार्ग भूलकर कहीं अन्यत्र जा भटकी होगी। असह्य गरमी होने लगी। अैसा लगता कि रातको कोठरीमें बन्द होकर सोनेकी अपेक्षा बिस्कुट तैयार करनेकी भट्टीमें जा पड़ना बेहतर है। 'भाषणवालोंने' खूब झगड़ा किया, किन्तु रातको खुलेमें सोनेकी आज्ञा नहीं मिली। जोन्स साहब अैसी आज्ञा देते

थे, किन्तु डोअिल साहब तो जोन्स साहब नही थे। अन्तमें जब प्रो० झम्मट-मल रातमें अेक-दो बार बेहोश हो गये, तब पूनासे आज्ञा मँगवाअी गअी और हमें खुलेमें सोनेकी अिजाजत मिली। हम सायंकाल साथ ही बैठकर प्रार्थना करते; खूब पानी छिड़ककर जमीन ठंडी करते और भाप निकल जाने पर बिछौने बिछाते। अितने पुरुषार्थसे तैयारी की गअी मधुर शय्याका मैं अकेला ही अुपभोग करूँ, यह कुदरतको कैसे पसंद हो सकता था? अेक गठरी-जैसा फूला हुआ मेंढक मध्यरात्रिके समय मेरे बिस्तरमें प्रवेश करता और मेरी गर्दनके नीचे आकर मुझे अपने भीने कलेवरका शीतल स्पर्श कराता।

अैसे स्पर्शकी अपेक्षा मुझे अखण्ड निद्राकी अधिक चाह थी। दो-तीन दिन तक मेंढक लगातार आने लगा। मैंने बिछौनेका स्थान बदल डाला। पर वे महाशय तो वहाँ भी आ पहुँचे। अतः मैंने विचार किया कि अब तो 'सन् १८१८ का कानून' ही अुसे लागू करना चाहिये। अुसे अेक रूमालमें पकड़कर दीवारके बाहर बिदा किया और मैं अुसके स्पर्श-सुखसे सदाके लिअे मुक्त हो गया।

* * *

अेक दिन रातके समय (हम कोठरीमें बन्द होते थे अुन दिनोंमें) लगभग दस-ग्यारह बजे गिलहरीकी अेक हृदयवेधक चीख सुनाअी पड़ी। कुछ देरमें ही 'कुर्र् कुर्र्' शब्द कानोंमें पड़ा, मानो कोअी कुछ खा रहा हो। और अन्तमें बिल्लीका विशिष्ट प्रकारका लाक्षणिक आनन्दोद्गार सुनाअी दिया। मैंने जान लिया कि अेक गिलहरी बिल्लीके पेटमें जाकर सदाके लिअे सो गअी है। किन्तु अितना जान लेने पर मुझे नींद कैसे आती? बेचारी गिलहरीको क्या हुआ होगा? साँझको थककर जब वह अपने घोसलेमें सोअी होगी, तब अुसे क्या पता था कि यह अुसकी अन्तिम निद्रा है? पर भूखी बिल्लीको कितना आनन्द हुआ होगा? प्रतिदिन अुसे अैसी दावत थोड़े ही मिलती होगी। बिल्लीने विधाताको अनेकानेक आशीर्वाद दिये होंगे!

प्रातःकाल दा . . . या और किसीके घरके स्त्री-बच्चे जेल देखनेके लिअे आये थे। कुसुम जैसे कोमल बालकोका दर्शन जेलमें कितना आनन्ददायी होता है! अनुभवके बिना अिसकी कल्पना करना अशक्य ही है। पुराने बदमाश भी अैसे बालकोंको देखकर जरा सौम्य हो जाते है और हृदयहीन सिपाही भी दो-चार क्षण मिठाससे बोलना सीखते हैं। अुसी दिन हैकका कुत्ता भी जेलमें आया। साल भरमें हमने जेलमें केवल दो ही कुत्ते देखे।

* * *

बिल्लीने गिलहरीका शिकार किया था, अुसी अरसेमें अेक युवक कैदी फाँसी पर चढ़ा। अुस दिन मुझे खाना नहीं भाया। हिंसा क्या वस्तु है? स्टोव बत्तीसे हम खटमलोंको मार डालते है, बिल्ली गिलहरीको मार खाती है, और न्यायदेवता अेक युवक अपराधीकी बलि लेता है। अिसका अर्थ क्या है? क्या समाजको अिस युवकका अिससे अधिक अच्छा कोअी अुपयोग नही सूझा? मजिस्ट्रेट, जज, डॉक्टर, सुपरिन्टेन्डेन्ट, जेलर, डेप्युटी जेलर सब अिकट्ठे हुअे। रिश्वत न मिले तब बीस रुपयेमें ही अपना गुजारा करनेवाले १०-१२ सिपाही अिकट्ठे हुअे। अेक आदमीने पत्र पढकर सुनाया, दूसरेने औश्वरका नाम लिया और सबने मिलकर अेक अैसे असहाय तरुणका खून किया, जिसके हाथ पीछे बँधे हुअे थे। जेलका बडा घण्टा बजा और दुनियासे अेक मनुष्य कम हो गया। जेलके घण्टेने क्या कहा? अुसने मनुष्यकी बुद्धिका दिवाला जाहिर किया। अुसने कहा — 'मानव-जातिने बुद्धिका दिवाला निकाल दिया है। समाजको यह भी न सूझ पडा कि मर जानेवाले मनुष्यका क्या करना चाहिये? अिसीलिअे अितने लोगोंने मिलकर अेक मनुष्यको अिस दुनियासे बिदा कर दिया और अुसके सरजनहारको बेवकूफ ठहराया!' मैंने सोचा था कि आज जब सुपरिन्टेडेन्ट आयेगा, तो मारे लज्जासे अुसका मुँह निस्तेज दिखाअी देगा। किन्तु अुसके लिअे तो यह कोअी नअी बात नही थी।

४

अेक दिन प्रातःकाल पौ फटनेके पूर्व ही मुझे अपने बिस्तर पर काला-काला कुछ हिलता हुआ दिखाओी दिया। आँखोंमें अभी नींद तो थी ही। अतः मैंने सोचा कि यह व्यर्थका वहम है। कुछ प्रकाश होते ही देखा कि अेक बड़ा कनखजूरा बिस्तरकी बगलमें से होकर दीवारकी ओर दौड़ रहा है। आधे घण्टे बाद ताला खड़का और दरवाजा खुला; अतअेव मैंने अेक झाड़ू लाकर कनखजूरेको बाहर फेंक दिया। पाँच साल पहले तो मैं कनखजूरेको देखते ही मार डालता था, किन्तु गुजरातने आकर अहिंसाकी छूत लग जानेसे अिस कनखजूरेको मारनेकी अिच्छा नहीं हुओी। मैंने तो अुसे कोठरीके बाहर फेंक दिया, पर मेरा पडोसी अिस्माअिल थोड़े ही सीधा बैठने-वाला था। अुसने झाड़ू अुठाकर अेक ही झपाटेमें कनखजूरेको अेक जन्मसे मुक्त कर दिया। अुसने मुझसे कहा—'काकासाहब! आप जरूर अिसकी शिकायत कीजियेगा। सप्रीडंडको यह बताना चाहिये।' अितनेमें ही अिस्लाम आजाद वहाँ आया और कहने लगा—'कनखजूरा कानमें जाकर कानको खा जाय, तो सरकारके बाबाका क्या जाता है? हमारा नुकसान हो जाय तो अुसका जिम्मेदार कौन है?' देखते ही देखते कौंसिल अिकट्ठी हो गओी और कनखजूरेकी बातको लेकर कौनसा काण्ड खडा किया जा सकता है, अिस बातकी चर्चा होने लगी। मैंने कहा—'पर मुझे अैसा कुछ भी करनेकी अिच्छा नहीं है।' वे सब कौंसिलर अिस प्रकारका मत बाँधकर कि 'महात्माजीका शिष्य तो अैसा ही ढीला होता है' नाराज होते हुअे अपनी-अपनी कोठरीकी ओर चल दिये। कनखजूरा वहीं पड़ा था। सुपरिन्टेन्डेन्ट आया। अुसने अुसे देखा। अुसने मेरी ओर भी अिस आशयसे देखा कि मैं अुसके सम्बन्धमें कुछ शिकायत करूँगा। पर मैं चुप रहा। अुसी क्षण

अेक कौवा आया और कनखजूरेको अुठा ले गया। बस, यहीं पर कनखजूरा-पुराण समाप्त हो गया। जेलमें आँगन साफ रखा जाता है। हर साल दीवारें पोती जाती हैं। प्रति पन्द्रहवें दिन धरती लीपी जाती है। किन्तु अूपरकी खपरैलोमें बरसोंका कचरा तथा कैदियों द्वारा छिपाअी हुअी चीजें पड़ी रहती हैं। अुनमें से ही अैसे कनखजूरे आ गिरते हैं। मैंने अैसा सुना है कि अेक बार भाअी इवेव कुरेशीको रोटीमें से कनखजूरा मिला था। सहज बातचीत करते हुअे जब मैंने सुपरिन्टेन्डेन्टसे रोटीमें से कनखजूरा निकलनेकी यह बात कही, तो वह कहने लगा —— 'अैसा तो हो ही नही सकता। बीशीके व्यवस्थापक पर खार खानेवाले किसी कैदीने जान-बूझकर रोटीमें कनखजूरा रख दिया होगा।' मैंने कहा —— 'अवश्य' जेलकी व्यवस्थामें त्रुटि होना असंभव है। कुदरतके कानून तथा जेलकी व्यवस्था, ये दोनों तो सदा निर्दोष ही रहेंगे!'

* * *

अब कौवोंके घोसले बनानेके दिन आये। कौवे दूर-दूरसे टहनियाँ चुन लाते और पेड़ पर जमाते। टहनी जरा बड़ी होती अथवा जैसी चाहिये वैसी न होती, तो कौवे अुसे लाकर मेरी कूँडीमें डालते। दस-पन्द्रह मिनटमें जब वह अच्छी तरहसे भीग जाती, तब अुसे अुठाकर ले जाते। अेक दिन अेक कौवेको लोहेके तारका अेक मोटा टुकड़ा मिला। घासकी गठरी बाँधनेमें अैसे तारका अुपयोग होता है। अिस तारसे बीसवीं सदीके अिस मयासुरने अेक लौह-प्रासाद निर्माण करनेमें अथक परिश्रम किया, किन्तु वह तार तो अक्कड़ ही रहा। अन्तमें अुसे सूझा कि चलो अिसे पानीमें डाल कर भिगोयें। दोसे चार बजे तक अुसने प्रयत्न जारी रखा। पहले अेक सिरा पानीमें डाला, फिर दूसरा, फिर बिचला भाग। दो घण्टेके निष्फल प्रयत्नके बाद कौवेरामने यह पदार्थ-विज्ञान सीखा कि लकड़ी और लोहेके गुणधर्म अेक-समान नहीं होते। किन्तु अन्तमें अुसने अपने घोसलेमें अुस तारका अुपयोग तो किया ही।

फिर अेक दिन अेक दूसरा कौवा छतरीका तार ले आया। वह बिलकुल सीधा था, अतअेव अुसकी स्थापत्य-कलामें अुसके लिअे स्थान न था। अेक कैदीने अुसे ले लिया, अुसके दो टुकड़े किये व अेक जगह छिपाकर रख लिये। मैंने पूछा — 'अिनका क्या करोगे भाअी?' तो कहने लगा — 'मुझे मोजे बनाने हैं।' मैंने कहा — 'क्या तुम जेलमें मोजे पहनोगे?' अुत्तर मिला — 'नहीं जी! मैं मोजे बनाकर अुस पठान सिपाहीको दूँगा। अिससे मुझे बीड़ीकी कुछ राहत मिलेगी।' 'और सूत कहाँसे लाओगे?' 'स्टोरमें से! वहा कौन हिसाब रखता है? अंग्रेजी राज्यमें अूपरी दिखावा तो हद दर्जेका है। अन्दरकी बात खुदा जाने!' मैंने जोडा — 'और तुम्हारे जैसे जानें!'

* * *

अेक दिन अल्लादाद दौडता हुआ आया और कहने लगा — 'काकाजी, काकाजी, जरा अिधर तो आअिये। हमने अेक कौवा पकड़ा है।' जाकर देखता हूँ तो राचमुच ही चतुर कौवा भी धोखेमें आ गया था। कौवा कोठरीमें पकड़ा गया था। अुसके पाँवमें अेक लम्बी डोरी बाँध रखी थी। (कैदीके पास डोरी कहाँसे आअी? खानगी-व्यवस्थासे ही।) कौवेने दुनिया भरके तमाम काकाओंको सहायताके लिअे दौड़नेको पुकारा, किन्तु मैं अकेला ही वहाँ हाजिर था। मैंने अल्लादादकी आजिजी की और कौवेरामने छुटकारा पाया। मेरा विश्वास है कि अिस कौवेने फिरसे जेलका मुँह तक नहीं देखा होगा। पैर बँध गया अिसकी परवाह नहीं, मर जाता तो अुसकी भी परवाह न थी। किन्तु कौवा धोखेमें आ गया, यह लज्जा अुसकी सारी जातिके लिअे असह्य हो अुठी होगी।

* * *

कौवोंकी भाँति गिलहरियोंका भी यहाँ साम्राज्य था। दिनभर आँगनमें और पेड़ पर दौड़ा-दौड मचाती रहती। साँझको छप्पर पर फिरतीं। दोपहरको भोजन करते समय (हमारे) पास आकर पूछती — 'मुझे

नही ?' अपने नितम्बो पर बैठकर, हमारे फेंके हुअे रोटीके टुकड़ेको दोनो हाथोसे पकडकर अपने तीखे-तीखे दाँतोसे कुतर-कुतर कर खातीं और कूँडीका पानी पीती। साँझ होते ही अधिकांश गिलहरियाँ छप्परके चारो कोनो पर आकर खूब क्रन्दन करती। ये अुनके आनन्दोद्‌गार थे या शोकोद्‌गार? अिसे हम कैसे जाने? किन्तु मेरे कानोको तो वह करुण क्रन्दन दमयन्ती-विलाप जैसा ही लगता। रोज साँझको पाँच बजे नियमित यह विधि चालू होती। अेक दिन खूब वर्षा हुअी। अपार क्रन्दन हुआ। किन्तु दूसरे दिनसे वह शान्त हो गया।

हम अपने बिछौनेके कम्बलोको प्रतिदिन धूपमें रखते थे। ये गिलहरियाँ वहाँ आकर दाँतोसे अून खीच-खीच कर बाहर निकालती, आगेके पैरो तथा मुँहकी सहायतासे गोल-गोल फिराकर अुसकी गोली बनातीं और छप्परकी खपरैलोमें अुसे ले जाकर घोसला बनानेके काममें लेती। अिस तरहसे अुन्होने बहुतसे कम्बलोमें छेद कर दिये और जगह-जगह घोसले तैयार हो गये। मेरी कोठरीके दरवाजे पर ही अैसा अक घोसला दिखाअी पड़ता था। कुछ ही दिनो बाद वहाँ तीन बच्चे दिखाअी दिये। अुनकी माता हमारे पाससे रोटीके टुकड़े ले जाती और अुन बच्चोको खिलाती। नि.सन्देह माँका दूध सूख जानेके बाद ही बालक अनाज खाने लगे थे। अेक दिन अेक बच्चा अूपरसे नीचे आ गिरा। सामनेके नीम पर बठे कौवेके मुँहमें पानी भर आया, किन्तु बच्चा मेरी कोठरीमें घुस गया। मैंने अन्दर जाकर थोडे ही प्रयाससे बच्चेको पकड लिया। पर अुसे अुसके अूँचे घोसलेमें कैसे रखा जाय? मैंने जोरसे आवाज़ देकर शामलभाअीको बुलाया। वे मेरे दरवाजेके आगे बैठ गये। अेक हाथमें बच्चेको लेकर तथा दूसरे हाथसे दरवाज़ेकी लोहेकी छडें पकड़कर मैं अुनके कन्धे पर खड़ा हो गया। फिर शामलभाअी धीरे-धीरे खडे हो गये। अिस प्रकार मेरा हाथ घोसले तक पहुँच गया और डरके मारे काँपता हुआ बच्चा सही-सलामत अपने घर पहुँच गया। बच्चेकी माँको क्या पता था कि मैं

अु   हितेच्छु हूँ ? अुसने अपनी तिर्यग्-भाषामें मुझको अनेको गालियाँ दी, शाप दिये और जब अुसका बच्चा कुशलतापूर्वक घोसलेमें पहुँच गया, तब भी अपना दोष देखनेकी अपेक्षा माँने यही कहा होगा—‘परमात्माका अुपकार कि मेरा प्यारा बालक अिन दुष्टोसे छुटकारा पा सका।’ किन्तु अुन मूर्ख बच्चो पर तो अिसका अुलटा ही प्रभाव पड़ा। क्योंकि अब वे बेपरवाह होकर दो-तीन बार अूपरसे नीचे आ गिरे; और प्रत्येक बार मुझे तथा शामलभाअीको सरकसकी कसरत करनी पडी। किन्तु भूयोदर्शनसे गिलहरी माताको यह विश्वास हो गया कि ये लोग वाल्मीकिके शापके योग्य निषाद नही हैं, किन्तु हरिण-शावकका पालन करनेवाले जड़भरत जैसे ही कोअी हैं।

अिसी अरसेमें नीम पर कौवेके बच्चे भी अंडोसे बाहर निकले। पशु-पक्षियोमें अपत्य-रक्षणकी वृत्ति सबसे प्रबल होती है। आज तक बहुतसे कदी दातुन तोड़नेके लिअे प्रतिदिन प्रातः या सायंकाल नीम पर चढ़ते थे। कुछ तो जेलके बाहरकी दुनियाका दर्शन करनेके लिअे भी नीम पर चढ़ते। ‘वह आपका आश्रम रहा! वह तिमजिला अेक दूसरा मकान रहा!’ यो वे मुझे सुनाते और मुझे भी नीम पर चढनेके लिअे निमंत्रण दते। वृक्ष पर चढ़ना तो जेलके नियमके अनुसार ९ दिनकी माफी कट जाने जैसा अपराध है। अेक ही सालके लिअे मैं जलमें आया था, अिसलिअे अपराध करके भी बाहरी दुनिया देखनेकी मेरी अिच्छा नही थी।

किन्तु जब नीम पर कौवोके बच्चोका वास हुआ, तब अुस पर चढ़नेका किसी भी कैदीका साहस न रहा। कौवे झपटकर चोंच मारते अथवा सिर परसे टोपी अुडा ले जाते। यदि कैदी अपनी टोपी खो दे, तो बेचारा अुसके साथ ही नौ दिनकी माफीसे भी हाथ धो बैठे। अेक कौवीने नीम पर चढ़नेवाले शामलभाअी पर तथा अन्य दो कैदियो पर मनमे खास खार रखा। अिनको देखती कि वह चोंच मारे बिना रहती ही नही। हमारा झाडूवाला बूढा पीली टोपी पहनता

था। अुस पर अुस कौवीका विशेष रोष था। अिसलिअे पीली टोपीवाला जो भी कैदी नीचेसे होकर निकलता, अुसे भी अुसका चंचु-प्रसाद मिले बिना नहीं रहता। वह अिधर-अुधरसे आकर सिर पर, कन्धे पर या कनपट्टी पर चोंच मारकर भाग जाती। दिन प्रति-दिन यह अत्याचार अितना बढ़ता गया कि अन्तमें नूरमहम्मदने सिर पर चादर लपेटकर नीम पर चढ़ कौवेका घोसला नीचे अुतार लिया। अुसमें पंखहीन, अूँट जैसी आकृतिवाले कौवेके तीन बच्चे थे। वे मुँह बाये पडे हुअे थे। अुनके मुँह अन्दरसे सुन्दर, लाल-सुर्ख दिखाअी देते थे।

नूरमहम्मदकी यह क्रूरता भाअी अब्दुल्लासे सहन न हुअी। भाअी अब्दुला सिन्धकी ओरके अेक संस्कारी कुटुंबके युवक थे। अुन्होंने चिढ़कर कहा — 'खिलाफ़तके लिअे तुम बहादुर बनकर फाँसी पर चढ़नेके लिअे तैयार हो; और अपने बच्चोंकी रक्षाकी खातिर चोंच मारने-वाली कौवीकी चोटोंसे कायर बन गये और बच्चोंका घोसला तोड़ डाला? खुदा तुम पर कितना नाराज़ होगा।' बेचारा नूरमहम्मद खिसियाना पड़ गया और शामलभाअीको आश्चर्य हुआ कि मांसाहारी मुसलमानमें भी अितनी दया! अन्तमें नूरमहम्मदने पठानकी आज्ञा लेकर हमारे आँगनके बाहरवाले दूसरे नीम पर वह घोसला रख दिया। पर वह वहाँ टिक नहीं सका, अिसलिअे फिर अुसे पहलेवाले स्थान पर ही जमा कर रखना पड़ा।

कौवीको अब अपने बच्चोंके खान-पानकी चिंता हुअी। अतः अुसने अपनी काकदृष्टिको अधिक तीव्र करके आहार ढूँढ़ना आरंभ किया। गिलहरीके बच्चे भी अब बड़े होकर अिधर-अुधर घूमने-फिरने लगे थे। मादाने अुनमें से अेक बच्चेको मारकर अपने पुत्रको पहली बार मांसका आस्वादन कराया। अुसी दिनसे गिलहरियों और कौवोंके बीचमें शत्रुता पैदा हो गअी। कौवे छत पर बैठे होते या नीम पर, अेकाध बड़ी गिलहरी अपनी पूँछ फुलाकर कौवों पर धावा बोलती और कौवेके

भयभीत होकर अुड़ जानेके पहले ही अुसे अपने नाखूनो और दाँतोका मजा चखा देती। कौवे गिलहरीसे डरते हैं, यह तो मैंने यही पहली बार देखा। किन्तु कौवा हवामें अुड़ सकता है और गिलहरी नही अुड सकती, अिसलिअे यह युद्ध अंग्रेजो और अरबोके युद्ध जैसा ही हो जाता था। यदि अरबोके पास हवाअी जहाज होते और गिलहरियोके पाँखें होती, तो ये दोनो महायुद्ध कुछ दूसरा ही रूप धारण करते।

अेक दिन अेक कौवा कहीसे गिलहरीका बच्चा मारकर मेरी कूँडीमें भिगोनेके लिअे ले आया। चिढ़कर मैंने पानी अुलट दिया और कूँडीको औंधा रख दिया। फिर विचार किया, दयाधर्ममें अिन्साफ कैसा? अिन्साफ तो अेक ख़ुदा ही कर सकता है। वह रहीम भी है और कहार भी।* मेरा काम तो प्यासेको पानी पिलाना है। कौवा अपना आहार ढूँढ लेता है, अिससे मैं अुसको सजा क्यो दूँ? यदि मेरे देखते-देखते वह गिलहरीको मारे, तो मैं अुसके प्राण बचानेका प्रयत्न अवश्य करूँगा। कारण, वैसा न करनेसे मेरी दयावृत्ति दुःखित होगी। किन्तु मेरा कौवे पर क्रोध करना अुचित नही है। गिलहरीको मारते समय अुसके मनमें गिलहरीके प्रति द्वेष अथवा वैर होता है या अपने भूखे बच्चेकी वात्सल्यभरी चिन्ता, अिसका निश्चय कौन करे? मेरी माँ जब पेड़से आम तोड़कर खानेके लिअे मुझे देती थी, तब अुसके विचार क्या अिस कौवेके विचारोसे भिन्न होगे? परदुःखका विचार केवल मनुष्यका ही अधिकार है। अन्य प्राणी तो क्वचित् ही यह वृत्ति पैदा कर पाते हैं। पशु-पक्षियोका जीवन नीतिबाह्य होनेके कारण अुसमे नीति-अनीतिका अुद्भव ही नही होता। मनुष्य भी अभी अधिकांशमे पशु ही है। अिसीलिअे परदुःखसे अुसका हृदय नही पसीजता। यह कहा जाता है कि मनुष्योमे भी स्त्रियाँ अपने

---

* रहीम यानी दयावान और कहार यानी कहर बरपा करनेवाला।

बालबच्चों तथा सगे-सम्बन्धियोंके प्रति प्रेमवृत्तिका असाधारण अुत्कर्ष बताने पर भी दूसरेके दुःखके प्रति अुदासीन ही रहती है। और स्त्री स्त्रीके दुःखको देखकर कअी बार प्रसन्न भी होती है। यह बात कहाँ तक सत्य है और कहाँ तक झूठा दोषारोपण, अिसे तो स्त्रियाँ ही बतला सकती हैं। अितना सच है कि मनुष्येतर सृष्टिमें नरकी अपेक्षा मादाका जोश और जुनून अधिक होता है। जंगली असंस्कारी लोगोंमें भी अैसा ही होता है।

* * *

अेक रातको जोरोंसे हवा चली। कौवेका घोंसला नीचे आ गिरा और अेक बच्चा मर गया। नूरमहम्मदने घोंसलेको तथा बचे हुअे बच्चोंको फिरसे नीम पर जमा दिया, परन्तु अेक-दो दिनमें अुनका भी अन्त हो गया। झाड़ूवालेने बच्चोंको दीवारके बाहर फेंक दिया। वहाँ कौवोंकी जमात अिकट्ठी हुअी और अुन्होंने रुदन किया। अनेकों बूढ़े कौवोंने मरसिया (शोक-गीत) गाये। माँ कौवी तो अवाक् होकर बैठ ही गअी थी। अन्तमें जब भारी वर्षा हुअी, तो लाचार होकर जमात अुड़ गअी। किन्तु तीन-चार कौवोंके दुःखका आवेग अितना भारी था कि बरसातमें अुड जानेका भान भी अुनको नहीं रहा। कौवोंको निःसंतान हुआ देखकर गिलहरियाँ प्रसन्न हुअी या नहीं, यह हम कैसे कह सकते है? अीर्ष्या, मत्सर और परदुःख देख कर आनंदित होनेकी वृत्तियाँ कदाचित् सुधरे हुअे प्राणियोंके ही दुर्गुण होंगे। बच्चोंके मर जानेसे कौवे भी जरा ढीले हो गये। हमको अखरनेवाला कौवोंका अंतिम शिकार तो हमारी टट्टी पर रहनेवाली अेक चिड़ियाके बच्चेका था।

५

रविवारका दिन था। सिपाहियोंको जल्दी घर जाना था; अिसलिअे हमारी आजिजी करके अुन्होंने हमें पाच बजे ही कोठरियोंमें बन्द कर दिया। मैं 'नाथ भागवत' का अेक अध्याय पूरा करके शान्तिसे कोठरीमें बैठा था। रातपालीके सिपाही और मुकादम ताले ठीक बंद हैं या नहीं, यह देखकर बीड़ी पीनेके लिअे कहीं कोनेमें जा छिपे थे। अितनेमें ही अेक बड़ा पुष्ट वन-बिलाव छककर खा लेनेके बाद मूछें चाटता-चाटता तथा हाथीकी तरह झूमता-झूमता आकर मेरे दरवाजेके सामने रुका और मुझे ध्यानपूर्वक देखता हुआ खड़ा रहा। अुसने सिर अूँचा किया, नीचा किया, दरवाजेके अेक किनारेकी ओरसे देखा, दूसरे किनारेकी ओरसे देखा और 'गुर्‌र्‌र् म्याअूँ' कहकर अपना सन्तोष व्यक्त किया। बचपनसे मैं अनेकों अजायबघर देखता आया हूँ। पिंजरेमें बन्द पशु-पक्षियों, शेर-बिल्लियोंको मैंने बाहरसे देखा है; बाहरके लेबल पर अुनका वर्णन पढ़कर अपना सन्तोष व्यक्त किया है। किन्तु यह तो मैंने कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि मैं कोठरीके भीतर बन्द होअूँगा और अेक बेशरम बिल्ला बाहरसे मुझे देखकर अपना सन्तोष व्यक्त करेगा! यदि बिल्लियोंका जातीय समाचारपत्र निकलता होता, तो वह वन-बिलाव अवश्य ही अिस प्रसंग पर अेक लम्बा वर्णनात्मक लेख लिखता।

* * *

मैं पहले कह आया हूँ कि जेलमें बन्दर बहुत आते थे। नीचे अुतरकर हौजमें से पानी भी पीते थे। हमारे साथवाले प्रोफेसर झम्मटमलका अिन बन्दरों पर बड़ा भाव था। सिन्धी भाषामें बन्दरको 'भोलू' कहते हैं। भोलुओंको देखते ही झम्मटमल प्रसन्नतासे खिल अुठते। कअी बार हम सायंकाल चार बजे साथ-साथ नहानेके लिअे बैठते और ये भोलू पासकी भीत परसे होकर निकलते। अहिंसक मनुष्यके रूपमें अिन

भोलूओ पर मेरा अच्छा प्रभाव था। अतः मेरे नहाते रहने पर भी वे भीत परसे होकर शान्तिपूर्वक निर्भय निकल जाते। किन्तु गरमीकी भापसे अच्छी तरह सिके हुअे झम्मटमलकी सहानुभूति मेरी अपेक्षा अधिक बढ़ी-चढी थी। अिसलिअे अुन्हें यह होता कि अिन बंदरोंको नहलाया जाय तो कैसा? अतः वे अपने जस्तेके लोटेको भरकर गुपचुप तैयार खडे रहते और वन्दरोंके दीवार परसे होकर निकलते ही 'हा-अू-अू-अू' करते हुअे अुन पर अुसका पानी अुछालते। अरसिक भोलुओंको अिसमें मजा नहीं आता, अिसलिअे वे अपनी लम्बी पूँछ अूँची करके दौड़ लगाते और दूर जाकर वापस पीछेकी ओर मुड़कर दाँत दिखाकर अपना रोष व्यक्त करते। अल्लादाद वहाँ होता तब वह वन्दरोंको यह विश्वास दिला देता था कि मनुष्योंके भी दाँत होते हैं। बहुत दिनों तक यही क्रम जारी रहा। वन्दर छोटे चक्कर नम्बर ४ को त्याग देनेका विचार करते, किन्तु झम्मटमल तो मधुमक्खी जैसे थे। मधुमक्खीके पास डंक भी होता है और मधु भी। वे प्रतिदिन संध्याके समय जितने मिलें अुतने रोटीके टुकड़े अिकट्ठे करके अिन भोलुओंको खिलाते। फिर तो भोलू जानेकी अिच्छा ही क्यों करने लगे? नित्य नये-नये अिष्ट मित्रोंको वे अपने साथ ले आते। आगे चलकर तो वे अितने ढीठ हो गये कि हमारे हाथोंसे भी रोटीके टुकड़े ले जाते! अिनमें अेक बूढ़ा भोलू भी था। अुसके दाँत गिर गये थे। रविवार तथा शुक्रवारके दिन हम अुसे गेहूँकी रोटी देते।

किन्तु कुछ ही दिनोंमें अिन बन्धुओंके अुपद्रव बहुत बढ गये। अेक दिन शामको लगभग साड़े छः बजे होंगे। हम कोठरियोंमें बन्द कर दिये गये थे। अितनेमें ही दस-बारह भोलुओंकी अेक फौज आअी और अुसने हौजके पासके पीपल पर अचानक हमला कर दिया। बेचारे पीपलके कुछ समय पहले ही नये पत्ते आये थे। धूपमें वह खूब चमकता। भोलुओंने अुसकी अनेकों छोटी-बडी डालियाँ तोड़ डालीं।

नीचेसे अूपर और अूपरसे नीचे वे खूब कूदे-फाँदे और अपनी खुजली मिटाकर अँधेरा होने पर घर गये। घर यानी कहाँ?

दूसरे दिन मैंने अपने साथियोंसे कहा कि 'ज्यों-ज्यों हम बन्दरोंको अधिक हिलायेंगे, त्यों-त्यों वे अधिक आयेंगे, लंका-लीला करेंगे और फिर कबूतर-हत्याकी भाँति ही वानर-हत्या होगी। अुसका पाप हमारे सिर पड़ेगा।' मेरी दलीलको सबने स्वीकार कर लिया, किन्तु किसीके भी आचरणमें परिवर्तन नहीं हुआ। अेक दिन खेरल नामक अेक सिन्धी भाअीने अेक भोलूको ललचाकर सामनेकी खाली बैरकमें बन्द कर दिया और फिर लगे महाशय अुस पर बाहरसे मिट्टीके ढेले फेंकने। भोलू खूब चीखा-चिल्लाया। बाहरसे पाँच-पच्चीस भोलू अिकट्ठे हुअे। चीखो-चिल्लाहटोंका पार नहीं रहा। अेक भाअीने आकर मुझे अिसकी सूचना दी। बेचारा वह भोलू बैरकमें कूद-फाँद करके अन्तमें छप्परकी कैंची पर जा बैठा था। मैंने खेरलसे कहा — "छोड़ दो बेचारेको। गरीबको क्यों सताते हो?" खेरलने कहा — "ये तो हमारे दुश्मन हैं। अिनको मारना चाहिये।" मैंने पूछा — "बेचारे भोलू तुम्हारे दुश्मन कहाँसे बन गये?" अिसका जो अुत्तर मुझे मिला, अुसमें तो मनुष्य-जातिकी तर्कशक्तिकी पराकाष्ठा थी। खेरलने कहा — "अंग्रेज हमारे दुश्मन हैं। हम अंग्रेजोंको बन्दर कहते हैं, अिसलिअे बन्दर हमारे दुश्मन हैं। (Q. E. D.) अुनको जरूर मारना चाहिये!" फर्ग्यूसन कालेजमें मैं पूर्वी और पश्चिमी दोनों तर्कशास्त्र पढ़ा हूँ। गूजरात महाविद्यालयमें जरूरतके समयमें मैंने तर्कशास्त्र पढाया है। किन्तु अिस तर्कशास्त्रके आगे तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैंने अुससे कहा — "तुम अंग्रेजोंको बन्दर कहते हो, अिसमें बन्दरोंका क्या गुनाह है? क्या वे तुम्हारे पर राज करते हैं? क्या बन्दरोंने खिलाफ़तसे दुश्मनी की है? क्या बन्दर अिस देशको लूट रहे हैं?" खेरलने कहा:

"लेकिन ये बन्दर तो हैं? बस अिसीलिअे ये हमारे दुश्मन हैं। जैसे अंग्रेज, वैसे ये!"

अन्तमें सबके दबाव डालने पर भोलूको बड़ी मुश्किलसे छुटकारा मिला। और वे सब रातमें सोनेके लिअे चले गये।

६

बरसातके दिन आ पहुँचे। राह देखते-देखते थककर लगभग निराश हो चुके प्राणी आनन्दित हो अुठे। धरती महकने लगी। सायंकालीन बादलोंके बीच काली तथा सुनहरी किनारीवाले बादल अधिक प्रिय लगने लगे। कभी अहमदाबादकी दिशामें तो कभी वीरमगाँवकी दिशामें सजल घन अुतरते हुअे दिखाअी देने लगे। पहले दिन साँझको हमने साथ बैठकर प्रार्थना की तथा मेघकी भाँति ही आर्द्र हृदयसे अिस कृपाके लिअे प्रभुका गुणगान किया। सूखी हुअी धरा पर बाल-तृणांकुर फूट निकले, किन्तु अपने कानों और पूँछोंको हिलाते हुअे अिन तृणांकुरोंकी दावत करनेवाले बछड़े या भेड़-बकरियोंके बच्चे यहाँ नहीं थे। भूमिदेवीका मातृहृदय सफल हुआ, परतु अुसका दुग्धपान करनेवाला कोअी नहीं था। बेचारा होकेरअप्पा यहींसे कर्नाटकके हपी तरफके अपने खेतोंको देखने लगा। निर्दोष नाअी पोचाभाअी घरके पशुओंकी बातें करने लगा। अर्जुन तथा रावजी नामक वृद्ध भीलोंकी जोड़ी बालकोंकी भाँति नृत्य करने लगी। नृत्यके साथ ही गान भी था। किन्तु वह शिष्टजनोंके सुनने योग्य नहीं था। रावजी कद्दावर नहीं था, पर सशक्त था। जेलमें दूसरी बार आया था। अब अुसके मुँहमें दाँत बहुत कम रह गये थे। अैसा वृद्ध पुरुष बरसातकी ठंडी हवा लगते ही तुरन्त जवान हो गया और कहने लगा—"घर लौटने पर कौन जाने मेरी

घरवाली मुझे जीती मिलेगी या नही? मर गअी होगी तो मै दूसरी शादी कर लूगा। घरमें कोअी रोटी-पानी करनेवाली तो चाहिये न!"

बाहरसे नये आनेवाले कच्चे कैदियो* की सख्या बढती कि अुनमे से कुछ कैदियोको हमारे पोर्ट-ब्लेयरमें रखा जाता। अुनके द्वारा हम बाहरके बरसातके समाचार प्राप्त करते। सिपाही जब प्रसन्न होते, तब हमारे पास बैठकर 'साबरमतीमें दस फुट पानी है, बीस फुट पानी है' — अिस प्रकारके समाचार सुनाते। हमारा अेक मित्र प्रतिदिन नीम पर चढ़कर दूर तक देखता, किन्तु फिर कहता कि 'फसल कैसी है यह यहाँसे ठीक-ठीक नही बताया जा सकता।' बाहर सुकाल हो कि दुष्काल, अिन कैदियोको अिससे क्या मतलब? अुन्हें तो आठ-आठ दस-दस साल यही बिताने है। बहुतसे कैदी आह भरकर कहते — 'हमारी कब्र तो जेलमें ही खुदेगी।' अिन लोगोको दुष्कालकी क्या चिन्ता? बाहर अनाज पैदा होने पर भी अिनको घी-दूध तो दूर रहा, छाछ तककी अेक बूँद भी नही मिलनेवाली है! और बाहर भयकरसे भयंकर अकाल पड़ने पर भी अुस कारणसे अिनकी १३ औंसकी रोटी ११ औंसकी नहीं होगी। अितना होने पर भी अिन्हें बरसातकी चिन्ता क्यो रहती है? अिसलिअे कि ये कैदी होने पर भी मनुष्य बने रहे है। अिन्होने अनेक अपराध किये होगे, किन्तु ये ससारका बुरा चाहनेवाले नही है। नि.सन्देह मानव-जातिके प्रति अिस अकारण तथा अकृत्रिम प्रेमके विषयमें जेलके अधिकारियोंकी अपेक्षा ये कैदी अधिक बढ़े-चढ़े है।

नीमकी निमौरियाँ अब अच्छी तरहसे पक गअी और टप्-टप् नीचे गिरने लगीं। अिन्हे खानेकी कैदियोंको अिजाजत थी। जिन कैदियोमें बीमार पडकर अस्पताल जाने तथा अेकाध दिन वहाँ पर साबूदानेकी काँजी पीनेकी शक्ति या युक्ति नहीं होती, अुनको साल

---

* वे कैदी जिनको मुकदमा चलानेके पहले या मुकदमा चलानेके अरसेमे कैदमे रखा जाता है।

भरमें अितना ही मीठा मेवा मिलता था। अत. वे भरपेट अिन निमौरियोंको खाते। हाँ, जब जमादार अनुकूल हो, तब अस्पतालमें जाकर स्प्रिट क्लोरोफार्मका अेकाध डोज अवश्य पीया जा सकता है।

*   *   *

अब गिलहरियोंका करुण क्रन्दन शान्त हो गया। वे अब चुपचाप ही नीचे आँगनमें तथा वृक्ष पर खेलने लगीं। अब तक बहुतसी गिलहरियोंने हमारे साथ मित्रता कर ली थी। वे हमारे पास आती और मुँह हिला-हिलाकर हमसे रोटियोंके टुकड़े माँगती। हमें मिलनेवाली जुवारकी रोटियोंके खिलाफ कैदियोंकी शिकायत तो रहती ही थी, परन्तु चील, कौवे और गिलहरियाँ तक जुवारकी रोटीके दिन रोटीके टुकड़े लेनेके लिअे अधिक अुत्सुक नही रहती थीं। कैदी कहते — "यह भी कोअी जुवार है? मिट्टी है, मिट्टी!" मैंने देखा है कि कअी बार कैदी जुवारकी अपेक्षा पुराना बाजरा खाना अधिक पसन्द करते थे। गेहूँकी रोटियाँ होतीं अुस दिन गिलहरियाँ हमारे सामने बैठकर हाथमें से टुकडे ले जातीं और कोठरीके अन्दर जाकर खातीं। अेक दिन तो दो गिलहरियोंमें होड़ या प्रतियोगिता चली। अुनमें से अेक गिलहरी पीछेसे दौड़ती हुअी आकर मेरे कन्धे पर चढ बैठी। हम सुबह गिलहरियोंको गरमागरम काँजी देते। जिस दिन सवेरे काँजी देरसे आती, अुस दिन ये गिलहरियाँ अधीर बालककी भाँति हमें तंग भी करतीं।

अेक दिन सुपरिन्टेन्डेन्टने आकर कहा — "मैंने सुना है, आप गिलहरियोंको खिलाते हैं।" मैंने कहा — "जी हाँ!" वह बोला — "अिसीलिअे वे बहुत आती हैं और धूपमें डाले हुअे कम्बलोंको कतर खाती हैं। 'रिट्रेंचमेंट' के अिन दिनोंमें अितनी हानि कैसे सहन की जा सकती है? आजसे ही आपको गिलहरियोंको खिलाना बन्द कर देना चाहिये, वरना मुझे पिंजरे लाकर अिन्हें पकडना और मारना पडेगा।" मैं समझ गया कि हिन्दूको परास्त करनेका अचूक अिलाज अिन भाअीसाहबके हाथ लग गया है। सचमुच, दूसरे ही दिनसे मैंने

गिलहरियोंको खिलाना बन्द कर दिया। बेचारियाँ आ-आकर मेरी ओर देखती। आज मैं अुन्हें क्यों नहीं खिलाता, अिसका कारण वे कैसे समझ पाती? और मैं समझा भी कैसे सकता? मेरी आँखें भर आअी। युरोपमें महायुद्ध हुआ, अिंग्लैण्डका रक्तशोषण हुआ, परिणाम-स्वरूप हिन्दुस्तानको भारी खर्चमें अुतरना पडा। अिसलिअे समस्त विभागोंके खर्च घटा देनेका निश्चय हुआ और अिससे अेक निरीह गिलहरीको प्रतिदिन मिलनेवाला रोटीका टुकडा बन्द हुआ! कैसी कारण-परम्परा!

* * *

बरसात शुरू हुअी और हमारा बाहर सोना बन्द हो गया। साँझको हम वापस कोठरीमें बन्द किये जाने लगे। अिसी अरसेमें मेरी कोठरीमें चींटोंकी बहुत बड़ी फौज निकल आअी। अब कैसे सोया जाता? 'भाषणवालों' की कोठरिया ठेठ किनारे पर थी; अतः बौछारोंसे अधिक भीगती और अिससे चींटे भी अुनमें अवश्य ही होते। दिनमें हम चबूतरे पर सोते तो वहाँ भी चींटे आ जाते। रातमें कोठरीमें आ जाते। और आते तब दस-पाँच या सौ-पचास नहीं, किन्तु सारी कोठरी भर जाय अितनी बडी काली फौज वहाँ आ खडी होती। दूसरे ही दिन अेक 'भाषणवाले' ने अहिंसक होने पर भी फिनाअिल मँगा कर प्रत्येक बिल पर अभिषेक करना प्रारंभ किया। अैसे जर्मन अिलाजके आगे चींटोंकी फौज टिक न सकी। कोढ़में खाजकी तरह चींटोंका अेक नया शत्रु और पैदा हो गया। चींटे चबूतरे पर फिरने लगते कि हमारी पूर्वपरिचित काबरें मंजुल ध्वनि करती; और अपनी पाँखोंकी तहमें छिपाये हुअे श्वेत वर्णको प्रकट करती हुअी, बच्चे किशमिश खाते हैं वैसे ही चींटोंको खा जाती!

* * *

पतंगोंकी भाँति ही ये चींटे भी अपनी मृत्युके बारेमें लापरवाह दीख पडते हैं। बचपनमें मैंने देखा था कि रातको दीपक

जलाते ही अनेको पतगे असके आसपास भक्तिभाव पूर्वक प्रदक्षिणा करने लगते है, घण्टो तक फिरते रहते है और अन्तमें मर भी जाते है। जेलके चीटे हौजमें पानी पीने या नहाने जाते। चलते-चलते हौजके किनारे तक पहुँचते कि पैर फिसलते ही टप्-से हौजमें जा गिरते। मै नहा रहा होता तब जितनो पर ध्यान जाता, अुनको बाहर निकाल कर दूर रख देता। किन्तु ये हठीले चीटे जमीन पर पैर धरते ही वापस हौजकी ओर दौड़ते और फिरसे पानीमें जा गिरते। मै अुनकी मूर्खता पर बहुत चिढ़ गया। मैने मन ही मन कहा — 'ये कमबख्त पहली बार तो अज्ञानवश ही पानीमें गिर पड़े थे, परन्तु पानीमें गिरनेके बाद तडपते हुअे अध-मरोको मैने बाहर निकाला। अिनका वह अनुभव कहाँ चला गया? हौजमें दूसरे कितने ही मरे हुअे चीटोको भी अिन्होने देखा है, फिर भी अक्ल नही आअी?' बहुतसे चीटोको तो मैने बडी सावधानीसे तीन-तीन बार पानीसे बाहर निकाला है। फिर भी अनुभवसे ज्ञान प्राप्त करे, अैसी यह जाति ही नही है। मैने निश्चय कर लिया कि कबूतरोकी भाँति ही ये चीटे भी मूर्ख प्राणी है। किन्तु यह भी विचार आया कि 'मनुष्य-जाति भी कितनी मूर्ख है! विषयोमें पडकर क्षीण होती है, मर जाती है, फिर भी अुनको छोडती नहीं। अनादि कालसे भवचक्रमें भटक रही है, फिर भी रामनाम नही लेती। मनुष्य विवाह करके पछताता है, फिर भी विवाह किये विना नही रहता। और हम भारतवासी दूसरोकी सहायता पर विश्वास करते है और अुनके अत्याचारोके अधीन हो जाते है। अितिहासकालमें अनेक बार यह अनुभव हमने प्राप्त किया है, फिर भी बारम्बार अुसी बातको दुहराते आये है। तब चीटोकी ही यह आत्म-हत्या देखकर मुझे अैसा क्यो मान लेना चाहिये कि यह जाति ही मूर्ख है?

* * *

अिन्द्रगोपका नाम बहुत ही कम लोगोने सुना होगा। किन्तु जिसने अुनको देखा ही न हो, अैसा मनुष्य शायद ही कोअी मिले।

वर्षाऋतुके प्रारंभमें अनारके दानों जैसे लाल तथा मखमल जैसे मुलायम छोटे-छोटे जन्तु जमीनसे बाहर निकल कर फिरते रहते हैं। वे आठ-दस दिन तक ही दिखाओ देते हैं और साल भरमें आठ दिनके जीवनका अुपभोग करके विलीन हो जाते हैं। अिन आठ दिनोंके भीतर ये जन्तु अपना बचपन, यौवन और वृद्धावस्था भोग लेते हैं और धरती माताको श्रद्धापूर्वक अपने अंडे सौंपकर अिस संसारसे विदा हो जाते हैं। अुनके मनमें अिस बातकी शंका नहीं रहती कि हमारी परम्परा कैसे चलेगी? अुनके मनमें यह भय नहीं रहता कि यदि हमारी जाति नष्ट हो जायेगी, तो दुनियाकी कितनी भारी हानि होगी? अुन्हें यह मनोव्यथा व्यथित नहीं करती कि नये वर्ष (वर्षका मूल अर्थ वर्षा-काल है।) में हमारे बालकोंकी देखभाल कौन करेगा? विश्वंभरा प्रकृति माता पर विश्वास रखकर वे शांतिपूर्वक अपनी जीवन-लीला पूरी करते हैं। मनुष्यको ही अपने वंश तथा विरासतकी अितनी चिन्ता क्यों रहती होगी? प्रजातन्तुके अविच्छिन्न रहनेकी आतुरता रखकर ही मनुष्य रुकता नहीं। जब तक वह अपने बेटों-पोतोंके लिअे खाने पर भी खतम न हो अितना धन अपने पीछे नहीं छोड़ जाता, तब तक सुखपूर्वक मर भी नहीं सकता। अिन्द्रगोपका रक्षण अिन्द्र करता है। क्या मनुष्यका रक्षण करनेवाला कोअी नहीं है? अथवा यही मान लें कि मनुष्यने देखा होगा कि औश्वरके सिर पर सबकी चिन्ताका भार है, अिससे वह बेचारा थक जाता होगा। अिसलिअे और कुछ नहीं तो चलो, अपना भार तो हम आप अुठा लें। अिससे अुसका अितना भार हलका हो जायगा। 'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः' (मनुकी सन्तान अपना रक्षण आप कर लेती है।) मनुष्यके अैसे अुद्‌गार सुनकर आद्य मनुने कितनी धन्यताका अनुभव किया होगा!

अुसी दिन मौलाना साहबके साथ चल रही चर्चामें अुनके मुँहसे अेक वचन निकला — 'जब हम मनुष्यसे कुछ माँगते हैं, तब वह नाराज़ हो जाता है। किसीके पाससे कुछ न माँगनेमें ही बुद्धिमानी है, महानता

है। अिसके विपरीत, परमात्मासे माँगनेमें ही वह प्रसन्न रहता है। ओिश्वरके पाससे कुछ नही माँगने जैसा दूसरा कोअी अपराध नहीं है। अुन बादशाहोके बादशाहकी स्तुति करने तथा सब कुछ अुसीसे माँगनेमें हमारी महानता है। मनुष्यका यही धर्म है कि वह ओिश्वरसे ही सब कुछ माँगे और वह जिस हालतमें रखे अुसीमें सन्तुष्ट रहकर अुसके गुणगान करे।'

৲　　৲　　৲

पौ फटते ही पक्षी जल्दी अुठकर चहचहाने लगते। साँझको नीड़में (घोसलेमें) विश्राम लेनेके पहले भी वे वैसी ही मधुर आवाज करते। द्विजगणका यह सूर्योपस्थान मुझे अपनी प्रार्थनाकी याद दिलाता। साल भरके जेल-जीवनमें केवल अेक ही दिन मेरी प्रार्थना बन्द रही। ग्रीष्मकालमें पक्षी बहुत जल्दी अुठ जाते हैं। जो सबसे पहले अुठता है, वह अपनी कलध्वनि प्रारंभ करता है। तुरन्त ही दूसरे पाँच-सात पक्षी भिन्न-भिन्न वृक्षो परसे अुसका प्रतिश्रवण करते हैं और फिर सारा संघ अपनी अमृतवाणीकी वर्षा करने लगता है। पक्षियोंके अिस सम्मिलित गानमें न तो स्वरका मेल होता है न तालबद्धता ही। फिर भी अिस विशृंखल स्वर-सम्मेलनमें कैसा अनुपम माधुर्य होता है! अुषा और संध्या कितने ही समृद्ध रंगोसे रँगी हुअी होने पर भी अिस प्रकारके निसर्ग-संगीतके बिना तो सूनी-सूनी ही लगेंगी।

৲　　৲　　৲

अेक दिन भारी वर्षा हुअी। सर्वत्र पानी ही पानी हो गया। नाले-नालियाँ अितने भर गये कि वे कहाँ है अिसका पता तक नही चलता था। अुन पर जब अूपरसे पानी बरसता, तब अैसा लगता मानो अुनका पानी अुछलकर अूपरकी वर्षाका स्वागत कर रहा हो। हम अिसे बचपनसे 'दुअन्नी-चवन्नीकी बरसात' कहते थे। यह दृश्य अैसा लगता है मानो आकाशसे चाँदीकी दुअन्नियाँ-चवन्नियाँ गिर-गिर कर अुछल और चमक रही हो। अिसी दृश्यको देखकर हमें अुपरोक्त नाम

सूना था। वर्षा कुछ कम होती कि जीवनकी अुपमाके योग्य बुदबुदे अुत्पन्न होते और निरुद्देश्य अिधर-अुधर पानीमें फिरते-फिरते अेक अेक कर क्रमशः फूट जाते। किन्तु अुनके लिअे कोअी विलाप नही करता। मनुष्य और बुदबुदोंमें अितना भेद तो है ही!

मेघराजने बहुत दिनों तक अपनी कृपा-वृष्टि बन्द कर दी। पानी सूखने लगा। पोखरोके तलोमे नील जम गअी और अिसी नीलके अूपर मोती जैसे नन्हे-नन्हे बुदबुदे जमने लगे। झम्मटमल और मेरे बीच विवाद प्रारंभ हुआ। अिस नीलने पानीमे सन्निहित वायुको भोजनके तौर पर खींचकर ये बुदबुदे बनाये है, या नीलके श्वासोच्छ्वाससे निकली हुअी वायुसे ये अुत्पन्न हुअे हैं? अितना सत्य है कि ये बुदबुदे अितने सूक्ष्म थे कि पोखरेके तलेको छोड पानी चीरकर अूपर नही आ पाते थे। वही तलेमें ही बैठ जाते। अन्तमे जब सारा पोखरा सूख गया, तो अिन बुदबुदोंमें निवास करनेवाला बुद्बुदाकाश महाकाशमे लीन हो गया और अुन दोनोंके भेदका चिन्ह तक शेष न रहा।

* * *

'लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितु कः समर्थः?' भाग्य-लेखोको कौन टाल सकता है? आँगनमें अुगी हुअी घासको चरनेवाले ढोर-बकरे जेलमे नहीं थे, किन्तु अिससे अन्दरका घास सुरक्षित थोड़े ही था। अेक दिन कैदियोकी अेक टुकड़ी हंसिये लेकर आअी और अुसने घण्टेभरमे ही सारे खेतको नक्षत्र (सफाचट) कर दिया। जमीनके अुघडते ही अुसमें कैदियो द्वारा छिपाये हुअे लहसुन, प्याज, मूली और कुछ बीड़ियाँ अित्यादि प्रकट हुअे। हंसियो पर निगरानी रखनेवाले सिपाहीने पहले तो अुन सबको जब्त कर लिया, किन्तु तुरन्त ही अुसे दयाधर्म (?) सूझा और अुसने वे सब चीजें कैदियोको खैरात कर दी। फिर आअी परशुधारि कैदियोंकी टोली। जिस प्रकारसे परशुरामने कार्तवीर्यके सहस्र बाहुओका छेदन किया था, अुसी प्रकार अिन्होने भी तमाम नीमोकी अनेकानेक शाखाओको काट डाला। हमारे लिअे दातुनोका पर्व आया और गिलहरियोके

लिअे खेलने-कूदनेका अुतना ही स्थान कम हो गया। मेरे अरीठे पर नीमकी अेक बड़ी शाखा फैली हुअी थी। जी-हुजूरीमें जैसे मनुष्यका विकास नहीं हो पाता, वैसे ही अिस नीमके नीचे मेरे अरीठेका विकास रुक गया था। अिस सुन्दर अवसरको देखकर मैंने अपने अरीठका पक्ष लिया और अुसके हितके लिअे नीमकी वह शाखा कटवा डाली। बस फिर, मुक्त वातावरणकी स्वतंत्रता प्राप्त करते ही अरीठा देखते-देखते बढ़ चला। स्वतंत्रताके विना विकास नहीं होता, यह सार्वभौम नियम है।

मेरी कोठरीमें बहुत अूँचाअी पर अेक छेद था। अुस पर अेक चिडियाकी दृष्टि पडी। अुसने तुरन्त ही वहाँ अपना घोसला बना लिया। गिलहरियोंने मेरे अुदयपुरी अूनी आसनके टुकड़े तो कर ही डाले थे। अुनमें से मनचाहे टुकड़े चुनचुनकर चिड़ियाने अपना महल सजा लिया। अिस तरह छ बजे कोठरीमें बन्द हो जानेके बाद भी सह-वासके लिअे मुझे मित्र मिल गया। चिडिया सदा ही प्रसन्न रहनेवाला प्राणी है। दिनभर बातें करते वह थकती ही नहीं और स्त्रियोंकी भांति अेक ही बातको बार-बार दुहराते हुअे अूबती नहीं। मेरी कोठरीमें अुसके लिअे रोटीके टुकडे तो रखे ही जाते थे। अतअेव अुसे अन्न और आश्रयकी पूरी सुविधा मिल गअी। परिंदोंको वस्त्रकी आवश्यकता तो होती ही नहीं। घोसलेमें यथासमय छोटे-छोटे बच्चे 'चूं.. चू' करने लगे। चिडिया धरती परसे रोटीके टुकड़े चुग लेती, चोंचसे दबाकर अुन्हें नरम करती और अूपर ले जाकर बच्चोंको खिलाती। मेरी कोठरीमें रहनेवाली गिलहरीसे चिड़ियाका यह सहवास सहन नहीं होता। किन्तु वह करती क्या? दीवारके छेद तक पहुँच सकना असभव था; वरना वह चिड़ियाके अंडोंको ही चकनाचूर कर डालती। [यद्यपि यह बात मैं छोटे चक्कर नम्बर ४ को छोड़नेके बाद ही जान सका था कि गिलहरियाँ भी अंडे खाती हैं।]

जेलके कमरोंकी अशुद्ध हवा, घी-दूधरहित भोजन और कच्चा खाना —- अिन तीनोंके संयोगसे मैं क्षीण होने लगा। मैंने बेंतकी कुर्सियाँ बनाना छोड़ दिया और दर्जीका काम माँग लिया। मेरा वजन बहुत घट गया। क्षय रोगकी यह पूर्व तैयारी देखकर जेलके डॉक्टरने मुझे स्थानान्तरित करनेकी जरूरत महसूस की। मुझे वापस युरोपियन-वार्डमें भेज देनेका निश्चय हो गया। अतः मैंने भी अपने पाँच महीनेंके मानवी तथा पक्षी स्नेहियोंसे दुःखित हृदयसे विदा ली।

७

युरोपियन-वार्डके अनेक नाम हैं। अिस जेलमें क्वचित् ही युरोपियनोंको रखा जाता है। अतअेव अिसका अुपरोक्त सरकारी नाम तो नामके लिअे ही है। नये आनेवाले सब कैदियोंको यहाँ रखा जाता है, अिसलिअे अिसे 'क्वारन्टीन' कहते हैं। अिसमें अेक ही पंक्तिमें क्रमबद्ध सात कोठरियाँ बनी होनेसे अिसको 'सातखोली' भी कहते हैं। जेलकी दूसरी कोठरियोंसे यहाँकी कोठरियाँ आकारमें कुछ बड़ी हैं और फर्श तथा आसपासके चबूतरे चूनेके होनेके कारण स्वच्छता अच्छी रहती है। मैं पहले अिस स्थानमें रह गया था, अतः नवीनता जैसा कुछ था नहीं। गत पाँच महीनोंमें भाअी अिन्दुलाल तथा दयालजीभाअी भी यहाँ रह गये थे। और जब मैं रहनेके लिअे आया, तब यहाँ रूपाल स्टेटके अेक खानदानी ठाकुर तख्तसिंह नामक जमींदार रहते थे। अिन भाअीको जेलमें बीडी पीनेकी अिजाजत थी और अुन बीड़ियोंके जले हुअे टुकड़े अिधर-अुधर फेंक देनेकी आदत थी! अिस कारणसे सारे जेलमें अुनकी प्रतिष्ठा सबसे अधिक थी।

मुझे अब खुली हवामें सोनेकी आज्ञा मिल गअी। मेरे साथ शामलभाअी आये, अुन्हें भी खुलेमें रखा गया। कारण, अुनके बिना मेरा काम चलना असंभव था। सातखोलीमें पहली सुविधा यह हो गअी कि

रात दिन जेलका बड़ा भारी घण्टा अच्छी तरहसे सुनाअी देता। अतः समयका ध्यान रहता था। जरा भी जी अुकताता कि घण्टा बजने की राह देखने लगते। और, दूसरा जो परिवर्तन हुआ वह रेलकी आवाजका था। पहली बार जब मैं सातखोलीमें रहा था, तब ट्रेनकी सीटीकी ओर मेरा ध्यान नही गया था। किन्तु छ महीनेके निवासनके बाद रेलकी सीटी भी आकर्षक लगने लगी।

हिमालयकी २३०० मीलकी पैदल यात्राके बाद जब मैंने पहली बार रेलका नाद सुना, तब वह अत्यन्त नीरस, कर्कश और काव्य-विहीन लगा था। किन्तु आज तो रेलकी सीटीमें कुछ अपूर्व काव्य मिल गया। मनमें यही हुआ मानो ट्रेन जीवित है और दूर-दूरकी यात्रा करनेके लिअे निमन्त्रण दे रही है। साबरमती स्टेशनके अिंजिनवाले भी रसिक होने चाहियें। अिंजिनमें से वे अैसे लम्बे-लम्बे तथा विषादमय आरोह-अवरोह-वाले स्वर निकालते कि शान्त, स्वस्थ चित्त भी अस्वस्थ हो जाता। आजके कवि बैलगाड़ी अथवा अूँटके सफरको रोमांटिक (Romantic) कहते हैं और रेलकी यात्राको शुष्क गद्य जैसी बतलाते हैं। जब रेलकी यात्रा नअी थी, तब अुसमें कुतूहलका काव्य था। भविष्यके सुधारवादी युगमें जब वह पुरानी हो जायगी, तब भी कवियोंको अुसमें पुरातनताका काव्य मिलेगा।

जेलके सिपाहियोंने अभी अभी ही जेलके बाहर महादेवजीका अेक मंदिर बनवाया है। अुसका चमकता हुआ शिखर जेलमें से कुछ कुछ दिखाअी देता है। रातके समय अनेको बार अिस मंदिरमें भजन होते। जेलके शुष्क तथा अनात्मवादी वातावरणमें मधुर संगीत भी असंगत-सा लगता था। जहाँ संगीत होता है वहाँ जेल-जीवन असत्य-सा भासित होता ही है। कैदियोंको पकड़नेवाले सिपाही, अुनको जेलमें भेजनेवाले न्यायाधीश, अुनके लिअे कानून बनानेवाले धाराशास्त्री, अुनकी निगरानी रखनेवाले जेलके अधिकारी और वार्डर, अिन सबका विचार

करने बैठें, तो कहीं भी संगीतका चिन्ह तक नही मिलता। सभी जगह निरी कर्कशता !

अेक दिन मंदिरमें बहुतसे लड़के या लडकियाँ रातके बारह-अेक बजे तक गाते रहे होंगे। स्वर कोमल होने पर भी तीव्र वेधक था। अतः जब जब पवनकी लहर हमारी दिशाकी ओर आकर अेकाध मधुर आलाप सुना जाती, तब गन्धर्व-गायन जैसा आनन्द आता और अुत्सुकता बढ जाती। किन्तु गायनकी अपेक्षा तबलेकी थप्पीमें ही अधिक अुन्मादकारी शक्ति होती है। तालके जमने पर चित्तवृत्तिका अेक प्रकारसे लय होता है, बाह्य सृष्टिका ध्यान नही रहता। तबलेकी थप्पीके साथ ही साथ हृदयकी धड़कन चलने लगती है और मन अेक प्रकारका नृत्य प्रारंभ कर देता है। कभी-कभी रातमें स्टेशनकी ओरसे डुगडुगीकी तालके साथ- ही ओझाके घूमनेका शब्द सुनाओी देता, किन्तु वह तनिक भी आकर्षक न लगता। घूमना तो पागलपनकी ही निशानी है। खुद घूमनेवालेको ही अुसमें मजा नही आता, तो फिर सुननेवालेको तो आ ही कैसे सकता है ?

कओी बार रास्ते परसे होकर चिल्लाती जानेवाली मोटरोंका शब्द सुनाओी देता, साअिकलकी किंकिणी कानमें पडती और अिस बातकी याद दिलाती थी कि बाहरकी दुनिया व्यर्थमें कितनी दौडधूप कर रही है ! अिधर हम अन्दर बैठे निरर्थक समय व्यतीत कर रहे थे। बाहरकी प्रयोजनहीन गति तथा अन्दरकी अर्थहीन स्थिति — दोनों ही आजके युगकी निरर्थकताका परिचय दे रही थीं।

* * *

पिछले आँगनकी दीवार पर कओी बार दयाभाजन पंडुकका जोड़ा आकर बैठता था। कहते हैं कि अन्य समस्त पक्षियोंमें पंडुक सबसे अधिक निष्पाप तथा भोला पक्षी है। दिनभर 'प्रभू – तु, प्रभू – तु' रटता रहता है। महाराष्ट्रमें पंडुकको 'कवडा' कहते हैं। यहाँ (गुजरात) के तथा वहाँ (महाराष्ट्र) के पंडुकोंमें नामभेदके साथ ही

साथ शब्दभेद भी है। महाराष्ट्रके कवड़ा पक्षी 'प्रभू–तु' नहीं बोलते। अुनकी शब्द-ध्वनि 'कुड्डुर्र कुड्डुर्र कुड्डुर्र' होती है। जिस परसे वहाँके लोगोने अेक लोकवार्ता गढ ली है: कवड़ा पहले मनुष्य था। अुसके घरमें अुसकी स्त्री तथा सीता नामकी अेक बहिन थी। अुसने अपनी बहिन तथा स्त्रीको अेक-अेक सेर धान देकर कहा कि मुझे जिसका चिवडा बना दो। स्त्रीने धानको कूटकर ज्योंका त्यों पतिके सामने रख दिया। स्नेहमयी बहिनने धानको कूटकर, भूसीको फटककर और चावलोंको अच्छी तरहसे बीनकर भाओीके लिअे चिवडा तैयार किया। भाओीने देखा कि स्त्रीका चिवड़ा पूरा सेरभर है और बहिनका तो बहुत घटता है। अुसने अपने मनमें यह निश्चय कर लिया कि बहिन पक्की स्वार्थी तथा पेटू है। स्त्री तो आखिर स्त्री ही ठहरी। अुने जितनी हमदर्दी पतिसे होती है, अुतनी किसी दूसरेको थोड़े ही हो सकती है। भाओी क्रोधसे आगबबूला हो अुठा। अुसने सेरका बाट अुठाकर बहिनके कपालमें दे मारा। बहिन बेचारी वहीं छटपटाकर मर गओी! कुछ देरके बाद भाओी स्त्रीके द्वारा तैयार किया हुआ चिवडा खाने बैठा। चिवड़ेको मुहमें डाला तो सही, किन्तु भूसी समेत चिवडा कैसे खाया जाता? 'थू-थू' करके सब थूक दिया। फिर बहिनके द्वारा तैयार किया गया चिवडा खाने लगा। अहा, कैसी अिसकी मधुरता! कैसी अिसकी मिठास! बहिनके स्नेहकी बराबरी करनेवाली दुनियामें अन्य कौनसी वस्तु है? भाओीने अेक ही ग्रास खाया था कि पश्चात्तापसे बहिनके शवके पास गिरकर प्राण त्याग दिये। तभीसे अुसे कवड़ाका जन्म मिला, और आज तक अुसकी पश्चात्ताप भरी वाणी जारी है—"अुठ सीते, कवडा पोर पोर। पोहे गोड़ गोड़।" (सीते, क्षमा कर और अुठ! कवडाने नादानी की। सचमुच तेरा ही चिवड़ा मीठा था, मीठा था!)

कैसा करुण काव्य! और कैसा जन-सहज बोध! शामको प्रार्थनाके पश्चात् शामलभाओीने पंडुकका ही गीत गाया। मैंने अुनसे

अुपरोक्त बात कही और पंडुककी ही बातें करते हुअे हम सो गये। नजीरके अुन काव्यका बारम्बार स्मरण आया, किन्तु वह पूरा याद नहीं था :—

"सांज सवेरा चिड़ियाँ मिलकर
चूँ चूँ चूँ चूँ करती हैं।
चूँ चूँ चूँ चूँ चूँ चूँ क्या? सब
वेचूँ वेचूँ कहती हैं।"

पशु-पक्षियों तथा कुदरतसे आध्यात्मिक शिक्षा ढूँढने तथा ग्रहण करनेके भिन्न-भिन्न प्रकार सभी कवियोंमें होते हैं।

सातखोलीकी बगलमें ही नया कारखाना था। वहाँ भी नीमके तथा दूसरे वृक्ष बहुत बड़े बड़े थे। वहाँ सुबह शाम पक्षियोंकी जमात आकर बैठती और समय होते ही, बिना आलस्य किये नमाज पढ़ती। छोटे चक्करकी अपेक्षा यहाँ पक्षी अधिक थे। और मुझे अैसा लगा कि यहाँके पक्षी सुबह कुछ जल्दी भी अुठते थे। दिनभर गिलहरियाँ, कौवे, चील, पंडुक, कावरे आदि विविध पक्षी अेकत्रित होते और कोलाहल मचाते। अेक दिन अेक कौवेने छोटेसे कोशिया (पक्षी विशेष) का कुछ अपराध किया होगा। कोशिया अिससे अितना चिढ़ गया कि किसी भी तरह कौवेका पीछा ही नही छोड़ता। कौवा अेक पेड़से दूसरे पर अुडता-अुड़ता कअी स्थानों पर भटका, किन्तु कोशियाने तो जापानी सिपाहियोंकी भाँति अुसका पीछा छोड़ा ही नहीं। यदि अेक दूसरा कौवा सहायता देनेके लिअे नही आया होता, तो अुस बेचारे कौवेकी क्या दशा होती, यह कहना कठिन है।

* * *

चील और कौवेका संग्राम तो आदिकालसे चला ही आ रहा है। स्पेनिश आर्मेडा अथवा मुगल फौजकी भाँति चील धीरे-धीरे चलती है। तुरन्त दिशा बदल देना अुसे आता ही नहीं; जब कि कौवा तो मराठा

बारगीरोकी भाँति स्वैरगतिसे दौड सकता है और चाहे जैसी परिस्थितिमें भी अपना बचाव कर सकता है। किन्तु अकेला कौवा कभी भी चील पर आक्रमण नही करता; दो कौवे हो तो ही अेक अेक ओरसे और दूसरा दूसरी ओरसे चीलका पीछा करता है। चील अेकको मारने दौडती है कि दूसरा झपटकर अुसे चोच मारता है और जब वह दूसरेको मारने दौड़ती है तब पहला झपटकर अुसे चोच मारता है। अिससे बचनेके लिअे चीलके पास अेक ही अुपाय होता है। वह गोल गोल फिरती-फिरती आकाशमें ज्यादा-ज्यादा अूँची चढती जाती है और फिर कौवे वहाँ तक जानेका साहस नहीं करते।

बात यह हुअी कि अेक बार स्टेशनकी ओर मांसके टुकड़े अथवा कोअी सड़ा हुआ जानवर पड़ा होगा। अत' बीस-पच्चीस चीलें और सौ दो सौ कौवे वहाँ अिकट्ठे हुअे और देखते ही देखते आकाशमें ट्रोजन युद्ध जैसा महायुद्ध शुरू हो गया। अिस युद्धमें अेकिलीज कौन बना, पेरिस कौन हुआ, नेस्टर जैसा सयानपन किसने बघारा और यूलिसिस कौन बना? —— यदि मैं यह सब जान पाता तो अवश्य ही अेक महाकाव्यकी रचना करने जैसा मौका था। चोच और पजोंके अतिरिक्त कौवोंके पास अेक शस्त्र और अधिक था; चीलोंके पास अुसका अभाव होनेसे अुनका पक्ष कमजोर लगता। वह शस्त्र था —— महान् कोलाहल! चीलें चुपचाप 'फर फर फर' करती रहती। अिधर देखतीं, अुधर देखती, अूपर देखती, नीचे देखती। किन्तु कौवे तो सभी अेक साथ मिलकर सिविल सर्विसके नौकरोंकी भाँति 'कॉव-कॉव-कॉव' चिल्लाने लगते और अपनी चिल्लाहटके आगे दूसरा कुछ सुनने ही नही देते! अिस महायुद्धमें हमने देखा कि चीलोंमे भी अेकता होती है, और अुनका धीरज सहजमें ही छूट जाय अैसा नही होता। ज्यो ही अेक चीलको बहुतसे कौवे मिलकर तग करने लगते, त्यो ही चार-पाँच चीलें अेक बडीभारी क्रूजर या ड्रेडनॉटकी भाँति झटसे अुसकी सहायताको दौडती और फिर वहाँ अेक भी कौवा टिक नही पाता। युद्धके समय चीलोंकी गति प्रमाणबद्ध

वर्तुलाकार रहती है, जिससे वे बड़ी ही सुन्दर लगती है। हमारा यह दृढ़ विश्वास हो गया कि पक्ष चाहे जिसका सच्चा हो, किन्तु चीलें युद्धमें आर्योंकी भांति लड़ती है और कौवे तो सर्वथा अनार्य है। चाहे जैसे चक्कर काटते है, चाहे जब पीठ दिखाकर भाग जाते है। अुनको चढ़ते भी देर नही लगती और अुतरते भी देर नही लगती। लगभग दो घण्टे तक यह आकाशयुद्ध चला। हमारी अुत्कण्ठा बढी कि दिन पहले समाप्त होगा या युद्ध? यद्यपि अैसी चिन्ता करनेका कोअी कारण नही था। जिस युद्धमें कोअी अर्जुन और जयद्रथ थोड़े ही थे। अन्तमें चीलोंने अन्तिम नीति ग्रहण की। गोलगोल फिरते-फिरते अुन्होंने अपनी अितनी 'अुन्नति' कर ली कि क्षुद्र कौवे वहाँ तक पहुँच ही न सके। कौवोंने रणगीतका स्वर बदलकर विजयगीत गाना प्रारंभ किया — 'चीले भाग गअीं! हम जीत गये! हम जीत गये!' यद्यपि चीलोंके मनमें यह दृढ़ विश्वास था कि 'नैतिक' विजय तो कौओंकी नही लेकिन अुन्हींकी हुअी है।

हम सब यह जानते है कि महायुद्ध समाप्त हो जाने पर भी कुछ समय तक तो अुसकी ध्वनि गूँजती ही रहती है। दूसरे दिन दो-चार चीलें कुछ खानेकी चीजें लेकर जेलकी दीवार पर बैठी थी। कौवोंको अिसका पता चल गया। अुन्होंने दो-दो तीन-तीन कौवोंके बीचमें अेक-अेक चीलको बाँट लिया। अेक कौवा दाहिनी ओर बैठ जाता, दूसरा बाअी ओर, और तीसरा कौवा कुछ पीछेकी ओर चीलके सिर पर मँडराता रहता। चील बैठी-बैठी तीनोंको धमकी देती जाती और पाँवमें पकड़ा हुआ खाद्यका टुकड़ा खाती जाती। अेक चील भूलसे या क्रोधके आवेशमें भान भूलकर, कौवे पर आक्रमण करनेके लिअे कुछ अुड़ी कि दूसरी ओर ताक लगाये बैठे कौवेने चटपट अुसके पैरसे टुकड़ा छीन लिया और तुरन्त ही वहाँसे भाग खड़ा हुआ। मैं यह देखनेको आतुर था कि युद्धमें अिस प्रकार प्राप्त किये हुअे लूटके मालको तीनो युद्ध करनेवाले कौवे आपसमें बाँट लेते है या नहीं?

किन्तु कौवे जेलकी दीवारके पीछे वृक्ष पर अुतरे, अिसलिअे मेरा यह महत्वपूर्ण अनुसन्धान वही रुक गया। दूसरी चील अधिक योगयुक्त थी। अुसका समग्र ध्यान कौवोको दण्ड देनेकी अपेक्षा अपना टुकडा बचानेकी ओर था। वह अुसी नीति पर स्थिर रही। कौवे परिश्रम करते रहे और अप्रमत्त चील अपने मांसपिडमे से अेकके बाद अेक कौर निगलती रही। अन्तमे जब कुछ भी शेष नही रहा, तब कौवोको धर्मबुद्धि सूझी और 'काचो पारो खावो अंन, तेवुं छे परायुं धंन'—परायेका धन कच्चा पारा खानेके समान है—यो कहते कहते साधु जैसी मुद्रा धारण करके वे वहाँसे चले गये।

* * *

मेरी मान्यता थी कि कोयल अपने अंडे कौवोसे सेवाती है, यह कोरी कवि-कल्पना होगी। शाकुन्तलमें जब पढ़ा 'अन्यैर्द्विजैः परभृत. खलु पोषयन्ति', तब मैंने यही माना था कि कालिदासने लोक-कथाका ही अुपयोग किया है; किन्तु जेलमे मैंने देखा कि कौवे सचमुच ही कोयलके बच्चोको पालते है। वे जहाँ तहाँसे खानेका लाकर बच्चोको खिलाते और अुन्हें प्यार करते। किन्तु कुछ ही दिनोमें संस्कृतिका झगड़ा प्रारंभ हो गया। कौवोने सोचा कि बच्चोको केवल खिला देना ही पर्याप्त नही है। हमारी सुधरी हुअी शिक्षा भी अुन्हें देनी चाहिये। अतः खास समय निकालकर घोसले पर बैठकर कौवा बच्चोको सिखाता—'बोलो का-का-का।' किन्तु कोयलका वह कृतघ्न बच्चा अुत्तर देता—'कूअुव्, कूअुव्, कूअुव्।' कौवा चिढ़कर चोंच मारता और फिर सिखाना शुरू करता—'का-का-का।' किन्तु क्या कोयल अिस तरहसे अपने संस्कृतिके अभिमानको छोड सकती है? अुसने तो अपने 'कूअुव्. . . कूअुव्. . .' की ही रट लगाअी। कौवेका धैर्य छूटा, लेकिन तब तक तो कोयलका बच्चा अपने पाँव पर खड़ा होने लगा था यानी अुड़ने लगा था। कौवेका सारा श्रम व्यर्थ गया। मुझे लगता है कि भारतीय होनेके नाते कौवेने निष्काम कर्म करनेका

समाधान तो अवश्य ही पाया होगा — 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।'

यदि अैसा न होता तो कौवा प्रतिवर्ष यही प्रयोग फिर क्यों करता? शामलभाअी कहने लगे कि 'यदि अिन कोयलके बच्चोके जितनी वुद्धि भी हमारे अग्रेजी पढे-लिखे लोगोंसे होती, तो वे घरमे अंग्रेजी नही बोलते।'

* * *

चौमासेमें पानी कम बरसनेसे जो तेज गरमी पड़ने लगी थी, वह अब कम होने लगी। दशहरे-दीवालीके दिन आये। जेलमे दशहरे-दीवालीका कोअी अर्थ ही नही है। साल भर अेक ही प्रकारका भोजन मिलता है, और छुट्टी केवल रविवारकी मिलती है, सो भी नाममात्रकी ही। यदि सुपरिण्टेंडेंट युरोपियन हो, तो क्रिसमसके दिन कैदियोंको सागके अतिरिक्त अचार भी मिले। छुट्टीके दिन भी कैदियोसे काम तो लिया ही जाता है। अिसके सिवाय नअी असुविधा यह होती है कि सिपाही अपनी छुट्टीका लाभ अुठानेके लिअे दोपहरमें ही कैदियोको कोठरीमें बन्द करके सारी जेल रातके पहरेवालोके सुपुर्द करके चल देते है। बेचारे कैदियोको छुट्टीके दिन यो अधिक सजा मिलती है और प्रतिदिन सायंकालीन लाल-पीले-सुनहले बादलोको देखनेका जो आनन्द अुन्हें और दिनो मिलता है, वह भी त्यौहारके दिन नही मिलता।

बेचारे कैदी कोठरीके अेकान्तवाससे डरते है, अकुलाते है। कुछको जोर-जोरसे रोते भी देखा है। जो अेकान्त मुझे अत्यन्त प्रिय लगता, वही अुन्हें भारी दण्डरूप लगता था। किन्तु अिस सम्बन्धमे मुझ जैसोकी सख्या तो दुनियामें सदैव कम ही रहेगी। मनुष्यकी वृत्ति अन्तर्मुख हो, तब ही अुसे अेकान्त अनुकूल हो सकता है। फिर भी मैंने यह देखा कि जेलमे अेक ही परिस्थितिमें अुन्ही दीवारोके बीच लम्बे समय तक रहनेसे मेरे जैसो पर भी अुसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। यदि कैदियोको जेलके अन्दर ही बारी-बारीसे अेक-अेक घण्टेकी

घूमने-फिरनेकी सुविधा दे दी जाय, तो अुसका बड़ा अच्छा नैतिक प्रभाव पड़ सकता है।

*   *   *

दशहरेके दिन अेक नीलकण्ठ हमारे यहाँ अुड़ता-अुड़ता आया। बचपनसे ही नीलकण्ठके विषयमें गूढ़ काव्य सुना था। नीलकण्ठ यानी अत्यन्त कल्याणकारी पक्षी; जहाँ वह जाता है वहाँ शुभ ही होता है। जिस दिन नीलकण्ठके दर्शन होते हैं, अुस दिन अच्छा भोजन खानेको मिलता है — ये सभी मान्यतायें अुसके दर्शनके साथ ही साथ मनमें ताजी होती हैं। अच्छा अच्छा खानेकी न मेरी अिच्छा ही थी और न आशा ही। यह तो कैसे कहूं कि मैंने स्वादको जीत लिया है, किन्तु अिसके प्रति मैं बहुत बेपरवाह अवश्य हूँ। नीलकण्ठको देखकर मैं दिनभर बड़ा प्रसन्न रहा और नीलकण्ठ भी किसी राजदूतकी भाँति नम्र स्वाभिमानसे अिस तरह अिधर-अुधर अुड रहा था, मानो अुसे अपनी पोशाकके महत्वका भली-भाँति ज्ञान हो। कअी बार हमारी ओर दृष्टिपात करता, किन्तु अितनी अुपेक्षासे मानो यह कहना चाहता हो कि तुम्हारे जैसे पंखविहीन क्षुद्र मानव मेरे अेक दृष्टिपातके योग्य भी नहीं हैं। कुछ देर तक वे महाशय अिधर-अुधर अुड़ते रहे और फिर मानो सहसा ही किसी भूले हुअे महत्त्वपूर्ण कार्यका स्मरण हो आया हो, अिस तरहसे अचानक शीघ्रतापूर्वक वहाँसे अुड़ गये।

हमारे नये वर्षके दिन सुपरिण्टेडेंटने अुसी नीलकण्ठको देखा, अतअेव मुझसे आकर पूछने लगा — 'मिस्टर कालेलकर! आज मैंने नीलकण्ठको देखा है। अिसका माहात्म्य क्या है?' मैंने कहा — 'आपका सारा वर्ष आनन्दसे बीतेगा। आप कमसे कम नीलकण्ठका शिकार न कीजियेगा।' सुपरिण्टेडेंटने कहा — 'पूरा वर्ष तो न मालूम कैसा जायगा? किन्तु आज तो प्रातःकाल ही नये कारखानेमें कैदी और मुकादम आपसमें लड पडे। यह भारी अपशकुन जरूर हो गया!'

*   *   *

मैं बीमार था अुस अरसेमें मुझे दूध दिया जाता था। और यह तो सनातन सिद्धान्त है ही कि जहाँ दूध होता है वहाँ बिल्ली अवश्य होती है। अिसलिअे हीराने मेरे साथ मित्रता कर ली। वह जहाँ भी होती वहींसे आ जाती और पैरोंसे नाक घिसती व अूँची पूँछ करके 'म्याअूँ' का प्रतिष्ठित अेवं सज्जनोचित शब्द निकालती। बचपनमें हम वैश्वदेव करनेके पश्चात् ही भोजन करने बैठते थे। अिसलिअे बिल्लीको दूध पिलाये बिना स्वयं दूध पी लेनेकी अिच्छा नहीं होती थी। किन्तु बिल्लीके लिअे पात्र कहाँसे लाता? सद्भाग्यसे हमारे चबूतरेके किनारे पर अेक पोरबन्दरी पत्थरमें छोटीसी तसली जैसा अेक गड्ढा था। अुसीमें मैं अुसे प्रतिदिन दूध पिलाता।

किसी दिन मैं 'A Tale of Two Cities' के पढनेमें तन्मय रहता और बिल्लीको समय पर दूध नहीं मिलता, तब धीरे-धीरे अेक-अेक पैर बढाती हुअी वह स्लेटसे ढँके हुअे मेरे टमलरकी ओर जाती, दूरसे अुसे सूँघती और तुरन्त ही पीछेकी ओर हट जाती, मानो सहसा अुसे यह याद आ गया हो कि वह कोअी भारी अपराध करने जा रही हो। यदि बिल्ली संस्कृत जानती होती, तो कह अुठती —'अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।' किन्तु वह तो बिल्ली ही ठहरी। अुसकी सारी संस्कृति अेक अिस 'म्याअूँ' अुद्गारमें ही समाप्त हो जाती। वापस बैठकर म्याअूँ-म्याअूँ करती हुअी मेरी ओर देखती और शांत मुखमुद्रा बनाकर धीरज धारण करती। पर रहा नहीं जाता अिसलिअे फिर आगे जाती, दूधको सूँघती और ठिठक कर वापस पीछेकी ओर हट जाती। अिस प्रकार अुसने मुझ पर अच्छा प्रभाव डाला। मैं अुसे नियमित दूध पिलाता। किसी दिन अुसे प्रतिदिनकी अपेक्षा दुगुना दूध पिलाता। किन्तु आखिर बिल्ली तो बिल्ली ही ठहरी। अेक दिन कहींसे वह अपने अेक दोस्तको ले आअी। हीरा तो हमसे डरती ही नहीं थी, अिसलिअे वह सीधी आकर मेरे बिछौनेके पास बैठ गअी और अुसका दोस्त आँख बचाकर

आगे बढा। अुसने टमलरको अुलट दिया। अुसकी दावत प्रारंभ होनेके पहले ही शामलभाअीकी दृष्टि अुधर पडी और अुन्होने अुसे बाहर भगा दिया। हीराकी मुद्रा भी चोर जैसी हो गअी और वह भी बिना भगाये ही वहाँसे नौ दो ग्यारह हो गअी। लगातार दो-तीन दिन तक अिन दोनोने अुत्पात मचाया। दीवारके निचले छेदमे से पहले हीरा अकेली आती और अनुकूल परिस्थिति देखकर वह अपने साथीको भी बाहर जाकर बुला लाती। अितना सच है कि वह स्वय प्रत्यक्ष चोरीमे भाग नही लेती थी, किन्तु अुसमे अुसकी सपूर्ण सहानुभूति थी। हीराके अपराधका विश्वास हो जाने पर मैंने अुसे दो दिन तक दूध नही पिलाया। दूध पर कड़ी निगरानी रखी। हीरा समझ गअी। अुसने अपने दोस्तकी मित्रता छोड दी। और आधे-आधे घण्टे तक हमारे पास बैठकर पश्चात्ताप करने लगी। अुसका दूध फिरसे जारी हुआ सो ठेठ मेरे जेलमुक्त हो जाने तक जारी ही रहा।

किसी दिन — और खास करके जेलमें मटन (मासाहार) के दिन — अच्छी दावत मिल जानेसे हीरा दूध पीनेके लिअे आती ही नही, किन्तु मै अुसका भाग दूसरे दिन तक सुरक्षित रखता। अेक दिन शामलभाअी अपने कौवोको रोटीके टुकडे खिला रहे थे कि हीरा कहीसे वहाँ आ गअी। कौवोको अिस अतिथिका आगमन अच्छा नही लगा। वे सब धरती पर पंक्तिबद्ध बैठ गये और सो भी अुस स्थान पर, जहाँ कि दीवारकी छाया समाप्त होकर धूप शुरू होती थी। अुन्होने विविध स्वरोमें परन्तु अेकमनसे 'का-का-का' का शोर मचाया। बिल्लीने पहले तो अिस कोलाहलकी परवाह नहीं की, किन्तु कुछ ही देरमें अकुलाकर अुसने दौड लगाअी और दीवारके छेदसे निकलकर आँगनके बाहर चली गअी। कौवे शात हुअे और फिर आरामसे बैठकर धूपमें निर्विघ्नतासे रोटीके टुकडे खाने लगे!

* * *

तीसवी अक्तूबरका दिन था। आकाश घने बादलोसे आच्छादित हो रहा था। आकाशमें अेक सुन्दर अिन्द्रधनुष तना। यो तो सभी अिन्द्र-धनुष सुन्दर होते है, सूर्यके ठीक सामने तननेसे अुन्हे दिशाकी अनुकूलता स्वतः मिल जाती है। सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेवाला मनुष्य देख सकता है कि आकाशमे हमेशा दो अिन्द्रधनुष अेक साथ दिखाअी पडते है —— अेक मुख्य तथा दूसरा अुसका प्रतिधनुष अुसीके पास, अुसी मध्यबिन्दुको मानते हुअे, परन्तु बिलकुल धुँधला-सा। अिस धुँधले प्रतिधनुषकी दूसरी विशेषता यह होती है कि मुख्य अिन्द्रधनुषके रग जिस क्रमसे दिखाअी देते है, अुससे अिसमें बिलकुल अुलटे क्रमसे दिखाअी देते है। नाटकमे जैसे नायिकाके साथ अुपनायिका होनेसे ही वह संपूर्ण माना जाता है, अुसी प्रकार अिस दूसरे प्रतिधनुषके कारण ही पहलेकी शोभा यक्ष-प्रासाद जैसी होती है। किन्तु अिन्द्रधनुपकी प्रमुख शोभा तो अुसके आसपास छाये हुअे बादलोंकी श्यामलतासे ही खिल अुठती है। आज बादलोंकी शोभा असाधारण थी। यद्यपि अुनका रग अधिक घना नही था, फिर भी अुस समयके प्रकाशके साथ अुनकी विलक्षणताका ठीक मेल बैठ गया था। और अिससे दोनों ही खिल अुठे थे। तीसवीं अक्तूबरको अितनेसे ही सतोष नही हुआ। पासके अेक मिलसे काला 'सीपिया' रगका धुआँ निकल रहा था। हवाके दबावसे अिस धुअेके गुब्बार अधिक फैलनेकी अपेक्षा लहरोंकी भाँति भीतर ही भीतर घुमड़ते, बल खाते हुअे, अिन्द्रधनुषको चीरकर आगे बढ़ रहे थे! बड़े प्रतिभाशाली चित्रकारको भी सरलतासे अैसा सुमेल नही सूझ सकता।

* * *

सच ही कबूतर बड़ा मूर्ख प्राणी है। कबूतरके अेक जोडेने हमारे बरामदेके (ओसारीके) छप्परमे मयारी और टेकेकी लकड़ियोके बीचोबीच तथा बीचके कोनेमे अपना घोसला बनानेका विचार किया। घोसला वहाँ ठहर ही नही सकता था। और फिर प्रतिदिन सुपरिण्टेडेंट आकर छप्परकी तलाशी लेता था कि वह ठीक है या नही। कबूतर सुबहसे

शाम तक नीमकी कुछ सूखी सीके अिकट्ठी करके जमाते, किन्तु वे जितने तिनके जमाते वे सबके सब नीचे आ गिरते और नीचे कचरा होता। मुझे लगा कि मैं अिन पतिपत्नीको अिस विफल प्रयत्नसे बचा लूँ। मैं दो-तीन दिन तक दिनभर अुनको अुडाता रहा। अुन्हें वहाँ आने ही नहीं देता। किन्तु अिन पठितमूर्ख कबूतरोंने अुत्तम-जनोंका लक्षण रट रखा था:

'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना.
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।'

अिन्होंने पुरुषार्थ (अथवा दाम्पत्यर्थ) जारी ही रखा। मैंने हार खाअी और अुनकी दृष्टिमें अुनका कार्य निर्विघ्न हुआ। फिर जब-जब भी मैं सुबह अुनके घोसलेके नीचे होकर अिधर-अुधर घूमता, तब वे अपनी प्राकृतिक लाल-लाल आँखोंसे मेरी ओर टकटकी लगाकर देखते और शायद मुझेको शाप देते। किन्तु अुनकी नेत्र-लालिमामें कुछ तपस्याका तेज तो था नहीं कि मैं जलकर भस्म हो जाता। अुनके भारसे ही कअी बार वह घोसला गिर पड़ता।

अन्तमें अिस घोसलेके आधा तैयार होनेके पहले ही मादाने अण्डा दिया और वे दोनो बारी-बारीसे अुसे सेने लगे। अेक दिन ज्यों ही नर अुड़ने लगा कि अुसके भारसे घोसला नीचे गिर पडा और अण्डा फूट गया। अितने पर भी अुस दम्पतीको अकल नहीं आअी। फिर अुसी जगह दूसरा घोसला बनाना शुरू किया। अिस बार घोसला पहलेकी अपेक्षा कुछ अच्छा बना, किन्तु पूरा बननेके पहले ही मादाने दूसरा अण्डा दिया। वह भी नीचे लुढ़क पडा। किन्तु अिस बार सीधा जमीन पर न गिरनेसे अुसके टुकडे नहीं हुअे। केवल अुस पर दरारें पड़ गअी। मैंने अुस घोसलेको फिरसे अूपर जमा दिया और वह अण्डा अुसमें रख दिया। अिस अण्डेमें से बच्चेके निकलनेकी तो संभावना थी ही नहीं; किन्तु मैंने सोचा कि अिन पगले दम्पतीको कुछ तो सांत्वना मिलेगी। अुन्होंने अेक दिन अण्डेको सेया, पर अुनके प्रारब्धमें तो

दुःख ही लिखा था। वह कैसे टलता? अेक गिलहरीको अुस फूटे अण्डेका पता चल गया। घोंसलेमें कबूतर नहीं हैं, अैसा अवसर देखकर अुसने अण्डा फोड़ खाया! अुसके दाँतोंकी आवाज सुनकर मैं अुसके पास गया। अभी तक मेरी मान्यता थी कि गिलहरी फलाहारी प्राणी है। अुसे अिस प्रकार अण्डा खाते देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और बचपनमें ही गिलहरीके प्रति जो काव्यमय प्रेम मेरे हृदयमें अुत्पन्न हो गया था, वह भी अेकदम कम हो गया। मेरी धारणा थी कि कबूतर और गिलहरी दोनों निरपराध अथवा काव्यकी दृष्टिसे निष्पाप प्राणी है। और जब मैंने अपने बच्चोंकी रक्षा करनेके हेतु गिलहरीको कौवे पर हमला करते देखा, तबसे कबूतरकी अपेक्षा भी मैंने अुसे अुच्च स्थान दे रखा था। यह सच है कि कबूतर दूसरोंको कष्ट नहीं पहुँचाता, किन्तु साथ ही साथ यह भी सच है कि अपना रक्षण करने जितनी भी बुद्धि या साहस अुसमें नहीं होता। मेरी मान्यता थी कि हिंसा करनेमें असमर्थ होने पर भी गिलहरी स्व-संरक्षण करनेमें समर्थ अेक आदर्श प्राणी है; किन्तु अिस कमबख्त गिलहरीने अुस अण्डेके साथ ही साथ मेरा यह काव्य भी तोड दिया।

८

फिर पतझड़ आया। अुड़ाअू मनुष्यके वैभवकी भाँति वृक्षोंके पत्ते त्वरित गतिसे झड़ने लगे। कैदी आँगनमें झाड़ू दे देकर थक जाते। प्रातःकाल सुपरिण्टेंडेंटके आनेके समय अेक भी पत्ता जमीन पर नहीं पड़ा रहना चाहिये। सुपरिण्टेंडेंटका समय नियत नहीं था। किसी दिन सुबह सात बजे ही आ जाता, किसी दिन नौ बजे तक भी न आता। मेरे बीमार होनेके कारण, किसी दिन मुझे देखनेके लिअे सब कामोंसे निबटकर बारह साड़े बारह बजे तक आता! अुस समय तक आँगन साफ ही रहना चाहिये, फिर भले चाहे जो हो। वृक्ष जेलके अवश्य थे, किन्तु वे सुपरिण्टेंडेंटका हुक्म कब मानने लगे? दिनभर पत्ते बरसाते ही रहते और पवन अुन्हें बिना किसी पक्षपातके, समान रूपसे आँगनमें फैला देता। बेचारे कैदियोंको बारबार आँगन बुहारना पड़ता। जेलमें यदि 'तार' की खानगी व्यवस्था न होती, तो कैदी बेचारे मर ही जाते। किन्तु बलिहारी है 'तार' की! प्रातःकालकी 'रोन' में देखभाल करनेके लिअे ज्यों ही सुपरिण्टेंडेंट रवाना होता कि आधे मिनटमें ही सारे जेलमें 'तार' द्वारा सूचना मिल जाती और फिर तो कैदी जल्दी-जल्दी आँगनको साफ कर डालते।

*　　　*　　　*

अेक दिन हमारे आँगनमें अेक पीला पतिंगा आया। साधारणतया पीले पतिंगे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं अैसा नहीं। किन्तु जेलमें अैसे पतिंगोंके दर्शन भी दुर्लभ होते हैं। और पतिंगा भी दिन भर हवामें तैरता रहा। हमारे आँगनमें मेरे बोये हुअे गलगोटेके पौधेके अतिरिक्त अन्य किसी भी फूलका पौधा न था। और गलगोटेमें पतिंगे, तितलियाँ या भ्रमरको आकर्षित करनेवाला कुछ नहीं होता। फिर भी मेरी समझमें नहीं

आया कि वह पतिंगा अेक दिन तक मेहमान कैसे रहा? अुसकी सरकारने १२४ (अ) या १५३ वी धाराके अन्तर्गत तो अुसे यहाँ नही भेजा होगा। अैसे अपराध तो मनुष्यको ही करने पडते हैं।

ज्यों-ज्यो पतझडकी ऋतुका प्रभाव बढ़ता गया, त्यो-त्यो पक्षी भी मौन होते गये। प्रातः और सायकालका कल्लोल बन्द हो जानेसे बहुत ही सूना-सूना लगता। नगरनिवासी प्रकृतिसे अितनी दूर जा पडते हैं कि अुन्हे यह भी ध्यान नही रहता कि आजकल कौनसी ऋतु चल रही है। आजके हमारे पढ़ेलिखे बिना मूँछके या मूछ कटाये हुअे छोकरोसे पूछिये कि किस महीनेमें कौनसे फूल खिलते हैं, जामुन किस महीनेमें लगते हैं, अिन्द्रधनुष किन किन महीनोमें दिखाअी देता है, आकाशसे ओले किन किन महीनोमें गिरते हैं? शहरके छोकरे केवल अितना ही जानते हैं कि आफिस फीसकी ऋतुके बाद छतरी लगानेकी ऋतु आती है और अुसके बाद गलेमें मफलर बाँधकर घूमनेकी ऋतु आती है! ग्रामीणोका जीवन ऋतुओके साथ पूर्णतया सम्बद्ध रहता है। ऋतुके अनुसार ही धार्मिक त्यौहार नियत रहते हैं। और पक्षियोका तो जीवन-मरण ही ऋतुकी प्रसन्नता-अप्रसन्नता पर निर्भर रहता है। शरद् ऋतुके आते ही पक्षी अपराधियोकी भाँति मौन हो गये। साहस करके वे अिधर-अुधर फिरते अवश्य थे, किन्तु अुनकी छाती और सिरसे यह स्पष्ट भासित होता था कि अुन्हे अपने कठिन दिनोके आगमनका भान हो गया है।

* * *

अब हमारा मनोरंजन करनेके लिअे दो नये प्राणी आने लगे। बडे-बडे सारसोका अेक जोडा रोज शामको सूर्यास्त होनेके बहुत देर बाद, साबरमतीके पटकी ओरसे राणीप या कालीकी दिशामें नियमपूर्वक जाता। लम्बी-लम्बी टाँगोको पेटसे सटाकर थोड़ी-थोडी देरमें 'चकर्र – चकर्र' शब्द करता हुआ यह जोड़ा समुद्रमें जाते हुअे

बडे जहाजकी भाँति हमारे सिर परसे होकर निकलता। किसी किसी दिन अुन्हें अितना विलम्ब हो जाता कि आकाशमें केवल अुनका शब्द ही सुनाओी पडता, किन्तु वे दिखाओी न देते। मुझे लगता है कि 'चकर्र-चकर्र' शब्दध्वनि परसे ही हमारे पूर्वजोंने अिनका नाम 'चकर्रवाक्' रख दिया होगा और बादमें संस्कृत मनुष्योंने अुनका संस्कारी नाम 'चक्रवाक्' कर दिया होगा। अधिक विलम्ब हो जाता तब अुनकी ध्वनिमें आकुलता जान पडती, किन्तु दूसरे दिन जल्दी ही घर पहुंचनेका निश्चय अुन्होंने किया हो अैसा नहीं दिखता था। बन्दर प्रतिदिन रातको यह निश्चय कर लेते हैं कि सुबह अुठते ही सबसे पहले सर्दीसे बचनेके लिअे घर बनायेंगे, अुसके बाद ही खाने-पीनेकी चिन्ता करेंगे। किन्तु न बन्दरोंने अभी तक घर बनाये और न सारस ही समय पर घर पहुँचे। जिसका जो स्वभाव पड जाता है, वह कहीं छूट सकता है? गीतामें यह व्यर्थ ही नहीं लिखा गया है—
'प्रकृतिं यान्ति भूतानि, निग्रहः किं करिष्यति?'

शामलभाओीके पाससे रोटीके टुकडे खा-खाकर कौवे खूब मोटे-ताजे हो गये थे। मैंने कहा कि चलो, अिन कौवोंको थोडी बहुत कसरत कराअूं। मैं रोटीके टुकडे लेकर आकाशमें खूब अूँचे अुछालने लगा। धारणा यह थी कि कौवे अुडकर आकाशमें ही अधरसे टुकडे झेल लेंगे। किन्तु ये बुद्धू अूँची गर्दन करके शान्तिपूर्वक यह देख लेते कि रोटीके टुकडे किस ओर अुछलते और किधर गिरते हैं, और टुकडोंके जमीन पर गिरते ही अुनके अूपर टूट पडते। मैंने शामलभाओीसे कहा— 'तुम्हारे गुजरातके कौवे बिलकुल नालायक हैं। हमारे यहाँ (महाराष्ट्र) बचपनमें जब मैं चिवड़ेमें से काजू बीन-बीन कर अुछालता, तो अेक अेक काजूको कौवे अूपरके अूपर ही झेल लेते थे; किन्तु ये बुद्धू तो आँखें फाड-फाडकर देखते ही रहते हैं!' शामलभाओीका प्रान्तीय अभिमान जाग अुठा। अुन्होंने कहा—'हमारे यहांके कौवे भुखमरे थोड़े ही होते हैं!'

किन्तु अिन कौवोको जो चीज मैं नही सिखा सका, वह चीलने सिखा दी। पाँच-पचास कौवोके बीचमें रोटीके टुकडोंके फौवारे अुड़ते देखकर अेक चीलने अवसर साधा और झपटकर रोटीका अेक बडा टुकड़ा ले गअी। कौवोके सावधान होनेके पहले ही अेक दूसरी चील आअी और दूसरा टुकडा ले गअी! अपने नित्यके वैरीकी यह विजय देखकर कौवे खूब चिढ़ गये! अुन्हें यह अपमान असह्य हो अुठा। अुन्होंने अिस नवीन कलाको हस्तगत करनेकी — बल्कि चंचुगत करनेकी — प्रतिज्ञा ली; और जैसे अंग्रेजके लोगोके विरुद्ध रोअन तथा ओीरानकी फौजको विरुद्ध ग्रीक नौका-युद्धमें सफल हुअे थे, वैसे ही कौवे भी अन्तमें चीलोंके विरुद्ध अिस कलामें सफल हो गये। कौवे रोटीके टुकडोको झेलना सीखे। अितना ही नही, वे चील पर निगरानी रखना भी सीखे। कौवोके प्रति मेरी अभिरुचि देखकर शामलभाअीके मनमें अीर्ष्या अुत्पन्न हुअी, किन्तु कोअी अुपाय न सूझ पडने पर वे मुझसे कहने लगे: 'आजसे कौवे आपके हुअे और गिलहरियाँ मेरी।' मैंने कहा — 'मेरी ना नही है।' किन्तु गिलहरीका अनुनय करनेकी कला अिनमें कहाँ थी? अिनकी कलाकी पहुँच तो कौवो तक ही थी।

* * *

परन्तु सत्य-संकल्पका फलदाता भगवान है ही। अेक दिन शामलभाअी अेक कैदीकी टोपीमें अेक गिलहरीका बच्चा मेरे पास ले आये और बोले — 'अेक कौवा अिसे लिये जा रहा था। हम दो आदमियोंने युक्तिपूर्वक अिसको बचाया है। अब अिसका क्या करें?' मुझे कॉलेजके दिन याद आये। अेक चिथड़ेकी बत्ती बनाकर अुसे दूधमें भिगोकर बच्चेको चूसनेके लिअे दी, किन्तु वह घबराया हुआ बच्चा किसी भी तरह दूध पीता ही नही था। रोटी दी, खिचडी दी, चावल दिये, पर बच्चेने तो अिनमें से किसीको छुआ तक नही। अन्तमें मेरे नहानेके डिब्बेमें अेक कपडा बिछाकर अुसमें अुसको बिठा दिया और हम सो गये। दूसरे दिन तो अुसने चीखें मार मार कर

सारे वातावरणको करुण बना डाला। बेचारे शामलभाओी व्याकुल हो अुठे। किसीको भी यह नहीं सूझ पड़ा कि बच्चेका क्या करना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति आ-आकर बच्चेको हाथमें लेता। बेचारा बच्चा प्राण बचानेके लिअे हाथसे कूद पडता, थक जाता, पेशाब कर देता और फिर दौड़ता। अेक बार तो ठाकुरसाहबकी कोठरीमें पड़े हुअे अींधनमें जा घुसा। बडी कठिनाओीसे हमने अुसे बाहर निकाला। कौवे और बिल्ली दोनोंके पंजेसे अुसे बचाना कुछ सरल काम नहीं था। दूसरा दिन भी समाप्त होने आया। दो दिनसे बेचारा भूखा था। हमें अुसे भूखसे तथा बिल्ली-कौवोंसे बचानेकी दुगुनी चिन्ता हो अुठी थी। अन्तमें तीसरे पहरके चार बजे मैंने देखा कि अेक गिलहरी व्याकुल होकर वृक्ष-वृक्ष पर और कोठरी-कोठरीमें घूम रही है। यही अिस बच्चेकी माँ होनी चाहिये। जिस कोठरीमें मैंने डिब्बा रख छोड़ा था, अुसमें अुसे भेजनेके लिअे मैंने अुसे दो-अेक जगहसे हकाला। पर मैं अुसे किस भाषामें समझाता कि तेरा बच्चा मेरी कोठरीमें है और अुसकी सुरक्षाके लिअे ही अुसे भीतर रख छोड़ा है? बेचारी माँने सोचा होगा कि 'मैं दुखिया अपने बच्चेकी खोजमें भटकती फिर रही हूँ और यह यमदूत मेरे पीछे पड़ा है, चैन भी नहीं लेने देता। अन्तमें ठाकुरसाहब, शामलभाओी, दो सिपाही, ठाकुरसाहबका अेक कैदी रसोअिया और मैं — हम सबने मिलकर अेक कौन्सिल बैठाओी और भारी अुत्साहसे अेक योजना बना डाली। जैसे क्रिकेटके मैदानमें स्थान-स्थान पर क्षेत्र-पाल खडे रहते हैं, वैसे ही सब लोग दूर दूर खडे हो गये। मैं बच्चेवाला डिब्बा कोठरीसे बाहर निकाल लाया और जिस वृक्ष पर गिलहरी माता घूम रही थी, अुसी वृक्षके नीचे ले जाकर डिब्बेको टेढ़ा रख दिया। दो-तीन कौवोंने अिसे देखा, फिर भला वे महाशय वहाँसे टल सकते थे? ललचाओी हुओी दृष्टिसे वे अेकटक अुधर ताकने लगे, किन्तु हमारे क्षेत्रपाल पूरे सावधान थे। बच्चा डिब्बेसे बाहर निकला और 'किल्-किल्-किल्-किल्' करके अुसने भयंकर चीत्कार की।

मेरा ध्यान गिलहरी माताकी ओर था। अुस समयकी अुसकी मुखमुद्रा देखने ही योग्य थी। अुसके प्राण आँखों और कानोंमें आ रहे थे। बच्चेके दर्शन होते ही अुसके लिअे आसपासकी दूसरी सारी सृष्टि शून्य हो गअी। गिलहरीकी दौड़से वह अूपरसे दौड़ती हुअी नीचे आ गअी। स्टेशनके समीप आते ही जैसे रेलगाड़ी सीटी देती है, वैसी ही आवाज करती हुअी वह नीचे आअी। बच्चा भी माँकी ओर दौड़ा। दोनोंका मिलन हुआ। तुरन्त ही माता चारों ओर देखने लगी। गिलहरी माता भयभीत न हो जाय अितनी दूर, किन्तु कौवे सफल न हो अितने समीप रहना हमारे लिअे आवश्यक था।

अब हमें अेक अद्‌भुत दृश्य देखनेको मिला। माता सोचती थी कि यदि मैं बच्चेको लेकर अविलम्ब घोसलेमें पहुँच जाअूँ तो जग जीती। बच्चेको अिसका विचार कहाँसे आता? वह तो दो दिनका भूखा था। माँको देखते ही तुरन्त दूध पीने दौड़ा। माँ अुसे मुँहसे पकड़कर अुठाने जाती कि बच्चा तुरन्त छटककर दूध पीने दौड़ता। अेक डेढ़ मिनट तक यह छूटना-पकड़ना चला। अन्तमें विजय बच्चेकी हुअी। माँने देख लिया कि बच्चा माननेवाला नहीं है। अतः प्राणोंकी बाजी लगाकर वह वहीं रुक गअी। बच्चेको दूध पीने दिया। भूखे सिपाही रणांगणमें प्राणोंकी बाजी लगाकर भी भोजन करते है, ठीक वैसा ही यह प्रसंग था। बच्चेकी भूख कुछ शान्त हुअी कि माँने दृढ़तापूर्वक अुसे अुसके पेटकी चमड़ीसे पकड़ा। बच्चेने तुरन्त ही अपने चारों पाँव तथा पूँछ माँके गलेमें लपेट दिये। माँके गलेके आसपास अुसका यह हृदय-धन अनमोल हारकी तरह लिपट गया। अुसको बचाती हुअी सिर अूँचा किये आँगन पार करके माँ चबूतरे पर आअी। हमने अपना घेरा संकीर्ण कर लिया। चबूतरेके किनारेके आगे जहाँ दीवारका कोना बाहरकी ओर निकला हुआ था, अुसकी धार परसे गिलहरी डगमग करती हुअी चढ़ने लगी। कैसी अुसकी सँभाल! कैसी अुसकी अेकाग्रता! अूपर वह लगभग छज्जे तक पहुँच गअी। वहाँसे छलाँग मार कर ही लकड़ेके

पटिये तक पहुँचा जा सकता था। छलाँग मारेगी कि नहीं? छलाँग मारनेके लिअे साहस बटोर कर माँ सारे शरीरको सिकोड़ती, पर कूदनेके पहले ही हिम्मत हार जाती! निराश होकर निःश्वास डाल फिर अन्य प्रकारसे यत्न करती। दसेक बार तो अुसने बायेंसे दायें और दायेंसे बायें चक्कर काटे होंगे। अूपरसे यदि बच्चा गिर पड़े तो बचना असंभव। जितने-जितने निष्फल प्रयत्न होते, अुतनी ही अुसकी शक्ति क्षीण होती और प्रयत्न सफल होनेकी आशा भी कम होती जाती। बेचारीने हताश होकर अेक बार चीत्कार की। कौनसा भक्त अिससे अधिक व्याकुल प्रार्थना कर सकता है? हम अितने लोग आसपास खड़े थे, किन्तु अुनकी क्या सेवा करते? मनुष्य-जातिने आज तक गिलहरीका विश्वास सम्पादन कहाँ किया है कि वह अुसे अपने पास आने देती? मुझे अेक विचार सूझा। दौड़कर मैं अपना दुपट्टा ले आया। दो सिरे मैंने तथा दो सिरे शामलभाओीने पकड़े और अुसे चौड़ा करके जमीनसे दो-अेक हाथ अूँचा पकड़ रखा। अुद्देश्य यह था कि गिलहरी या अुसका बच्चा गिर भी पड़े तो चकनाचूर न हो जाय। अन्ततः भगवानने गिलहरीकी पुकार सुनी। अुसके शरीरमें असाधारण बल आया। श्वास रोक कर अुसने विश्वासके साथ अेक छलाँग मारी और क्षणभरमें वह अपने स्थान पर पहुँच गअी! दो छप्परोंकी संधिमें, मयारीके खपरैलोंके नीचे गिलहरीका निवास था। अुस रात्रिमें माँ और बच्चेने कैसी मीठी नींद ली होगी! सच ही माँको लगा होगा कि मैंने जग जीत लिया! अुसके बाद कअी दिन तक अुस माँ और बच्चेको हम देखते और पहचान लेते थे।

* * *

कुछ दिनों बाद अिन्स्पेक्टर जनरल आनेवाला था, अतः अुसके आगमनकी तैयारियाँ होने लगीं। मकान पोते गये, चूने-सीमेंटका जो काम करने योग्य था वह किया गया, छप्पर सारे गये और खंभे तेल-पानीसे नहाये। कैदियोंकी कवायद कैसे होती थी, वगैरा बातें मनोरंजक

ज़रूर है, किन्तु अिस प्रकरणके अुद्देश्यसे बाहरकी है। फिर भी अितना लिखे बिना काम नही चल सकता कि अुन दिनों हमें रातभर दीपकके दर्शन होते थे। हमारे रहनेके स्थानसे बहुत दूरी पर जेलका मुख्य दरवाज़ा है। अिस दरवाजेकी अूपरी मंजिल पर सुपरिन्टेन्डेन्टकी आफिस है। हमारे बरामदेसे यह आफिस बराबर दिखाअी देती थी। पैंतीस-चालीस रुपयेमें महीने भर तक परिश्रम करके प्रसन्न रहनेवाला जेलका कारकुन सामान्यतया रातके दस बजे तक अिस आफिसमें बैठ कर काम करता है। अुसका हेडक्लर्क भी शायद तब तक ही बैठता है। किन्तु अब तो अिस्पेक्टर जनरल आनेवाला था। अिसलिअे आफिसका दीपक रातके दो बजे तक जलता रहता। किसी-किसी दिन तो सुबह चार बजे तक काम होता रहता! आफिसके कमरेके अितनी दूरी तथा अितनी अूँचाअी पर होने पर भी, वहाँसे हमारे चबूतरे तक स्वच्छ प्रकाश आता था। पुस्तक पढ़ सकने लायक तो नहीं, किन्तु थोड़ा-बहुत दिखलाअी दे सकने योग्य अवश्य था। जेलमें रातको अितना प्रकाश मिलना कुछ छोटी-मोटी सुविधा नहीं थी। अतः हम अेक ओर प्रकाश मिलनेके आनन्दका अनुभव करते और दूसरी ओर आठों पहर परिश्रम करनेवाले, दिन-रात अफसरकी धमकीसे भयभीत रहनेवाले, अबलासे भी अधिक पराधीन अुन कारकुनों पर तरस खाते।

* * *

कालको मृत्युके घावकी औषधि बतला कर किसी लोक-कविने यह दोहा कहा है: 'दंन गणंतां मास थया वरसे आंतरियां'—(दिन गिनते गिनते महीने व्यतीत हो गये और फिर तो बरसोंके अन्तर पड़ गये।) किन्तु जेल-वास तो नियतकालिक सामाजिक मृत्यु है। अतः वहांका क्रम 'मास गणंतां दंन रह्या' की भाँति अुलटा होता है। अिस तरह अब विदाका समय समीप आने लगा। सौ दिनके पचास रहे, पचासके पच्चीस रह गये, फिर तो आठ ही दिन शेष रह गये। शामलभाअीका

धीरज टूटा। अुन्होंने दिनकी गिनती छोड़कर घण्टोंकी गिनती प्रारंभ की -- अब सवा सौ घण्टे रह गये, अब पौनसौ वण्टे रह गये। आँगनमें पनपते हुअे आम तथा जामुनके विरहकी कल्पना मनमें आने लगी। जामुनमें कीडे लग गये थे। वे वृक्षके पत्ते खा-खाकर अुसके प्राण लेनेका प्रयत्न कर रहे थे। खाये हुअे पत्ते मैंने यत्नपूर्वक तोड़ फेंके। कुछ ही खराब हुअे पत्तोको तथा जामुनके तनेको मैं प्रतिदिन आयोडीनके पानीसे धोता। अिस तरहसे मैंने जामुनको बचाया था। फिर अुसके नये पत्ते फूटे और वह अितना प्रफुल्लित दिखाअी पडता मानो वसन्तकी वन-श्री ही हो! आमको भी अिसी तरह बचाया गया था। ठाकुरसाहबके रसोअियेने अुसे राख और जूठनका अितना खाद दिया कि बेचारे आमका बढ़ना रुक गया था। सुन्दर क्यारा बनाकर अुसे भी सुखी किया था। मेरे जानेके बाद अिन दोनोका क्या होगा, यह विचार मनमे अुठे बिना कैसे रहता? गलगोटेका पौधा तो कभीका सूख चुका था। अुसकी आशा छूट जानेके पश्चात् मैं अुसकी डालियाँ तोड़-तोड़कर छड़ियाँ बनाता। जेलके रुक्ष वातावरणमें गलगोटेकी छड़ी भी बड़ी भली लगती।

अन्तत. फरवरीकी पहली तारीख आअी। प्रातः चार बजे अुठ कर मैं नहा लिया। जेलके भ्रष्ट भोजनका प्रभाव नष्ट करनेके लिअे मैंने अगले दिन अुपवास किया था। स्नान करके शरीरको स्वच्छ किया। अपना लगभग सारा सामान मैंने पहले ही दिन घर पर भेज दिया था, अिसलिअे तैयारी कुछ करनी ही नही थी। आम तथा जामुनको अन्तिम बार पानी पिलाया। हीरासे मिलनेकी अिच्छा थी, किन्तु अितनी जल्दी वह कैसे आती? जेलकी चारो दीवारोसे घिरे हुअे आकाशमें तारोके अन्तिम दर्शन कर लिये। अितनेमें ठाकुरसाहब अुठे। शामलभाअी भी नहाकर आ गये। हम तीनोने जेलके नियमके विरुद्ध अेक साथ बैठकर प्रार्थना की। शामलभाअीने यह प्रभाती गाअी:

"राम भज तुं प्राणिया,
तारा देहनुं सारथ ॓,
तारी कंचननी काया थशे,
राम भज तुं प्राणिया."

(हे प्राणी! तू रामका भजन कर। तेरी देह सार्थक हो जायगी। तेरी काया कंचन ॆ ी हो जायगी। हे प्राणी! तू रामका भजन कर।)

प्रभाती पूरी होते-होते भोर हुआ, किन्तु मुझे बाहर ले जानेके लिअे कोअी नहीं आया। शामलभाअी बोले — 'हौजके पासवाले अुस तुलसीके पौधेको तो आपने भुला ही दिया!' मैं लज्जित हुआ। दौड़कर लबालब अेक डिब्बा भरकर तुलसीको ी पिलाया। अितनेमें अेक वार्डर आया और अुसने ु ॓ दरवाज़े पर चलनेके लिअे कहा। सुपरिण्टेन्डेन्टसे विदाअीके दो शब्द कहकर मैं जेलसे बाहर निकला। निकलते ही मेरे मुँहसे अुद्‌गार निकल पड़ा:

'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।'

टिप्पणियाँ

दीवार-प्रवेश

आश्रम — सत्याग्रहाश्रम। आजका हरिजन-आश्रम। अिसकी स्थापना महात्मा गाधीने सन् १९१५ मे अहमदावादके करीव कोचरव गाँवमे की थी। सन् १९१७ में यह आश्रम वहाँसे सावरमतीके किनारे आ गया। कहा जाता है कि अिस आश्रमभूमिके पास ही प्राचीन कालमे दधीचि ऋषिका आश्रम था।

सावरमती तथा चंद्रभागाके सगम पर दधीचि ऋषि तपस्या करते थे। दैत्योके द्वारा हराये गये देवता अपने अस्त्र अिनके आश्रममें रखकर भाग गये। कोलाहलसे जाग अुठने पर ऋषि अुन अस्त्रोको मत्रपूत जलमें भिगोकर पी गये। कुछ समयके वाद देवता अपने अस्त्र माँगने आये। ऋषि वोले कि "अुन्हे तो मैं पी गया।" देवताओने कहा — "तव दानवोका नाश करनेके लिअे आप हमे अपनी हड्डियाँ दीजिये।" ऋषिने योग-समाधि द्वारा व्रह्मलोकके प्रति प्रयाण किया। फिर देवोने कामधेनुको वुलाया। अुसने ऋषिकी देहको चाटना प्रारम्भ किया। चाटते-चाटते जव हड्डियाँमात्र शेष रह गअी, तव देवताओने अुनसे शस्त्रास्त्रोका निर्माण किया और दानवोको हराया। जिस स्थल पर दधीचि ऋषिने देहार्पण किया था, अुस स्थल पर कामधेनुका दूध झरा था। अिसलिअे अुस स्थान पर दूधेश्वर महादेवकी स्थापना हुअी।

दूधेश्वर — अहमदावादकी स्मशान भूमि। अिसका अुल्लेख पद्मपुराणमे है। अूपरकी टिप्पणी देखिये।

शाहीवाग — मुगल शाहंशाह शाहजहाँ युवावस्थामे शाहजादेकी हैसियतसे अहमदावादके सूवेदार थे। अुन्होने सावरमतीके तट पर

अपने रहनेके लिअे अेक महल तथा अुसके आसपास बगीचा बनवाया था। वही शाहीबाग कहलाता है। हालमे अुसके आसपासका सारा मुहल्ला अिसी नामसे पुकारा जाता है। पुराना महल आज कमिश्नरका बँगला बना है।

अेलिसब्रिज—शहरके पश्चिमकी ओरका चौदह कमानोवाला अेक विख्यात पुल। पहलेके २३ छोटी कमानोवाले पुलकी अुद्‌घाटन क्रिया १८७० अीसवीमे हुअी और अुस समयके अुत्तर विभागके कमिश्नर सर बेरो अेलिसके नाम पर अिसका नाम अेलिसब्रिज रखा गया। सन् १८७५ की बाढमे वह बह गया। सन् १८९२ मे अुसका पुर्ननिर्माण किया गया।

अहमदाबादकी चिमनियाँ—अहमदाबाद कपडेके अुद्योगका बडा भारी केन्द्र है। वहाँ कपडेकी ७० तथा दूसरे प्रकारकी १० —कुल मिलाकर ८० मिले है। अिन मिलोकी चिमनियाँ अैसी लगती है, मानो राक्षस पडे पडे चुरट पी रहे हो। अहमदाबादके दृश्यकी यह अेक विशेषता है।

पृष्ठ ३ **युरोपियन-वार्ड**—युरोपियन कैदियोको रखनेके लिअे बनाया गया विभाग।

पृष्ठ ४ **क्षपणक**—नग्न साधु,—बौद्ध या जैन साधु। "नग्न-क्षपणके देशे रजक कि करिष्यति ?"

पृष्ठ ४ **कथं प्रथममेव णकः**—यह वाक्य कवि विशाख-दत्तके 'मुद्राराक्षस' नाटकमे है। प्रारभमे ही नग्न साधुका दर्शन अपशकुन माना जाता है।

पृष्ठ ४ **दाबड़े बापा**—कर्नाटकके अेक वृद्ध असहकारी कार्यकर्ता।

पृष्ठ ४ **स्नेह-प्रयोग**—तेलका अुपयोग। स्नेह=तेल।

पृष्ठ ४ **लालटेनें**—लालटेन हाथमे लेकर घूमनेवाले चौकीदार। जहाँ शब्द अपने वाच्यार्थकी रक्षा करता हुआ दूसरे

अर्थका सूचन करता है, अुसे अुपादान-लक्षणा अलकार कहते हैं। अग्रेजीमें अिसे Metonymy कहते है।

पृष्ठ ५ **अक्षरधाम**—जो धाम नष्ट नही होता—स्वर्ग।

भिन्न-भिन्न सम्प्रदायके मनुष्य स्वर्गके लिअे भिन्न-भिन्न शब्दोका प्रयोग करते है। वैष्णव 'गोलोक' तथा 'वैकुण्ठ' कहते है। स्वामी-नारायण सम्प्रदायवाले 'अक्षरधाम' कहते है।

पृष्ठ ५ **मंगोपार्क**—(१७७१-१८०६ अी०) प्रसिद्ध स्कॉटिश प्रवासी। वह १७८५ अी० मे अफ्रीकाकी नाअिजर नदीका अुद्गम स्थल खोज निकालनेके लिअे निकला था। प्रयत्न अधूरा ही रहा। अिग्लैड जाकर अुसने डॉक्टरीका धन्धा प्रारम्भ किया। परन्तु १८०५ अी० मे फिर अुसका पुराना जोश जाग अुठा और वह अफ्रीका पहुँचा। ज्यो ही वह नाअिजर नदीकी गहराअीमे पहुँचा कि अुसके प्रवाहमे वह गया।

पृष्ठ ५ **कोलम्**—(१४३५-१५०६ अी०) नअी दुनियाको यानी अमरीकाको खोज निकालनेकी प्रतिष्ठा पानेवाला विश्वविख्यात प्रवासी। ३ अगस्त सन् १४९२ अी० को अुसने 'सेण्टा-मेरिया' मे अपनी चिरस्मरणीय यात्रा प्रारम्भ की। अत्यन्त निराश हो जानेके बाद अुसे ता० १२ अक्तूबरको भूमि दिखाअी दी और अुसके विद्रोही साथी भी शात हो गये। तत्पश्चात् अुसने ३ यात्राये और की तथा मैक्सिकोकी सारी खाडीमें घूमा-फिरा। अुसकी मृत्यु हो जानेके बाद अुसकी अस्थियाँ ५-५ स्थानोमे चक्कर खाकर अन्तमे सन् १९०० मे 'सेविल' मे सदाके लिअे गाड दी गअी।

पृष्ठ ६ **वि॰ृष्टि**—सृष्टि। यह वैदिक शब्द है। Evolution वाहर फेंके जानेके अर्थमे प्रयुक्त होता है। विलसे चीटियाँ वाहर अुभरती है।

पृष्ठ ७ **दयालजीभाअी**—सूरतके प्रसिद्ध कार्यकर्ता।

पृष्ठ ७ **केशवसुत** — आधुनिक युगका मराठी आदिकवि दामले। नीचेकी पक्तियाँ अुसकी 'भृग' नामक कवितासे ली गअी है। "कविच्या हृदयी . दिसे ?" — कविके हृदमे प्रकाश और अन्धकार दोनो अिकट्ठे होते है। वही स्थिति यहाँ दिखाअी देती है। अैसा ज्ञात होता है मानो सृष्टि ही कवयित्री वन गअी है।

पृष्ठ ९ **स्वामी** — स्वामी आनन्द। काकासाहब (कालेलकर) के परम मित्र तथा साथी। 'नवजीवन' के अुस समयके व्यवस्थापक।

पृष्ठ ९ **वालजीभाअी** — वालजीभाअी गोविन्दजी देसाअी। अंग्रेजी और सस्कृतके अध्यापक। अेक आश्रमवासी।

पृष्ठ ९ **प्राणशंकर भट्ट** — अुस समयकी अेक राष्ट्रीय पाठशालाके आचार्य।

पृष्ठ ९ **फाँसी-खोली** — फाँसीकी सजा पाये हुअे मनुष्योको रखनेकी कोठरी। सावरमती जेलमे सवसे अच्छी जगह यही है। जो आदमी अिस दुनियाको छोडकर जानेवाला है, वह बाकी कुछ दिन भले ही थोडे आराममे वितावे, अैसा सोचकर यह व्यवस्था की गअी होगी ? फाँसी देनेकी जगह अिस कोठरीके ठीक सामने ही है।

पृष्ठ ९ **कावर-कलह** — कावर (अेक जातके पक्षी) अिकट्ठी होकर जैसे कोलाहल मचाती है, अुसी तरह स्त्रियाँ भी अिकट्ठी हो कर झगड़ा करती।

पृष्ठ १० -**धीरं विलोकयति ... भुड्क्ते** — "धीरजके साथ देखता रहता है और सौ सौ वार चाटुकारिता करनेसे खाता है।" भर्तृहरिका पूरा श्लोक अिस प्रकार है

"लांगूल-चालनम्अधश्चरणावपात
भूमौ निपत्य वदनोदर-दर्शन च।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गज-पुङ्गवस्तु
धीर विलोकयति चाटुशतैश्च भुड्क्ते ॥"

पृष्ठ १० **निषेध** — गुजरातीमे अिसका साधारण अर्थ 'मना करना' होता है, किन्तु मराठीमे अिसका अर्थ 'विरोध' होता है। यहाँ दोनो अर्थ लेने चाहिये।

पृष्ठ १० **अँड्रोक्लिजका सिंह** — अपने पैरका काँटा निकालनेवाले भागे हुअे गुलाम अेड्रोक्लिजको अपना मित्र बनानेवाले शेरकी कथा प्रसिद्ध है।

पृष्ठ १२ **अगस्त्य** — आर्योकी संस्कृतिको दक्षिणमे फैलानेके लिअे विन्ध्यको लाघ कर जानेवाले ऋषि। ये असाधारण तपोबल वाले ऋषि मित्रावरुणके पुत्र थे। अिनका जन्म घडेसे हुआ था अिसलिअे ये 'घटयोनि' अथवा 'मान' भी कहलाते है। सूर्यका मार्ग अवरुद्ध करनेके लिअे विन्ध्याचल अूँचा बढता रहता था और दक्षिणको अंधकारमे रखता था। अगस्त्य ऋषिको देखकर विन्ध्याचलने दण्डवत् प्रणाम किया। ऋषिने कहा — 'मै दक्षिण जा रहा हूँ। जब तक वहाँसे वापस न लौट आअूँ, तब तक तुम अिस तरहसे आडे ही रहना।' यह कह कर ऋषि दक्षिण चले गये और वापस लौटे ही नही। अिसी बात पर से 'अगस्त्यके वायदे' वाली लोकोक्ति प्रचलित हो गअी है। देवोकी प्रार्थना पर अुन्होने सागरका पान किया था। अिल्वल तथा वातापि नामक दो दैत्योका संहार किया था। ये अितने महान ऋषि थे फिर भी राजा नहुष अिनसे अपनी शिविका — पाल्की अुठवाता था। अेक दिन अिनकी गति धीमी देखकर राजाने 'सर्प सर्प' कह कर जल्दी चलनेको कहा और अिनको अपने पैरकी ठोकर लगाअी। अिससे क्रोधित होकर अिन्होने राजाको साँप बना दिया था। विन्ध्य गिरिका मद अुतारनेके बाद अिन्होने दक्षिण देशमे जाकर विद्या तथा ज्ञानका प्रकाश फैलाया था। (विष्णुपुराण, महाभारत)

पृष्ठ १२ **अज़ान** — अज़ान अरबी शब्द है। फारसी शब्द 'बाँग' है। यही अधिक प्रचलित है। मस्जिदमे नमाज़के पहले

'नमाज़ पढनेका समय हो गया है, नमाज़ पढ़ने आअिये' अैसा जतानेके लिअे जोरसे जो आवाज़ लगाअी जाती है वह।

पृष्ठ १३ **पोर्ट ब्लेयर**—आजीवन देशनिकालेकी तथा दूसरी लवी सजायें पानेवाले कैदियोको रखनेके लिअे अन्दमान टापूमें जो जेलखाना है, वह कालेपानीके नामसे प्रसिद्ध है। अिस टापूका मुख्य बन्दरगाह 'पोर्ट ब्लेयर' है।

पृष्ठ १३ **छोटा चक्कर**—हरअेक जेलमे जो विभाग किये जाते है वे गोलाकार होते है। अिसलिअे अुन्हे 'चक्कर' कहते है। साबरमती जेलमे दो चक्कर है,—अेक छोटा, दूसरा बडा।

पृष्ठ १३ **अमृत-संजीवनी**— असली शब्द मृतसजीवनी है—मरे हुअेको जिलानेवाली औषधि या विद्या। यही विद्या सीखनेके लिअे कच, दानवगुरु शुक्राचार्यके यहाँ दीर्घकाल तक रहा था।

पृष्ठ १५ **त्रिविध स्वागत**—Good turns often come by threes. कअी बार भली-बुरी चीजे तीन-तीन अिकट्ठी होकर आती है। यहाँ मच्छर और तिलचट्टोके आनेके बाद छिपकली आनी ही चाहिये। यह काव्यसृष्टिका न्याय है।

पृष्ठ १५ **बैरक**—अमुक मनुष्योको अेक साथ बन्द करनेका स्थान। अंग्रेजी शब्द Barrack.

पृष्ठ १५ **ब्रोमाअिडका असर**—नीद लानेवाली यह औषधि हृदयको निर्बल करती है।

पृष्ठ १६ **बदमाश**—बद = खराब। माश = जीते रहनेका साधन। कुकर्म करके पेट भरनेवाला या जीनेवाला।

पृष्ठ १७ **पीपल और तुलसी**—ये दोनो पवित्र माने जाते है। पद्मपुराणमे अिनकी अुत्पत्तिकथा अिस प्रकारसे दी गअी है—जलन्धरकी पत्नी कालनेमिकी कन्याका नाम वृन्दा था। वह परम सती थी। जलन्धरने अिन्द्रको हराकर अमरापुरी पर अपना अधिकार कर लिया। अत अिन्द्र शिवकी शरणमे गया। शिवने जलन्धरसे युद्ध शुरू किया।

वृन्दाने पतिकी रक्षाके लिअे विष्णुकी पूजा आरंभ की। जब तक पूजा चलती रहे, तब तक जलन्धर मर नहीं सकता था। अिसलिअे विष्णु जलधरके वेशमें वृन्दाके सामने प्रकट हुअे। अपने पतिको युद्धस्थलसे सकुशल घर लौटते देखकर वह सती पूजाको अधूरी छोड पतिका स्वागत करनेके लिअे अुठी। अिधर रणांगणमें जलधरकी मृत्यु हो गअी। वृन्दाको जब अिस छलका पता चला, तो वह विष्णुको शाप देनेके लिअे तैयार हो गअी। सतीके शापसे घबराकर विष्णुने अुसे यह कहकर शांत किया कि तू पतिके साथ सहगमन कर। तेरी भस्मसे तुलसी, धात्री (आँवला), पलाश और पीपल ये चार वृक्ष अुत्पन्न होंगे। सतीने सहगमन किया और अिस प्रकारसे ये वृक्ष अुत्पन्न हुअे।

पृष्ठ १७ **कर्मकांडी ब्राह्मण** — सारी धर्मक्रियाओं और विधियोंका कट्टरतासे आचरण करनेवाले ब्राह्मण।

पृष्ठ १८ **रविवारके दिन** — अिस दिन कैदियोंको मांस मिलता था। मांस न खानेवालोंको अधिक दाल मिलती थी।

पृष्ठ १९ **मत्कुण-सत्र** — खटमलोंका संहार। सत्र = यज्ञ; जैसे सर्पसत्र।

पृष्ठ २० **हुब्बेवतन** — देशप्रेम।

पृष्ठ २० **भाषणवाले** — राजनैतिक कैदी अधिकतर भाषण देनेके अपराधमें गिरफ्तार किये जाते हैं, अिसलिअे सामान्य कैदी अुन्हें अिस नामसे पुकारते हैं। आगे जाकर वे 'खिलाफतवाले' और 'सवराजवाले' भी कहे जाने लगे।

पृष्ठ २० **'मजवरी . . . ढाळिती'** — वृक्ष अूपरसे मुझ पर कुसुम-रेणु गिराते हैं।

पृष्ठ २१ **सन् १८१८ का कानून** — अिस धाराके अनुसार मनुष्यों पर मुकदमा चलाये बिना ही सरकार अुन्हें जब तक चाहे तब तक हवालातमें रख सकती थी। लाला लाजपतराय, महात्मा गांधी,

खान अब्दुलगफ्फारखाँ, सुभाष बोस अित्यादिके विरुद्ध प्रयोगमे आकर यह कानून बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।

पृष्ठ २४ **श्वेब कुरेशी**—गाधीजीके कारावासके समयमें १९२२ अी० मे 'यग अिडिया' के सपादक।

पृष्ठ २४ **मयासुर**—मय नामका असुर। यह दानवोका अत्यन्त कुशल शिल्पकार था। अर्जुनके द्वारा किये गये अुपकारके बदलेमें अिसने राजसूय यज्ञके समय पाडवोका सभामडप बनाया था। अुसमें अिसने अैसा चमत्कार किया कि जलके स्थान पर स्थल और स्थलके स्थान पर जल दिखाअी देता था। दरवाज़ेकी जगह दीवार और दीवारकी जगह दरवाजा दिखाअी देता था। कुछका कहना है कि मयासुर चीन देशका था।

पृष्ठ २५ —**चतुर कौवा**—पक्षियोमे कौवा, पशुओमे सियार और मनुष्योमे ढेड चतुर गिने जाते है। आज हम अिन्हे लुच्चे कहते हैं। अग्रेजीमे cunning कहते है। अिस cunning शब्दका मूल अर्थ चतुर ही था, किन्तु जानवर तथा मनुष्य दूसरोको धोखा देने लगे अिसलिअे अिसका अर्थ लुच्चा हो गया और यह शब्द प्रशसाके बदले निन्दावाचक हो गया।

पृष्ठ २५ **काकाओको**—'का . का' करके चिल्लाते है अिसलिअे।

पृष्ठ २६ **शामलभाअी**—अेक समयके आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता। वर्तमानमे खेड़ा जिलेके काग्रेस कार्यकर्त्ता।

पृष्ठ २७ **भूयोदर्शन**—बारम्बार दर्शन।

पृष्ठ २७ **वाल्मीकिका शाप**—चक्रवाक्के जोड़ेमे से अेकके प्राण लेनेवाले पारधीको वाल्मीकि ऋषिने शाप दिया था:—

"मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम्अगम' शाश्वती समा
यत्क्रौच-मिथुनाद्अेकमवधी काम-मोहितम्।"

यह बात प्रसिद्ध है।

पृष्ठ २७ **जड़भरत** — पूर्वजन्ममें ये भरत नामके राजा थे। अुत्तरावस्थामें राजपाट अपने पुत्रको सौंप कर स्वयं वानप्रस्थ होकर जंगलमें रहते थे। वहाँ अेक हरिणके मातृहीन बच्चे पर अिनका मोह हो गया और मृत्युके समय अुसमें वासना रह जानेसे दूसरे जन्ममें पशुयोनिमें जन्म लिया। वह जन्म पूरा करनेके बाद आंगिरस नामक ब्राह्मणके यहाँ जन्म लिया। संगदोषके कारण पुनः पशुयोनिमें जन्म न लेना पड़े, अिस भयके कारण वे किसीसे मिलते-जुलते नहीं थे। पिताकी मृत्युके बाद सौतेले भाअी अिन्हें बहुत तंग करते थे। अुन्होंने अिनको खेतकी रखवालीका काम सौंपा। वहाँसे वृषल राजा अिन्हें देवीको भोग चढ़ानेके लिअे अुठा ले गये, किन्तु अिन्होंने मुँहसे अेक शब्द तक नहीं निकाला। अन्तमें देवीने ही अिनको बचाया। अेक बार राजा रहूगणने अिनसे अपनी पालकी अुठवाअी। पालकी अुठाकर चलते समय कोअी जीवजन्तु न मर जाय, अिस विचारसे ये बड़ी सावधानीसे सँभल-सँभलकर पैर बढ़ाते थे। अिन्हें अिस तरहसे चलते देखकर राजा रहूगणने अिन्हें अुपालम्भ दिया। अुसे सुन कर अिनकी वाणी प्रस्फुटित हुअी। अिन्होंने अुसे धर्मोपदेश दिया। राजा अिनके चरणोंमें आ गिरा। कुछ ही कालके बाद अिनको मोक्षकी प्राप्ति हो गअी।

पृष्ठ २८ **काकदृष्टि** — कौवा बड़ा चतुर होता है। अुसकी दृष्टि भी चपल होती है। दोष ढूंढनेवाली दृष्टिके अर्थमें भी यह शब्द प्रयुक्त होता है। यहाँ पहला ही अर्थ लेना चाहिये।

पृष्ठ २९ **अंग्रेजों और अरबोंका युद्ध** — असमान पक्षोंके बीच युद्ध। अिटली तथा अेबिसीनियाका युद्ध अिसी प्रकारका माना जा सकता है।

पृष्ठ ३१ **नाथभागवत** — महाराष्ट्रके प्रसिद्ध सन्त श्री अेकनाथने संस्कृत भाषाका मोह छोड़कर भागवतके अेकादश स्कन्धकी टीका मराठीमें लिखी थी। अुनके अिस 'अविवेक'का दण्ड देनेके लिअे काशीके पण्डितोंने अुन्हें वहाँ बुलवाया, किन्तु अुनकी काव्यमय भाषाका

प्रवाह तथा सेवाभावकी सात्विकताको देखकर सभी मोहित हो गये और काशीके पंडितोके आग्रहसे ही अेकनाथ महाराजने काशीमे रहकर अपनी टीका पूरी की। यह ग्रंथ 'नाथभागवत' के नामसे प्रसिद्ध है। मराठीमे ज्ञानेश्वरी गीताके समान ही अिस ग्रन्थकी भी महत्ता है।

अेकनाथ महाराज हरिजनोद्धारकके रूपमे भी विख्यात है।

पृष्ठ ३३ **घर यानी कहाँ?** — अिस प्रश्नका औचित्य समझमे आता है? याद कीजिये — 'पश्य वानरमूर्खेण सुगृही निगृही कृता।'

पृष्ठ ३३ **लंकालीला** — लकामे हनुमानके द्वारा मचाया गया दगा — लंकाकाड।

पृष्ठ ३४ **बरसात . महकने लगी** — प्रथम वर्षासे गरम धरतीकी मिट्टी महकती है।

पृष्ठ ३४ **हंपी** — सन् १३४६ अी० मे स्थापित, कन्याकुमारीसे कृष्णा तक विस्तृत, विजयनगरके सुप्रसिद्ध हिन्दू साम्राज्यकी राजधानी। विजयनगरके भग्नावशेषके रूपमे अब यह हपी गॉव ही रह गया है। यह वळ्ळारी जिलेके अन्तर्गत है। विरूपाक्षका मदिर वगैरा वहॉके नौ मील तक फैले हुअे खण्डहर आज भी प्राचीन स्थापत्यकी झाँकी कराते है। सवा दो सौ साल तक मुसलमानोके आक्रमणोसे टक्कर लेकर यह साम्राज्य १५६५ अी० मे नष्ट हो गया। अिसका सागोपांग विवरण 'A Forgotten Empire' नामक पुस्तकमे दिया गया है।

पृष्ठ ३६ **स्पिरिट क्लोरोफार्म** — यह औषधि मीठी होती है। खॉसी या जुकाममे दी जाती है। अन्य औषधियोमे भी मिलाअी जाती है।

पृष्ठ ३७ **जर्मन अिलाज** — सन् १९१४ अी० के युरोपीय महायुद्धमे जर्मनोने अत्यन्त क्रूर अुपायोका आयोजन किया था। अुसी परसे क्रूर अुपचार।

पृष्ठ ३८ **अिन्द्रगोप** — जिसका रक्षण अिन्द्र करता है वह। मखमली रगका लाल कीडा।

पृष्ठ ३९ **स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः** — मनुकी सन्तानें अपने ही वीर्यसे — पराक्रमसे रक्षित रहती है। रघुवंश, २ - ४

पृष्ठ ४१ **लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः?** — भाग्यमें लिखे लेखोको कौन टाल सकता है? यह पूरा श्लोक अिस प्रकार है :

स हि गगन-विहारी कल्मष-ध्वंस-कारी
दश-शत-कर-धारी ज्योतिषां मध्य-चारी
विधुरपि विधि-योगाद् ग्रस्यते राहुणाऽसौ
लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः?

पृष्ठ ४१ **नक्षत्र** — क्षेत्र या खेतमें अुगी हुअी घास और वनस्पति ही मानो क्षत्र (क्षत्रिय) हो। परशुरामने पृथ्वी परसे क्षत्रियोंका २१ बार नाश किया था। अिसे याद करके ही यह लिखा है।

पृष्ठ ४१ **कार्तवीर्य** — हैहय वंशके राजा कृतवीर्यका पुत्र अर्जुन कार्तवीर्यके नामसे प्रसिद्ध था। अुसने दत्तात्रेयकी आराधना करके पृथ्वीका साम्राज्य तथा हजार बाहुअें प्राप्त की थी। अेक बार वह परशुरामके पिता जमदग्निके आश्रममें गया। ऋषिपत्नीने अुसका यथोचित स्वागत-सत्कार किया, किन्तु वह जाते जाते बलपूर्वक होमधेनुका बछड़ा अपने साथ ले गया। अिस अपराधके दण्डस्वरूप परशुरामने अुसकी हजार भुजायें काट डाली और अन्तमें अुसके प्राण ले लिये।

पृष्ठ ४३ **अिन्दुलाल याज्ञिक** — गुजरातके विद्याप्रेमी सेवक। पुराने 'नवजीवन' के संस्थापक।

पृष्ठ ४४ **विवासन** — देशनिकाला।

पृष्ठ ४४ **आरोह-अवरोहवाले** — अूँचे-नीचे। आरोहण = चढाव, अवरोह = अुतार। अुदा० अश्वारोहण, स्वर्गारोहण।

पृष्ठ ४४ **रोमान्टिक** — अद्भुत तथा साहसपूर्ण। युरोपियन विवेचनाकारोंने साहित्यको दो विभागोंमें विभक्त कर दिया है :

(१) क्लासिकल, (२) रोमांटिक। प्राचीन ग्रीक तथा लेटिन साहित्य क्लासिकल (Classical) कहलाता है। मध्ययुगीन स्त्रीदाक्षिण्य तथा प्रेमशौर्ययुक्त कथाये रोमाटिक (Romantic) कही जाती है।

पृष्ठ ४४ **अनात्मवादी** — आत्माको न माननेवाले, जडवादी।

पृष्ठ ४५ **गंधर्व-गायन** — गन्धर्व देवताओके गायक माने जाते है। अुनके गायन जैसा मधुर गायन।

पृष्ठ ४५ **दया-भाजन** — दयापात्र, भाजन = पात्र।

पृष्ठ ४७ **जापानी सिपाहियोकी भाँति** — रशियाके साथ हुअे जापानी युद्धमे लवेचौडे कोजॅक्के सामने जिस तरहसे ठिगने किन्तु होशियार जापानी शोभित होते थे वैसे ही।

पृष्ठ ४७ **स्पेनिश आर्मेडा** — सन् १५८८ अी० मे स्पेनके राजा फिलिप (द्वितीय) के द्वारा प्रोटेस्टेट अिंग्लैंडको सीधा करनेके लिअे खडी की गअी नौ-सेना। अिसके विशाल जहाजोकी मदगतिके कारण अंग्रेजोके जहाजोने अपनी चपल गतिसे अुसको तितर-बितर कर दिया था। आर्मेडा शब्द स्पेनिश भाषाका है। अुसका अर्थ 'सशस्त्र जलसेना' होता है।

पृष्ठ ४७ **मुगल फौज** — भारी रिसालेके साथ कूच करनेके कारण विशाल मुगल सेना जल्दी जल्दी स्थानान्तर नही कर सकती थी।

पृष्ठ ४७ **मराठा बारगीर** — अपने स्वामित्वका घोडा रखनेवाले मराठा घुडसवार सैनिक। मोर्चा न बाँधकर अचानक छापा मारनेकी अिन लोगोकी युद्ध-प्रणाली प्रसिद्ध है।

पृष्ठ ४८ **ट्रोजन युद्ध** — ट्रॉय नगरका राजकुमार पेरिस ग्रीस देशके स्पार्टा नगरके राजा मेनेलोसके यहाँ मेहमान बन कर गया। अुसने मेनेलोसकी परम सुन्दरी स्त्री हेलनका हरण किया। अिस विश्वासघातका बदला लेनेके लिअे मेनेलोसने सारे ग्रीक सरदारोको अुत्तेजित किया। अुन्होने अपनी-अपनी सेनाओ सहित

ट्रॉय पर चढाअी कर दी और अुसे चारो ओरसे घेर लिया। दस साल तक घेरा चालू रहा। अिस बीच किसी समय ग्रीक विजयी हो जाते और किसी समय ट्रोजन (ट्रॉय नगरके निवासी)। अन्तमें ग्रीकोने यह अनुभव किया कि धर्मयुद्धसे ट्रॉय पर अधिकार नही हो सकता। अिसलिअे अुन्होने छलका आश्रय लिया। ट्रोजन अुसमे फँस गये। ट्रॉय नगर परास्त हो गया। ग्रीकोने अुसे जलाकर भस्म कर दिया और हेलनको छुडाकर वापस ले गये।

ट्रॉयके घेरेके दसवे वर्षकी घटनाओको लेकर ग्रीस देशके प्रज्ञाचक्षु महाकवि होमरने अिलियड नामक महाकाव्यकी रचना की है। अुसके कअी प्रसग हमारी रामायणसे मिलते है। बहुतसे विद्वानोकी मान्यता है कि ट्रोजन युद्धकी घटनाये घटित ही नही हुअी, वे कवि-कल्पना मात्र है।

पृष्ठ ४८ **अेकिलीस** — अिलियड महाकाव्यका अेक अुदात्त नायक। वह भारी शूरवीर था। अुसने पेरिसके भाअी तथा ट्रोजनके महान सेनापति हेक्टरका वध किया था।

पृष्ठ ४८ **नेस्टर** — ट्रॉय पर चढाअी करनेवाले ग्रीक सरदारोमे से अेक। वह वयमे तथा अनुभवमे सबसे अधिक वृद्ध अेवं सयाना था।

पृष्ठ ४८ **यूलिसिस** — अिलियड महाकाव्यके प्रधान पात्रोमें से अेक। वह ट्रॉय पर चढाअी करनेके सर्वथा प्रतिकूल था, अिसलिअे अुसने पागल हो जानेका ढोग रचा। होमरने अुसका चित्रण बहुत ही चालबाज तथा कपटकलामे प्रवीण मनुष्यके रूपमे किया है। अुसीकी युक्तिसे ट्रोजन फँस गये थे।

महाकवि होमरका अेक दूसरा महाकाव्य ओडीसी है। अुसका यह मुख्य नायक है। अिस महाकाव्यमे ट्रॉयसे वापस लौटते समय यूलिसिसके जहाजके टूट जाने पर अुसके द्वारा किये गये प्रवास और पराक्रमोका वर्णन है। अुसका धनुष अितना भारी था कि कोअी दूसरा मनुष्य अुसे अुठा ही नही सकता था।

पृष्ठ ४८ **सिविल सर्विसके नौकरोंकी भाँति**—अिन लोगोंमें अेकता बहुत होती है और अिसीसे कअी बार अिनके आगे गवर्नरों तथा वाअिसरॉयोंकी भी कुछ नहीं चलती।

पृष्ठ ४८ **क्रूज़र**— डच भाषाके क्रूजन=अुलाँघना शब्द परसे यह शब्द बना है। मूलमें यह छोटे छोटे हलके शीघ्रगामी जहाज़ोंके लिअे प्रयुक्त होता था। बादमें अिसमें परिवर्तन-परिवर्द्धन होते होते अिसका अर्थ शीघ्रगामी किन्तु बख्तरवाला लड़ाकू जहाज हो गया।

पृष्ठ ४८ **ड्रेडनॉट**— निडर जहाज। Dread और Naught अिन दो शब्दोंको मिलाकर यह नाम रखा गया है। अिसका अर्थ किसीसे भी न डरनेवाला—अकुतोभय होता है। अिस प्रकारके जंगी लड़ाकू जहाज पहले पहल सन् १९०६ में ब्रिटेनने बनाये थे। अिसके बाद सारे युरोपने अुनको अपनाया और अुनमें भाँति-भाँतिके सुधार होते ही रहते हैं।

पृष्ठ ४९ **अर्जुन और जयद्रथ**—महाभारतके युद्धमें अर्जुनने सूर्यास्त होनेके पहले जयद्रथका वध अथवा आत्महत्या करनेकी प्रतिज्ञा की थी। यह कथा प्रसिद्ध है।

पृष्ठ ५० **अप्रमत्त**— सावधान। प्रमत्त=असावधान। अप्रमादकी प्रशस्ति धम्मपदके द्वितीय यानी अप्रमाद वर्गमें की गअी है।

पृष्ठ ५० **अन्यैः . . . पोषयन्ति**—कोयल अन्य पक्षियोंके द्वारा पोषित होती है। यह पूरा श्लोक अिस प्रकार है :—

स्त्रीणाम्‌अशिक्षित-पटुत्वम्‌अमानुषीषु
संदृश्यते किमुत या प्रतिबोधवत्य ।
प्रागन्तरिक्षगमनात्स्वम्‌अपत्यजातम्
अन्यैर्द्विजैः परभृत खलु पोषयन्ति॥

अभिज्ञानशाकुन्तल, ५-२२

पृष्ठ ५१ यत्ने . . . दोषः — यत्न करने पर भी यदि सिद्धि न मिले तो अुसमे किसीका क्या दोष ? यह पूरा श्लोक अिस प्रकार है.

अुद्योगिन पुरुष-सिंहम्अुपैति लक्ष्मी
'दैवेन देयमिति' कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषम्-आत्म-शक्त्या
यत्न कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष. ?

पृष्ठ ५३ वैश्वदेव — प्रति दिन पूजा करनेके वाद परन्तु भोजन करनेसे पहले देवताओंको दिया जानेवाला वलि।

पृष्ठ ५३ अहो वत ... वयस् (गीता, १-४५) — हम कैसा महापाप करनेके लिअे अुद्यत हुअे है !

पृष्ठ ५५ यक्ष-प्रासाद — महाकवि कालिदासके सुप्रसिद्ध काव्य मेघदूतके अुत्तरमेघमें यक्षके महलका भव्य वर्णन किया गया है।

पृष्ठ ५६ विघ्नैः . . परित्यजन्ति — यह पूरा श्लोक अिस प्रकार है —

प्रारभ्यते न खलु विघ्न-भयेन नीचै.
प्रारभ्य विघ्न-विहता विरमन्ति मध्या ।
विघ्नै पुन. पुनरपि प्रतिहन्यमाना
प्रारव्वम्अुत्तमजना. न परित्यजन्ति ।।

पृष्ठ ५६ दाम्पत्यर्थ — पुरुषके प्रयत्नको हम पुरुषार्थ कहते है। यहाँ पति-पत्नी दोनो — दम्पती प्रयत्न कर रहे थे, असलिअे दाम्पत्यर्थ। भाषामे यह शब्द रूढ नही है। केवल विनोदके लिअे वनाया गया है।

पृष्ठ ५९ १२४ वीं धारा — राजद्रोहके अपराध पर लागू होनेवाली भारतीय फौजदारी कानूनकी धारा। अिस धाराके अन्तर्गत लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी तथा अव तो अनेक नेताओ पर मुकदमा चला है।

पृष्ठ ५९ **१५६ वीं धारा**— दगा करनेके अिरादेसे अुत्तेजना फैलानेके अपराध पर लागू होनेवाली फौजदारी कानूनकी धारा। धारा १५३ (अ) भिन्न भिन्न जातियोंमे द्वेषकी भावना फैलानेके अपराध पर लागू होती है। राजनैतिक हलचल करनवाले पर कअी बार अिस धाराके अन्तर्गत मुकदमा चलाया जाता है।

पृष्ठ ५९ **राणीप और काली**— ये साबरमती तथा अेलिस-ब्रिजके मध्यवर्ती गाँव है। कालीमे रेलके मार्ग पर ही प्राचीन युगकी अेक अिमारत है। अुसका आकार विद्यापीठके विशाल भवन जैसा ही है। लोगोका कहना है कि अिसमे शिवाजीने अपने घोडे बाँधे थे। बहुतसे यह भी मानते है कि आजमखाँ अुदाअी द्वारा बनाया गया खलीलाबादका किला यही है।

पृष्ठ ६१ **कार्थेज-रोम**— सन् ८५० अी० पू० के अरसेमे फिनिशियनोने कार्थेजकी स्थापना की। अिन लोगोके साम्राज्य तथा व्यापारकी अुन्नतिके साथ ही साथ रोमनोके साथ अिनकी टक्कर हुअी। तीन-तीन महायुद्ध हुअे। हेमिलकर तथा हेनिबाल जैसे वीर काममे आये। अन्तमे सन् १४६ अी० पू० मे यह शहर विनष्ट किया गया। अिन युद्धोमे रोमनोकी नौ-सेनाने बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया था।

पृष्ठ ६१ **अीरान-ग्रीस**— अीसा पूर्व पाँचवी सदीमे अीरान तथा ग्रीसमे भारी युद्ध हुअे। ४८० मे दारा (दरायस) का पुत्र (जरसीस) अपूर्व जंगी काफिला तथा सेना लेकर चढ आया। थर्मोपिलीका विश्व-विख्यात युद्ध अिसी समय हुआ था। अन्तमे आँधी और तूफानमे आपसमे टकरा-टकराकर अीरानी जहाज़ टूट गये। जो कुछ बच रहे अुनको ग्रीकोने हरा दिया। कुछ जहाज, जो भाग खड़े हुअे थे, सफरमे ही नष्ट हो गये। जरसीसने ठेठ अेथेन्स तक अधिकार कर लिया था। अुसे भी पीछे हटना पडा। अिस प्रकार अिस समय अीरानियोकी पूरी पूरी हार हुअी।

पृष्ठ ६२ क्षेत्रपाल — क्षेत्र = खेत, Field, पाल = रक्ष
करनेवाला; A Fielder

पृष्ठ ६५ **दंन गणंतां मास गया** — मूल पंक्तिको इ
पुस्तकमें जानबूझकर उलटाया गया है। मास गिनते दिन बाकी र
और जेल-मुक्त होनेका दिन समीप आया। यह पूरा दोहा इ
प्रकार है:—

दन गणतां मास गया,
वरसे आतरिया,
मूरत भूली सायवा!
नामे विसरिया

दिन बीते, गिनते गिनते महीने बीत गये। फिर तो बरसों त
का अन्तर पड गया। धीरे धीरे हृदय-पटल पर मुखच्छवि भी धुँधल
पडती गयी और — अरे! अरे! अन्तमें तो नाम भी याद करने
श्रम पडने लगा!

— Yes and yet
Time is the greatest Healer
The greatest Comforter
The greatest Benefactor
The Kindliest Friend
The great School-Master of Humankind

पृष्ठ ६७ **क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति** — गीता, ९-२१
पुण्य क्षीण होने पर मर्त्यलोकमें प्रवेश करते हैं।